# मै दसिहु मारगु संतहो

## प्रभु के मार्ग की प्राप्ति के लिए आठ अमूल्य युक्तियां




भाई गुरइकबाल सिंह जी

मुख्य दफ्तर : माता कौलां जी भलाई केन्द्र ( ट्रस्ट ),
तरन तारन रोड, श्री अमृतसर।
फोन: 0183-3292255, 98765-25850

# मै दसिहु मारगु संतहो

१ओं सतिगुर प्रसादि॥

# मै दसिहु मारगु संतहो

## प्रभु के मार्ग की प्राप्ति के लिए 8 अनमोल युक्तियां



लेखकः
दासन दासः- भाई गुरइकबाल सिंघ

Estd. 1880

प्रकाशकः-
भाई चतर सिंघ जीवन सिंघ
अमृतसर।

ISBN : 81-7601-740-X

तीसरी बार फरवरी 2011
**चौथी बार जुलाई 2016**

**भेटा: 150/-**



Estd. 1880

प्रकाशकः—

**भाई चतर सिंघ जीवन सिंघ**

**बाज़ार माई सेवां, अमृतसर।**

फोनः 0183–5011003, 2542346, फैक्सः 5017488
Email : csjssales@hotmail.com, csjspurchase@yahoo.com
Website : www.csjs.com
Follow us on : www.facebook.com/csjsamritsar

(Printed In India)

मुद्रकः जीवन प्रिटर्ज़,अमृतसर।

## समर्पण !

धन्य धन्य श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की अटूट सेवा, पूर्ण करनी सहित जीवन और चोटी की गरीबी कमाने वाले पूर्ण महापुरुष धन्य धन्य बाबा कुन्दन सिंह जी के नाम ।

# विषय तालिका

# असीसड़ीआं



प्रत्येक धार्मिक जीव मनुष्य को अच्छा जीवन बिताने का उपदेश देता है। सब से अधिक दबाव अकाल पुरख के साथ अभेद होने पर दिया जाता है, परन्तु इस मार्ग के योग्य बनाता है, प्रभु का नाम। इसलिए गुरबाणी में बार-बार यही समझाया गया है कि नाम जपो, प्रभु के गुणों को हृदय में बसाओः

*कवन संजोग मिलउ प्रभ अपने।। पलु पलु निमख सदा हरि जपने।।*

(अंग ८०६)

प्रभु-मार्ग पर चलने वाले जिज्ञासुओं के प्रश्न होते हैं: 'सिमरन कैसे करें? प्रभु प्राप्ति कैसे हो?' इन सभी प्रश्नों के उत्तर 'धन्य-धन्य श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी' की बाणी में मोतियों के समान पिरोए हुए हैं। महापुरुष इस ज्ञान-सागर में गहरी छलांग लगाकर, आप संघर्ष करके, हमारी भलाई के लिए संगत में प्रभु-प्राप्ति का मार्ग दर्शाते हैं। भाई साहिब भाई गुरइकबाल सिंह जी ने यह पुस्तक "मै दसिहु मारगु संतहो" लिखकर नाम-सिमरन के पथिकों के ऊपर भारी परोपकार किया है। हमारी अरदास है कि यह पुस्तक पढ़कर गुरसिक्खों के भीतर प्रभु-मिलाप का शौक उत्पन्न हो जिसकी प्राप्ति के लिए यह मनुष्य-जन्म प्राप्त हुआ है।

दास : बाबा कुन्दन सिंह जी के सेवक
बाबा हरभजन सिंह (नानकसर कलेरां)

# असीसड़ीआं



साहिब श्री गुरु रामदास जी के असीस का सदका भाई साहिब भाई गुरइकबाल सिंह जी मुख्य सेवादार 'माता कौलां जी भलाई केन्द्र ट्रस्ट, श्री अमृतसर साहिब वालों ने जो 'मै दसिहु मारगु संतहो' पुस्तक लिखने का प्रयास किया है, अति ही प्रशंसायोग्य प्रयत्न है क्योंकि कलियुग के पदार्थवादी संसार में मन बहुत भटकता है, जिस तरह गुरबाणी का फरमान है:

*माई मनु मेरो बसि नाहि।।*
*निस बासुर बिखिअन कउ धावत*
*किहि बिधि रोकहु ताहि।। १।। रहाउ।।*

(अंग ६३२)

इस अकट, फरमान के अनुसार मनुष्य मन स्थिर नहीं रहता। इस पुस्तक में मन को स्थिर रखने के लिए अलग-अलग युक्तियों का चयन किया गया है और महापुरुषों के जीवन की उदाहरणें दी गई हैं जिन्होंने मन एकाग्र करके नाम के साथ जोड़ा। मेरी गुरु-चरणों में अरदास है, अकाल पुरख इनको गुरमत्ति प्रचार करने और परोपकार करने की बख़्शिश करें, जिज्ञासु इस पुस्तक "मै दसिहु मारगु संतहो" को पढ़कर जीवन-युक्ति अपनाएँ।

सिंह साहिब ज्ञानी गुरबचन सिंह

(हैड ग्रंथी सच्चखंड श्री हरिमन्दिर साहिब श्री अमृतसर)

# असीसड़ीआं



सिक्ख धर्म श्रद्धा और विश्वास का धर्म है। लेकिन श्रद्धा या श्रवण से या पढ़कर आती है। भाई साहिब भाई गुरइकबाल सिंह जी रब्बी कीर्तन सारे संसार में सुनाकर गुरु नानक नाम लेवा सिक्ख संगतों को निहाल कर रहे हैं। साथ ही गुरु हरिराए साहिब पातशाह जी के चिन्तन अनुसार मरीज़ों और दुःखी लोगों के लिए एक बड़े हस्पताल की शुरुआत करके (माता कौलां जी बंदी छोड़ चैरीटेबल हस्पताल) माता कौलां जी भलाई केन्द्र ट्रस्ट, इन्होंने एक नया मील-पत्थर स्थापित किया है। बड़ी खुशी की बात है कि भाई साहिब जी को सतिगुरु जी ने एक और नए चिन्तन ''मै दसिहु मारगु संतहो'' पुस्तक लिखने का सोभाग्य समय बख़्शा है।

*प्रभु जी बसहि साध की रसना।।*

(अंग २६३)

जिनकी रसना पर गुरु रामदास साहिब जी का बसेरा है उनके हाथों की कलम में भी सतिगुरु कृपा करें, यह दास की अरदास है।

सिंह साहिब ज्ञानी जसविन्दर सिंह

(ग्रंथी, सच्चखंड श्री हरिमन्दर साहिब, श्री अमृतसर)

੧ੴ सतिगुर प्रसादि।।

# भूमिका

संसार मिथ्या है, परमेश्वर ही सत्य है। मिथ्या में रहते हुए सत्य की प्राप्ति करनी है। हमारे जीवन का मुख्य उद्देश्य है 'परमेश्वर की प्राप्ति'। कुटुम्ब का पालन करना हमारा धर्म है। यह भी हमारा कर्त्तव्य है, लेकिन हमें कुटुम्ब पालन के कर्त्तव्य में हमें अपने असली कर्त्तव्य को नहीं भूलना। कहीं हमारा जीवन मोह-ममता एवं विकारों में ही न व्यतीत हो जाए। कहीं ऐसा न हो कि हमारा शरीर सफर तय कर ले, उम्र भोग ले, लेकिन आत्मा अपने अंतिम पड़ाव को प्राप्त ही न कर सके।



पृथ्वी पर बहुत सारे मनुष्य ऐसे भी होते हैं, जिनके जीवन में नाम-सिमरन, बन्दगी, गुरु की प्रशंसा नहीं है, जिनको पता ही नहीं कि मनुष्य जन्म किस लिए मिला है। जिन पर प्रभु की, सतिगुरु की कृपा हो, उनको ही इस मार्ग पर चलने की लग्न लगती है। वे अभाग्य होते हैं, जिनको इस मार्ग पर चलने की लग्न नहीं होती। वे भाग्यशाली हैं, जिनको इस मार्ग पर चलने की लग्न होती है। लेकिन परमेश्रवर की प्राप्ति चतुरता से नहीं होती। वह धन-दौलत से भी प्राप्त नहीं होता। वह 'केवल' धर्मिक स्थानों पर जाने से, मस्तक झुकाने से, प्रसाद चढ़ाने से या पूजा-पाठ से नहीं मिलता। 'केवल' नाम जपने और सेवा करने से ही बात नहीं बनेगी। यह पूजा-पाठ, नाम सेवा सब करना है, परंतु युक्ति के साथ करना है। बाग हो तो ले आओ आप बाज़ार से गेहूँ के,

बीज, चावल के या कोई भी, लाकर बाग में फेंक दो, क्या वे पौधे बनेंगे? अगर उनको बोना है तो धरती को सोधना (सिंचाई करनी पड़ेगी) पड़ेगा, इसमें हल चलाना पड़ेगा, सीमा बाँधनी पड़ेगी, गोड्डी करनी पड़ेगी, अच्छी तरह से बीज डालना पड़ेगा, फिर वह फल देगा।

हमें पता तो चल गया, हमने यह तो समझ लिया कि हमारी मंज़िल क्या है, लेकिन अगर हम मंज़िल को पुकारते रहेंगे और मार्ग की ओर ध्यान नहीं देंगे तो किसी भी स्थिति में हम मंज़िल तक नहीं पहुँच सकेंगे। मंज़िल पर हमारा ध्यान रहना चाहिए, परन्तु मार्ग का भी पूरा ध्यान रखना पड़ेगा। मार्ग का भी अपना मूल्य होता है। अगर मार्ग ही ठीक नहीं, भटका हुआ मार्ग है तो मंज़िल तक कैसे पहुँचेंगे? मंज़िल को प्राप्त करने के लिए मार्ग को समझना पड़ेगा। जैसेः अगर हम किश्ती में बैठ कर नदी पार जा रहे हैं, हमें पता है कि हमारी मंज़िल क्या है, हमें कहां पहुँचना है? अगर हम किश्ती को चलाएँगे ही नहीं तो मंज़िल पर कैसे पहुँचेंगे? मंज़िल तक पहुंचने के लिए हमें यह भी ध्यान रखना पड़ेगा कि कहीं हमारी किश्ती भंवर में न फंस जाए।

कोई आम सांसारिक कार्य भी करना हो, तो भी युक्ति की आवश्यकता है। जैसे दूध में घी होता है, लेकिन प्राप्ति के लिए युक्ति की आवश्यकता है, वैसे ही परमात्मा घट-घट में व्यापक है, लेकिन प्राप्ति के लिए युक्ति की आवश्यकता है। ये युक्तियां कहां से मिलेंगी? ये युक्तियां मिलेंगी सतिपुरुषों से, महापुरुषों से। नाम जपने, सेवा करने के साथ-साथ इसको युक्ति के साथ संभाला

जाए तो ही बात बनती है। अगर आपके पास युक्ति नहीं तो एक ओर तो हम बर्तन भरते हैं अर्थात पुण्य का कार्य करते हैं लेकिन दूसरी ओर वह बह जाता है अर्थात हमारे पाप हमारे पुण्यों को नष्ट कर देते हैं।

बाबा जी बचन करते थे, बैल, कोल्हू का बैल कितने मील सफर तय करता है! वह सिर्फ कोल्हू के इर्द-गिर्द ही घूमता है और संध्या को सोचता है, मैंने कितना सफर तय किया! लेकिन होता वहीं का वहीं है। इसी प्रकार अनेकों ने इस सफर पर पांव रखे, परन्तु युक्ति न होने के कारण, एक ओर बर्तन में खज़ाने को प्राप्त किया, लेकिन दूसरी ओर वह लोप हो गया, कार्य वहीं का वहीं। बाबा नंद सिंह जी के बचन हैं, नाम जपने वाला, सेवा करने वाला बड़ा नहीं। बड़ा है सेवा करके नाम जपकर उसको संभालने वाला। अनेकों ने इस मार्ग को अपनाया नहीं और अनेकों ने यह मार्ग अपनाया लेकिन कोल्हू के बैल की तरह। बर्तन भरा, आधा घंटा 'निन्दा' में व्यतीत हो गया, बर्तन (अर्थात पुण्य समाप्त) फिर खाली। अगर 'मैं' आ गई, बर्तन (अर्थात पुण्य समाप्त) फिर खाली।

धार्मिक जगत में कार्य करने के लिए सांसारिक कार्यों से बढ़कर कई गुणा अधिक समझ की आवश्यकता है, सत्संग की आवश्कता है, महापुरुषों के बचनों को पढ़ने-सुनने की। इसलिए आवश्यकता है कि वह समझ प्राप्त हो सके। हम में से अनेकों की सेवा, दान, कीर्तन, नाम जपना, युक्ति के बिना है। सेवा की जा रही है लेकिन युक्ति के बिना। नाम का जाप हो रहा है लेकिन युक्ति के बिना। प्रभु प्राप्ति का मार्ग वही बता सकता है

जो स्वयं इस मार्ग पर चल कर वहां पंहुचा हो वही बता सकता है कि क्या कठिनाइयां आती हैं, क्योंकि वह मार्ग को जानता है।

प्रभु प्राप्ति के मार्ग में बहुत सारी कठिनाइयां आती हैं क्योंकि कोई 'चीज़' जितनी बहुमुल्य होती है, उसकी प्राप्ति भी उतनी ही कठिन होती है। अगर विधिपूर्वक मार्ग समझकर चलेंगे तो मंज़िल की प्राप्ति संभव और सरल हो जाएगी। जो इस मार्ग पर चले हैं, वे बताते हैं कि कैसे चलना है, क्या कठिनाइयां हैं, क्या परहेज़ रख। अगर सचमुच ही भक्ति के मार्ग पर चलने का शौक है तो राम प्यारों की आठ युक्तियां को वर्णन सहित जो भाई साहिब भाई गुरइकबाल सिंह जी ने इस पुस्तक "मै दसिहु मारगु संतहो" में वर्णन किया है, बहुत सारी संगतों, प्रेमी जनों को नाम, सेवा सिमरन की कमाई संभालनी कैसे है, इस पुस्तक को पढ़कर इसके बारे में पता चलेगा और बहुत बड़ा लाभ प्राप्त होगा।


बीबी हरवीन कौर
321, गरीन ऐवीन्यु
श्री अमृतसर

# पहली युक्ति

**1. साधना करने वाले मनुष्य के लिए पहली युक्ति है कि साधक अपनी ज़िंदगी में ''सम्मान सब धर्मों का करे, लेकिन अपने गुरु पिता के अलावा किसी से प्रभावित न हो''**

जब किसी लड़की का विवाह हो जाए, वह अपने ससुराल जाकर अपने पति का तो बहुत सम्मान करे परन्तु अपने जेठ, जेठानी, सास, ससुर, देवर को बिल्कुल ही पीछे छोड़ दे, उनका सम्मान ही न करे, इसे भी ठीक नहीं माना गया। पति को जो स्थान हृदय में देना है, वह किसी और को नहीं परन्तु यह भी ठीक नहीं कि दूसरों का सम्मान न किया जाए। विवाह तो पति के साथ हुआ है, अपना आप उस पर न्यौछावर करना है, उसकी आज्ञा का पालन करना है लेकिन जहां पति को परमेश्वर मानना है, वहीं दूसरों का सम्मान करना भी उसका कर्त्तव्य है। पति को जो स्थान हृदय में देना है, वह किसी और को नहीं परन्तु यह भी ठीक नहीं कि शेष परिवार वालों का सम्मान ही न किया जाए या उनका अपमान किया जाए। अगर दूसरों का सम्मान न करे तो पति की भी पूरी प्रसन्नता नहीं मिल सकती।

अन्जान मनुष्य कई बार दूसरे अवतारों की निन्दा कर बैठता है। अपने गुरु के बिना किसी दूसरे धर्म वाले से प्रभावित भी नहीं होना और उसकी निन्दा भी नहीं करनी, नहीं तो बात बिगड़ जाएगी। सिक्ख, बेशक मन्दिर

के आगे से गुज़रे या मस्ज़िद के आगे से या गिरजाघर के आगे से, मन में सम्मान हो, ये भी प्रभु के घर हैं, सम्मान के साथ निकला जाए, एक पग भी बुरा सोचते हुए न उठाए। जो भी, जिस रंग में प्रभु का ध्यान कर रहा है, सब का सम्मान करे। कई ऐसे हैं जो दिन के 50-50 पाठ 'श्री जपुजी साहिब जी' के, अनेक पाठ सुखमनी साहिब के करेंगे नेम के साथ, परन्तु कई बार बातों-बातों में दूसरे धर्म वालों की निन्दा कर देते हैं। गुरु साहिबान के इतिहास से शिक्षा लेनी चाहिए कि वे क्या समझा रहे हैं और हम कहां खड़े हैं।

'गुरु नानक साहिब' जब संसार का कल्याण करने के लिए निकले, अपने साथ एक हिन्दू को रखा और एक मुसलमान को। अगर मन में कोई ऐसी बात होती तो कहते, सिक्ख को रखते हैं साथ! जब उनसे कोई पूछता कि यह दोनों आपके साथ कौन हैं, आपके चेले हैं या आपके सिक्ख हैं या आपके सेवक हैं, तो गुरु साहिब कहते, ये मेरे भाई हैं। यह भाई बाला जी और यह भाई मरदाना जी। 'गुरु अरजन देव जी' ने इतने बड़े स्थान 'सच्चखंड श्री हरिमन्दिर साहिब' की नींव किससे रखवाई थी- एक मुसलमान साईं मीयां मीर जी से! अगर चाहते तो किसी सिक्ख से भी रखवा सकते थे। भाई गुरदास जी, बाबा बुड्ढा जी और अनेक उस समय के श्रोमणि सिक्ख थे। लेकिन हमें यह शिक्षा देने के लिए कि सम्मान सभी धर्मों का करना है।

जब गुरु ग्रंथ साहिब में बाणी अंकित करने का समय आया, अगर मन में कट्टड़ता होती तो गुरुओं की ही

बाणी अंकित करते लेकिन उन्होंने गुरु ग्रंथ साहिब में केवल गुरुओं की बाणी को ही अंकित नहीं किया, बल्कि भक्त 'कबीर-जुलाहा जी' को बीच में बिठा दिया, भक्त फरीद जी-मुसलमान, भक्त रविदास जी-चमार (जूतों को ठीक करने वाले) भक्त सैन जी-नाई, भक्त धन्ना जी-जट्ट, भक्त सधना जी-कसाई, इनको भी बीच में बिठा दिया।

'गुरु हरिगोबिन्द साहिब जी' भी सब धर्मों का सम्मान करते थे। उन्होंने 'हरिगोबिन्दपुर' में मुसलमान भाइयों के लिए एक मस्जिद भी बनवाई, जो आज भी यह गवाही देती है कि गुरु साहिब सब धर्मों का सम्मान करते थे। गुरु गोबिन्द सिंह जी भी सिर्फ सिक्खों को ही प्यार नहीं करते थे। भाई नन्दलाल, पीर बुद्धू शाह को भी उन्होंने अपनी गोद में बिठाया, गुरु के लाडले सिक्ख भी उन्हीं रेखाओं पर ही चले हैं। महाराजा रणजीत सिंह ने सिर्फ गुरुद्वारों पर ही सोना नहीं चढ़ाया, बल्कि मन्दिरों, मस्जिदों पर भी चढ़वाया और गिरजाघरों पर भी चढ़वाया।

अन्जान मनुष्य कई बार दूसरे अवतारों की, दूसरे धर्मों की निन्दा कर बैठता है। पिता पर विश्वास पूरा हो, मन में यह ख्याल हो कि मेरा पिता बड़ा है परन्तु मन के भीतर यह ख्याल न हो कि दूसरा कुछ नहीं। कई ऐसे भी होते हैं जो आम 10 व्यक्तियों में बैठ कर डींगें मारेंगे कि मैं तो एक गुरु नानक को ही मानता हूं, मैं किसी और को कुछ नहीं समझता, लेकिन सूक्षमता। को समझना है, अपने गुरु पिता पर भी विश्वास रखना है, उसे धन्य भी कहना है परन्तु ऐसी शेखी भी नहीं पधारनी। ऐसा करने से तुम्हारे गुरु पिता भी नाराज़ हो जाते हैं, उनकी

बख़्शिश भी प्राप्त नहीं होती। जब आप शेखी पधारते हो कि मैं किसी अन्य को कुछ नहीं समझता, इसका अर्थ दूसरा व्यक्ति तुच्छ है? लेकिन सिक्ख धर्म में किसी का अपमान नहीं किया जाता।

एक बार दास को एक अनुभवी अभ्यासी व्यक्ति मिला। कहने लगा, मेरा इतने घण्टों का सिमरन है। दास ने कहा, बड़ी अच्छी बात है, बड़ी बख़्शिश है। लेकिन साथ ही वह कहने लगा, मैं तो अगर किसी मन्दिर के आगे से भी निकल जाऊँ तो हमेशा कहता हूं, शिव जी! आप क्या हो? मेरा इतना सिमरन है! कोई आठ मास के पश्चात वही शरीर फिर मिला। कहने लगा, मेरा अमृत वेला (समय) भी टूट गया है, मेरा अभ्यास भी टूट गया है; विषय-विकारों ने भी जन्म ले लिया है। दास ने मन में सोचा कि इसके इतने अभ्यास और सिमरन की कमाई के कारण तो गुरु साहिब इस पर प्रसन्न हुए होंगे लेकिन इसने दूसरों का अपमान किया, इसलिए प्राप्त हुआ भी सब कुछ छीना गया।

रहना भी पिता की शरण में है, और सम्मान भी सबका करना है। अगर मेरे जीवन की बात पूछो तो दास किसी मन्दिर के आगे से भी गुज़रता है तो भेटा (चढ़ावा) देकर गुज़रता है कि यह भी भगवान के घर हैं। भेटा क्या? जब मन्दिर के आगे से गुज़रता हूँ, पांच बार मूल मंत्र '੧ੳ से लेकर नानक होसी भी सचु' तक करके गुज़रता हूं कि यहां भी आप ही बसते हो। इस प्रकार रहे भी पिता के दायरे में और हृदय में किसी के प्रति निन्दा भी न आई।

अगर कोई कहे, मन्दिर कुछ नहीं, मस्ज़िद कुछ नहीं, गिरजाघर कुछ नहीं, फिर स्मरण रखना! गुरु नानक भी कहेंगे, 'मेरी पीठ सबसे पहले तुम्हारी ओर है।'

'दास' एक बार किसी अस्पताल में किसी को मिलने के लिए गया। जो मरीज़ अस्पताल में दाखिल था, उसकी पत्नी मुझे कहने लगी, 'मेरा गुरु नानक पर पूरा विश्वास है लेकिन फिर भी मुझे इतने पर्चे क्यों पड़ते हैं? मैं बड़ी आश्चर्यचकित हूं कि मैं शिवजी को भी नहीं मानती, ब्रह्मा को भी नहीं मानती, कृष्ण जी को भी नहीं मानती, विष्णु को भी नहीं मानती दास ने कानों में अंगुलियां दे लीं कि इतनी ज्ञान की कमी। दास ने कहा, 'बीबी! शिवजी बुरे हो गए, विष्णु जी बुरे हैं, ब्रह्मा जी बुरे हैं, क्या कृष्ण जी बुरे हैं? तुम कहती हो, मुझे पर्चे क्यों पड़ते हैं? पर्चे क्यों न पड़ें? तुम्हारी श्रद्धा में तो दूसरों की निन्दा के ढेर लगे हुए हैं। श्रद्धा यह तो नहीं कहती कि दूसरे बुरे हैं। अज्ञानतावश होने के कारण इन जैसे मनुष्यों की पंक्तियां लगी हुई हैं। दूसरे धर्म को तुच्छ समझने वालों की पंक्तियां लगी हुई हैं।

एक देश (नाम लेना उचित नहीं) जिसमें बुद्ध की प्रतिमाएं तोड़ी गईं बम के साथ, गोलियों के साथ और अन्य कई उपायों के साथ, यह क्या है? अपने धर्म का तो सम्मान है परन्तु अन्य धर्मों का अपमान। यह सिक्खी नहीं, यह अज्ञानता का लक्ष्ण है। अगर उस बुद्ध की प्रतिमा को बमों के साथ Blast न करके, कहीं सम्मान के साथ वहां से हटाकर जल की भेंट कर देते तो भी कोई बात नहीं थी। सत्कार रखते! परन्तु आज वहां क्या हाल

हो रहा है! हमारे भीतर ऐसी बात न बने, जिसमें दूसरे का अपमान हो, दूसरा तुच्छ है, दूसरा है ही नहीं। कोई कहे, गुरू नानक धन्य है तथा दूसरे को बुरा कहे, फिर गुरु नानक की भी पीठ है, गुरु नानक की भी प्रसन्नता नहीं मिल सकती। अगर कहे, सारे अच्छे हैं लेकिन गुरु नानक आप धन्य हो, फिर मुख है, प्रसन्नता है।

कई अपने दुःखों की गठड़ी दूसरों के आगे खोल देते हैं। ध्यान दीजिए! जिनके आगे गठड़ी खोलते हैं, वे बुरे नहीं। हमें यह पढ़ाई करनी है कि सभी अच्छे हैं लेकिन हे पिता गुरु नानक! मेरी गठड़ी तेरे आगे ही है। अगर आज आपने अपने दुःख की गठड़ी गुरु नानक के आगे रखी, 10 दिन व्यतीत नहीं हुए, किसी ने कहा, चल फलानी जगह तुझे ले चलूं। शौकिया तौर पर जाना है तो जाओ परन्तु वहां जाकर आप भी प्रार्थना करने लग पड़े तो समझ लो कि गिर गए लक्ष्य से। जिस हृदय पर पहले एक को बिठाया था, वहां पर अब हलचल मच गई है।

जीवन में दुःख भी चलते हैं, सुख भी चलते हैं। हम आम तौर पर उस समय गुरु का द्वार छोड़ते हैं, जब हमारी कोई मांग पूरी होने में देरी हो जाए। अरदास की, मांग पूरी नहीं हुई, देरी हो गई, सोचते हैं कि यहां से तो प्राप्त हुआ नहीं कुछ, छोड़ दें द्वार, फिर दूर होते-होते दूर हो जाते हैं। मालिक का इस प्रकार बनना है कि सच्चे पातशाह! दात शीघ्र दो या देर से दीजिए, मैं तुम्हारा हूं, तुम्हारे अलावा मेरा कोई सहारा नहीं।

महापुरुषों के बचन हैं, अगर गुरु नानक का बनना है तो तीन गुण लेकर बनना, 1. शीघ्रता नहीं करनी,

2. दर नहीं छोड़ना, 3. अभिमान नहीं करना। गुरु नानक के घर में देर हो सकती है, अंधेर नहीं। जो एक का बन कर रहता है, वह कभी खाली नहीं जाता। अगर देर भी होती है, वह तुम्हारे किसी भले के लिए ही होती है। वह जानता है, कौन सी दात कब देनी है। बाबा नन्द सिंह जी बचन करते थे, जिसकी गुरु नानक के दर से संतुष्टि नहीं हुई, उसकी कहीं से भी संतुष्टि नहीं हो सकती। जो सिक्ख कई किश्तियों में पांव रखता है, उसको भी मना लूं—उसको भी मना लूं, तो भी बात नहीं बनती।

दास को एक बार कोई गुरमुख प्यारा अपनी दुकान पर ले गया। वहां देखा, उन्होंने एक ओर स्थान बनाकर गुरु साहिब का सरूप, बाबा दीप सिंह का सरूप रखा था। साथ ही मेरी निगाह पड़ी कि कुछ अन्य भी देवी, देवते और अवतार, कच्छ अवतार, मच्छ अवतार और अन्य भी कई तस्वीरें। दास ने कहा, यह क्यों तथा कहने लगे कि सबको प्रसन्न किया जाता है कि कहीं कोई रुष्ट न हो जाए। बाबा नन्द जी के बचन हैं, वृक्ष की जड़ को पानी दे दिया जाए, अकेले-अकेले पत्ते को पानी देने की आवश्यकता नहीं। 'जड़' क्या है? 'गुरु नानक'। जिसने गुरु नानक की स्तुति कर ली, गुरु नानक के लेखे जीवन अर्पण कर दिया, मत सोचना कि कोई देवी, देवता रुष्ट हो जायेगा।

एक बार तीन दिन का समागम था फरीदाबाद-शुक्र, शनि और रविवार। जहां भी समागम हो, शुक्र, शनि, रात्रि को हमें किसी न किसी के घर ठहराते हैं। शुक्रवार

रात को प्रोग्राम था। जब हम शुक्रवार रात्रि प्रोग्राम से वापिस आए तो 1:30 बजे का समय था। मन में विचार आया कि थोड़ा विश्राम किया जाए। प्रातः 4:30 बजे उठे और सोचा, स्नान किया जाए। आगे के प्रोग्राम में जो गुरु साहिब ने सेवा लेनी थी, उसके लिए तैयारी करें। जब दास उठा, दास ने उस घरवालों से केवल यह पूछ लिया कि स्नानघर में शैम्पू है कि नहीं? उन्होंने कहा, "भाई साहिब! शैम्पू क्या करना है?" दास ने कहा, "जी, सिर धोना है" क्योंकि बाबा जी की ओर से सुमत्त मिली है कि प्रतिदिन सिर धोना चाहिए। ध्यान दीजिए! दोनों पति-पत्नी कहने लगे, "न भाई साहिब! आज सिर मत धोना। आपको नहीं पता आज शनिवार है, शनिवार को सिर नहीं धोते?" दास ने कहा कि मेरी प्रार्थना है कि सिर तो मैंने धोना है, आप क्यों घबरा रहे हो? वे कहने लगे, "देख लेना आप, सिर तो आपने धोना है और शनि देवता ने हमसे रुष्ट हो जाना है।" हमने फिर युक्ति बरती। दास ने कहा, "ठीक है, अगर शनि ने मेरे सिर धोने से आपकी हानि करनी है तो दास सिर नहीं धोएगा।"

दास ने स्नानघर के दरवाजे को चिटकनी लगाई कि भीतर किसने देखना है, सिर धोकर भीतर ही निचोड़ कर सिरोपा बाँध लिया। जब स्नानघर में से बाहर आए तो वे देखने लगे कि कहीं सिर तो नहीं धोया। हमने दस्तार सजाई और जहां प्रोग्राम था, वहां चले गए। जब रात्रि को एक-डेढ़ बजे वापस आए तो घरवाले पूछने लगे, "जी कोई दूध वगैरह?" दास ने कहा, "नहीं,

आवश्यता नहीं।'' फिर वे दास के पाँव छूकर कहने लगे, ''आपका बहुत धन्यवाद, आपने हमारी प्रार्थना मान ली, सिर नहीं धोया। देखिए! आज हमारी कोई हानि नहीं हुई।'' दास ने कहा, ''मैंने तो सिर धोया था, यही तो आपका भ्रम निकालना था।''

अपने भीतर झांकना! क्या आप भी तो कहीं ऐसे भ्रम में तो नहीं फंसे हुए? अगर आपके घर में अमृत वेला है, श्री जपुजी साहिब जी की बाणी, श्री सुखमणि साहिब जी की बाणी के अध्ययन के पश्चात् दिन आरम्भ होता है, दास गुरु की कृपा से दावे के साथ कहता है, शनि हानि नहीं करेगा। आपकी सेवा में हाज़िर रहेगा। रंगे हुए गुरसिक्ख की सेवा में देवी-देवता हाज़िर रहते हैं कि हमसे भी कोई सेवा ले ले। सिक्ख ने किसी धर्म की निन्दा भी नहीं करनी, किसी को तुच्छ भी नहीं कहना। अगर इस नियम से चलोगे तो पीर रुष्ट नहीं होंगे, बल्कि आपकी सेवा में हाज़िर रहेंगे।



क्रोपी तो तब है जब आपने किसी की निन्दा की। ऐ सिक्ख! सम्मान सबका कर लेकिन अपने गुरु के साथ ऐसा प्रेम कर कि मेरे बस आप ही हो। संसार में जितनी भी किश्तियां हैं, सम्मान सबका करो लेकिन बैठो सिर्फ एक किश्ती में। अवश्य निगाह डालिए! कहीं आपने अलग-अलग किश्तियों में पांव तो नहीं रखे? कहीं आपके घर में दीया तो नहीं जलता? गांवों में तो ऐसी बातों का ज़ोर है। अगर पूछा जाए, 'भई, आप सिक्ख हो, फिर यह बृहस्पति वार का दीया क्यों?' वे कहते, 'कहीं पीर रुष्ट न हो जाए।'

दास को एक गुरसिक्ख नवयुवक मिला। कहने लगा 'आजकल काम-धन्धा कुछ मन्दा चल रहा है, लेकिन अब ठीक हो जाना है, क्योंकि मैं किसी अनुभवी शरीर के पास गया था' उसने मुझे कहा कि तुमसे सूर्य देवता रुष्ट है इसलिए तुम्हारा काम-धन्धा मन्दा चल रहा है। उसने मुझे सात दिन पानी में सिन्दूर डाल कर सूर्य देवता को जल देने के लिए कहा है, फिर मेरा कारोबार ठीक हो जाएगा।

वही नौजवान अढाई महीने बाद फिर मिला। दास ने पूछा, "कैसे हो, गुरमुखा?" उसने बताया, "पहले 70 हज़ार का ऋण था, अब सवा लाख का हो गया है।" दास ने पूछा, "जो सात दिन जल में सिन्दूर डाल कर सूर्य देवता को दिया था, क्या उससे बात नहीं बनी, माने नहीं सूर्य देवता?" वह कहने लगा, "सात दिन सिन्दूर डाल कर जल तो दिया था लेकिन बात नहीं बनी।" दास ने उसको कहा, "जब अढाई महीने पहले मिला था, उस समय तुम्हारा एक कष्ट था लेकिन अब तुम्हारे दो कष्ट हैं।" वह कहने लगा, "कष्ट तो एक ही है ऋण का। उस समय 70 हज़ार का था, अब सवा लाख का है।"

दास ने समझाया, "पहले एक कष्ट था ऋण का, पर अब दूसरा कष्ट है कि तुम गुरु नानक की किश्ती से उतर गए हो।" सिक्खो! अगर आप भी जाते हो तवीतों वालों के पास तो इसका अर्थ है कि आपके हृदय में स्थान है उनके लिए। आपके नेत्रों में गुरु नानक ही बिराजमान रहे। जब कभी किसी को, और कभी किसी को बिठाओगे तो अधूरे ही रह जाओगे।

गुरु अंगद साहिब जी के जीवन से शिक्षा लें-पहले प्रत्येक वर्ष देवी के दर्शनों को जाते थे लेकिन आत्मिक शान्ति प्राप्त न कर सके लेकिन जब गुरु नानक जी के दर्शन हुए, ऐसे प्रभावित हुए, ऐसा मन स्थिर हुआ कि गुरु नानक जी के होकर रह गए।

एक बार 'सिद्ध' आए थे गुरु अंगद साहिब के पास। कहते, "हमसे कुछ ले लीजिए।" लेकिन गुरु अंगद साहिब कहने लगे, "सिद्धो! यहां जितने दिन चाहे रहो, प्रशादे-पानी की या और अन्य सेवा कहो, करेंगे, लेकिन जो बात कहते हो कि हमसे कुछ ले लीजिए, इस हृदय में गुरु नानक बिराजमान है, किसी अन्य के लिए स्थान नहीं।"

गुरु के साथ ऐसा प्रेम करना कि सतिगुरु मेरे हैं, मेरे मन, मेरे हृदय, मेरे शरीर, मेरी आत्मा को एक तेरा ही सहारा है। हमारी हर पुकार, हर मिन्नत धन्य गुरु नानक, धन्य गुरु ग्रंथ साहिब जी के चरणों में हो। एक पर आशा रखो। यह नहीं कि कष्ट आया तो किश्ती बदल ली। कहीं हमारे हाथ गुरु नानक के दर के अलावा किसी और का किवाड़ न खटकाएं। हमारे भीतर यह विश्वास हो कि मेरा गुरु ही गुरुओं का गुरु है, सर्व कला सम्पन्न है। निस्तारा तभी है कि जब प्रेम-भक्ति आ गई। प्रेम भक्ति क्या है? 'गुरु नानक! मेरा आपके बिना कोई है ही नहीं।' बाबा नन्द सिंह जी के बचन हैं, वृक्ष मांगो, छाया अपने आप मिल जाती है, फल आप ही मिल जाते हैं। इसी प्रकार ही जिसे गुरु नानक जी मिल गए, सब देवी-देवता आप ही प्रसन्न हो गए। अगर अकेले-अकेले

को मनाएंगे तो कभी एक रुष्ट हो जाएगा, तो कभी कोई मान जाएगा। गुरु नानक प्रसन्न तो सारे प्रसन्न।

एक बार, गुरु अंगद साहिब जब उन्हें अभी गुरुगद्दी प्राप्त नहीं हुई थी, गुरु नानक साहिब की सेवा में थे, तो रात्रि को उन्होंने एक बीबी को गुरु नानक के दर पर झाड़ू देते हुए देखा और पूछा, "हें बीबी! तू कौन है और इतनी रात्रि में यहां सेवा क्यों कर रही है?" उस बीबी ने कहा, "तुमने मुझे पहचाना नहीं, मैं वही देवी हूं, जिसके पास तुम हर वर्ष दर्शनों को आते थे।" भाई लहिना जी बहुत आश्चर्यचकित हुए और पूछा, "फिर यहां झाड़ू की सेवा क्यों?" देवी ने उत्तर दिया, "गुरु नानक के दर से बख़्शिशें लेकर ही तो मैं अपने दर पर आने वालों की झोलियां भरती हूं।"



सो साधक बन्दे (व्यक्ति) के लिए पहली युक्ति है कि सम्मान सबका करे, निन्दा किसी की नहीं परन्तु अपने गुरु पिता के बिना स्थान-स्थान से प्रभावित न हो।

आज से कुछ वर्ष पहले की बात है। रात के साढ़े दस बजे थे। दास के घर का किवाड़ ज़ोर से खटकने की ध्वनि हुई। दास ने ऊपर से देखा कि कौन है जो इतनी रात्रि को इतने ज़ोर-ज़ोर से किवाड़ खटखटा रहा है। देखा, एक गुरसिख, दाहड़ा खुला हुआ, दस्तार सजी हुई। दास को कहने लगा, "शीघ्र नीचे आइए।" दास नीचे गया। पूछा, "बताइए, क्या बात है?" वह कहने लगा, "शीघ्र मेरे साथ चलिए, कहीं 'लाहा' (लाभ) लेने से वंचित न रह जाएं।" दास ने कहा, "कौन सा लाहा? बताओ तो सही।" वह कहने लगा, "शमशान से एक

महापुरुष आए हैं। उनकी 150 वर्ष की आयु है। शीघ्र चलिए, कहीं वो चले न जाएं, उनके दर्शन कर लीजिए। जो भी, जैसा भी उनके पास आशा लेकर जाता है, वह संपूर्ण हो जाती है।'' दास ने उसका कंधा पकड़कर कहा, ''जितनी तुम्हें शीघ्रता है, मुझे नहीं।'' वह कहने लगा, ''जी 'लाहा' लीजिए, समय व्यर्थ न गवाइए।'' दास कहने लगा, ''ज्ञान वृद्धि के लिए चाहे चला जाऊं परन्तु जिससे मांगना है, जिसको हृदय में बिठाया है, जिसके आगे मन को बेचा है, वह कार्य हो चुका है।''

हम कई बार एक क्षण में एक दूसरे से प्रभावित हो जाते हैं। कोई सोने का भी बनकर दिखा दे, फिर भी अपने गुरु को ही हृदय में बिराजमान रखना है। सिक्ख का अपने गुरु, अपने केन्द्र पर विश्वास पर्वत समान स्थिर होना चाहिए, रेत जैसा नहीं होना चाहिए। जब तूफ़ान आता है तो रेत को उड़ा देता है। गढ़शंकर में और भी तो कई सिक्ख रहते ही होंगे परंतु एक भाई तिलका ही था जो स्वर्ग के लालच से भी प्रभावित नहीं हुआ था। केवल भाई तिलका ही नहीं था गया योगी के दर्शन करने, जिसने वर प्राप्त किया था कि जो भी मेरे दर्शन करेगा, उसे एक वर्ष का स्वर्ग मिलेगा और अपनी इच्छा से जिसे भी चाहूं उसे 100 वर्ष का स्वर्ग दे दूं। जो रेत के समान थे, वे उड़कर चले गए थे योगी के दर्शनों को स्वर्ग लेने के लिए, लेकिन जो पर्वत के समान था, वह स्थिर रहा। वह नहीं गया।

यहां तक इतिहास में लिखा है कि योगी स्वयं गया और तिलके को कहने लगा, ''किवाड़ खोलो और मेरे

दर्शन कर लो।" योगी ने यहां तक कहा कि 100 वर्ष का स्वर्ग ले लो, लेकिन उसने 100 वर्ष का स्वर्ग भी ठुकरा दिया। कहने लगा, "मुझे स्वर्ग जाने की इच्छा नहीं है। मुझे गुरु अरजन देव जी के चरणों का रस मिला है, मुझे और कुछ अच्छा ही नहीं लगता।" संसार है न! कोई ऐसी बात सुने तो भीड़ें इकट्ठी हो जाती हैं।

कुछ वर्ष पहले अमृतसर में एक बालक ने जन्म लिया और उसका नाक थोड़ा और तरह का था प्रकृति की ओर से। शोर मच गया कि गणेश जी ने जन्म लिया है, जो माँगोगे, वह मिलेगा। भीड़ इकट्ठी हो गई। बहुत वर्ष पूर्व सटोव देवता निकल आया था। कहते थे, इसके पास बैठो और जो इच्छा हो मांग लो, मांग पूर्ण होती है। अब कहां गया वह देवता? भीड़ें इकट्ठी हो जाती हैं, कोई ऐसी बात सुनने को मिले तो।

बीते हुए समय में कहते थे कि किसी इलाके में से पानी निकल आया, आवश्यकता नहीं डॉक्टरों के पास जाने की, यह पानी सारे ही रोग दूर कर देगा। भीड़ें इकट्ठी होनी आरम्भ हो गईं। बस, ट्रक भर-भर कर जाने आरम्भ हो गए। भीड़ें इकट्ठी होनी आरम्भ हो जाती हैं, जब ऐसी कोई बात सुनने को मिले। जिनका अपने गुरु पर विश्वास स्थिर है, वे किसी से प्रभावित नहीं होते। वे अपने गुरु से ही मांगते हैं। वे अपने गुरु के अलावा अन्य किसी के आगे अपने दुःखों की गठड़ी नहीं रखते।

यह पहली युक्ति है! स्थान-स्थान से प्रभावित नहीं होना। स्थान-स्थान पर शीश झुकाने वाला व्यक्ति लड़खड़ा

जाता है।

हम अहमदाबाद गए। वहां पर अमृत-संचार और कीर्तन हो रहा था। पांच घण्टे बीच में विश्राम के थे। जिस घर हम ठहरे थे, वे हमें एक स्थान पर ले गए, जिसको किसी ने अरबों रुपए लगाकर बनाया था। उसका नाम था 'अक्षर धाम'। हमने भीतर जाकर देखा कि 16 पर्दों की पिक्चर जिसमें परमात्मा की सृष्टि के बारे में दिखाया गया था, दूसरी तरफ Computer की सहायता से वर्षा करवाई और हज़ारों वर्ष पहले का समय भी दिखाया गया। उनकी अंतिम Item थी कि प्रतिमाएं कीर्तन करती थीं। कोई प्रतिमा मृदंग बजा रही थी, कोई रबाब बजा रही थी, पीछे टेप में धार्मिक गीत लगा हुआ था। जैसे-जैसे टेप में से ध्वनि प्रवाहित होती, प्रतिमा भी मुंह हिलाती थी। जैसे टेप चलती थी, प्रतिमा भी मुंह हिलाती थी। जैसे टेप चलती थी प्रतिमाओं के भी होंठ हिलते थे। श्रद्धा के बोल आने पर प्रतिमाएं आँखें बंद करके झूमती थीं। दास का ही एक साथी कहने लगा, ''देखो जी! कितनी बड़ी बात है! प्रतिमाएं कीर्तन कर रही हैं।''

दास कहने लगा, ''देखते रहो लेकिन प्रभावित मत होना।'' वह कहने लगा, ''जी दृश्य ही प्रभावित करने वाला है।'' दास ने कहा, ''बहुत बढ़िया चीज़ है परंतु प्रभावित न हो। यहां पर तो प्रतिमाएं कीर्तन करती हैं परन्तु तुम्हारे पिता के घर सच्चखण्ड श्री हरिमन्दिर साहिब आठों पहर सच्ची प्रतिमाएं कीर्तन करती हैं।'' दिल्ली रकाब गंज चले जाओ, शीश गंज, बंगला साहिब चले जाओ, कीर्तन हो रहा है। गुरु रामदास जी के घर

तो आठ पहर ही कीर्तन की खुराक मिलती है। इसे देखो! लेकिन प्रभावित मत होना।

सो यह प्रथम युक्ति है साध-संगत जी। अगर इस सड़क पर चलने का शौक है तो अपने पिता को हृदय के उस तल पर बिराजित करना है कि स्थान-स्थान से प्रभावित नहीं होना क्योंकि अगर तुम किसी अन्य से प्रभावित हो गए, गुरु को तुच्छ देखा तो एक दिन ऐसा आ जाता है कि जख़्म इतना बड़ा हो जाता है कि गुरु में भी दोष देखने लग पड़ता है। यह जख़्म जन्म ही न ले क्योंकि अगर गुरु को तुच्छ देखा, गुरु में दोष दिखाई देने लग पड़े तो तुम्हारी भक्ति रुक जाएगी। गुरु के साथ तो इस प्रकार का संबंध बनाना है कि गुरु नानक! तुमसे दूर है ही कुछ नहीं। मेरा तो निरंकार भी तू ही है। ऐसा एक का बनकर रहना है कि अन्य निरंकार न ढूंढना पड़े। उसके भीतर से ही निरंकार के दर्शन होंगे।

यह कभी नहीं समझना कि दूसरे धर्मों के लोग या उनकी धार्मिक क्रियाएं तुच्छ हैं। सिक्ख ने बनकर तो एक का रहना है लेकिन सम्मान सभी का करना है, नहीं तो उसके भीतर ईर्ष्या और निन्दा जैसे अवगुण आ जाएंगे, उसकी भक्ति कट्टर बन जाएगी। कट्टर भक्ति नहीं करनी, प्रेमा भक्ति करनी है और यह प्राप्त करने वाले *साधक के लिए प्रथम ध्यान देने योग्य युक्ति है कि साधक सम्मान सब धर्मों का करे लेकिन अपने गुरु पिता के अलावा किसी से प्रभावित न हो।*

❖❖❖

# दूसरी युक्ति

*2. साधक बन्दे (व्यक्ति) के लिए दूसरी युक्ति है, अगर साधना के समय आलस्य तंग करे, मन उकता जाए, तब ढंग बदलना जारी रखे लेकिन साधना न छोड़े।*

जिस प्रकार आरम्भ में छोटा बालक विद्यालय प्रसन्नता से नहीं जाता क्योंकि वहां पर उसका मन नहीं लगता। लेकिन धीरे-धीरे माँ-बाप शिक्षा के लाभ समझाते हैं और बालक अपने आप विद्यालय जाकर शिक्षण के लिए राज़ी हो जाते हैं। विद्यालय में भी बालकों की शिक्षा में रुचि उत्पन्न करने के लिए कई तरह के ढंग अपनाए जाते हैं। यह तो नहीं होता कि बालक दो-तीन दिन रोए और माँ-बाप उसे विद्यालय से हटा लें। बालक को विद्यालय भेजने के लिए कई तरह के ढंग अपनाए जाते हैं। इसी प्रकार जब हम इस ओर चलते हैं तो निद्रा, आलस्य, मन का उकता जाना—इन सभी के तंग करने से साधना को छोड़ देना, यह कोई हल नहीं। लगे रहना ही औषधि है।

भाई वीर सिंह जी के बचन हैं कि मन स्थिर रहे या न रहे, नाम-बाणी नहीं छोड़नी। जो लगे रहेंगे उनके लिए वह समय भी आएगा जब मन स्थिर हो जाएगा। जो चलते रहेंगे चाहे मध्यम् चाल ही सही, उनकी तो मंज़िल पर पहुंचने की आशा हो सकती हैं लेकिन जिन्होंने मार्ग ही छोड़ दिया, वे तो हमेशा के लिए गुम हो गए।

मन का स्वभाव है कि वह रस ढूँढता है। जिस काम

में रस न आए उससे शीघ्र ही उकता जाता है। सिमरन पहले मैल को दूर करता है इसलिए पहले इसमें मन नहीं लगता और जब मन निर्मल हो जाता है फिर सिमरन में रस आना आरम्भ हो जाता है, फिर छोड़ने को मन नहीं करता। कई कह देते हैं कि अगर मन नहीं जुड़ता तो बाणी पढ़ने का, नाम जपने का क्या लाभ? मन जुड़े या न जुड़े शब्द के अभ्यास में बैठा करो। जब तक पुन्य कम हैं मन नहीं जुड़ता, पुण्य बढ़ने के साथ ही मन जुड़ना आरम्भ हो जाएगा। अगर छोड़ देंगे तो पुण्य किस प्रकार बढ़ेंगे?

जिस प्रकार धरती में बीज उल्टा या सीधा जैसे मर्ज़ी बो दीजिए, उगता सीधा ही है। आपने वाहिगुरु-वाहिगुरु करना है-यत्न करो, रुचि से करो लेकिन अगर उकता कर करोगे तो भी कुछ न कुछ देकर ही जाएगाः

*तुलसी हरि हरि कीजिए भावे रीझ कि खीझ।।*
*जिउ धरती मे हरा होइ उल्टा पुल्टा बीज।।*

जिस प्रकार अग्नि का कार्य है जलाना, उसमें किसी भी प्रकार की कोई भी वस्तु डाल दीजिए उसने उसको जला ही देना है। उसी प्रकार बाणी का कार्य है पापों को जलाना। चाहे किसी प्रकार भी पढ़ें उसने हमारे पापों को जला ही देना है।

एक अवस्था है-श्री सुखमनी साहिब जी की 17 वीं 18 वीं असटपदी आई तथा मन उकताया हुआ है कि कब समाप्ति होगी और एक अवस्था है-श्री सुखमनी साहिब पढ़ने में रस आने लगा है। पाठ की समाप्ति के बाद काम पर जाने का समय हो गया है परन्तु मन करता है

# यह भी तो किसी के लाडले हैं!

**क्या**

इनकी परवरिश में
आपका कोई
योगदान है... ?



**यह वो बच्चे**

**घर में गरीबी**

**पिता का साया नहीं**

**रोटी कहां से खाएं**

**स्कूल किस तरह जाएं**

*4165 विधवा स्त्रियां, 9360 इनके बच्चे,*
*22 शहरों में हर महीने सहयोग प्राप्त कर रहे हैं।*
*आप जी के सहयोग की आवश्यकता है।*

आपकी विश्वास पात्र संस्था :-

**माता कौलां जी भलाई केन्द्र ट्रस्ट**

तरन तारन रोड, श्री अमृतसर।

## दास भाई गुरइकबाल सिंघ

संपर्क नं :- 0183-3294659, 98765-25828/20/30 Website :- mkbktrustamritsar.org
www.matakaulanjibhalaikendertrust.com, E-mail:-mkbkt_amritsar@yahoo.com

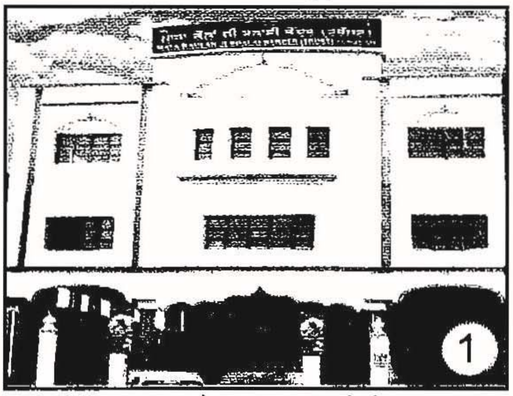
भला ही भला कोई व्यापार नहीं

# माता कौलां जी भलाई केंद्र ( ट्रस्ट ) के अधीन चल रहे सभी युनिटों के विवरण

भला ही भला कोई व्यापार नहीं

## ट्रस्ट अधीन चल रहे 22 विधवा स्त्रियों के केन्द्र

1. यहां 1625 विधवा स्त्रियों को हर महीने पांच लाख पचास हजार का राशन फ्री दिया जाता है।
2. राशन उन जरूरतमंद स्त्रियों को दिया जाता है जिनके बच्चे 15 साल से छोटी उम्र के हैं।
3. इन स्त्रियों की ही बेटियों और अन्य जरूरतमंद बच्चियों को कम्प्यूटर, सिलाई- कढ़ाई का छः महीने का कोर्स बिलकुल फ्री करवाया जाता है। हमारी इच्छा है कि इन स्त्रियों की बच्चियां अपने पैरों पर खड़ी हो सकें।
4. इन स्त्रियों को सर्दियों-गर्मियों के सूट, रजाइयां, तलाइयां, सिलाई मशीनें, प्रैशर कूकर, रैबर कूलर आदि सामान साल में चार बार फ्री दिया जाता है।


1

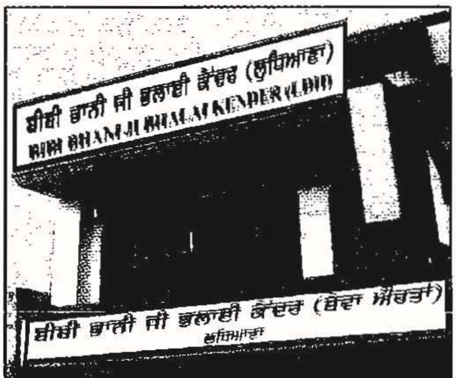
माता कौलां जी भलाई केंद्र तरन तारन रोड, श्री अमृतसर की इमारत

इस भलाई केंद्र की ड्यूटी भाई गुरइकबाल सिंघ जी द्वारा गुरु की कृपा से भाई मोहन सिंघ जी ( भोला वीर जी ) एवं सहयोगियों को सौंपी गई है।

संपर्क नः 98765-25815,98765-25830,0183-3292255

## लुधियाना में बीबी भानी जी भलाई केंद्र

1. यहां 595 विधवा स्त्रियों को हर महीने दो लाख रुपए का राशन फ्री दिया जाता है।
2. राशन उन जरूरतमंद स्त्रियों को दिया जाता है जिनके बच्चे 15 साल से छोटी उम्र के हैं।
3. राशन के अलावा समय-समय पर वस्त्र एवं अन्य घरेलू सामान भी दिया जाता है।



2

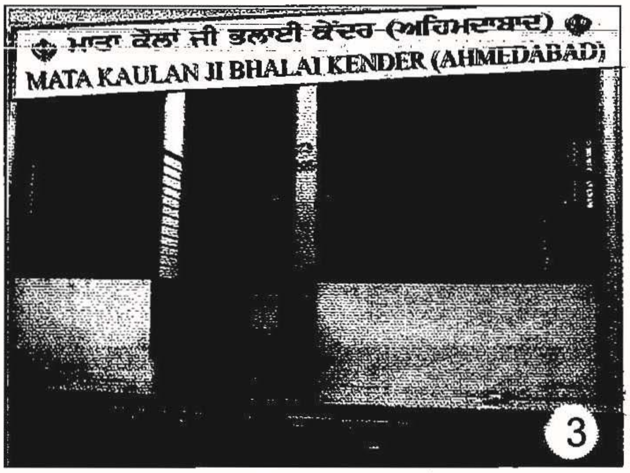
बीबी भानी जी भलाई केंद्र 1219/22-B, हरनाम नगर, माडल टाऊन, लुधियाना

आप जी के सहयोग की जरूरत है।

इस भलाई केंद्र की ड्यूटी भाई गुरइकबाल सिंघ जी द्वारा गुरु की कृपा से भाई हरभजन सिंघ जी, भाई अरविंदर पाल सिंघ जी एवं सहयोगियों को सौंपी गई है।

संपर्क नः 0161-2429900, 98157-93713, 9872634013

# अहमदाबाद में
# माता कौलां जी भलाई केन्द्र




पता: 87/706 पुष्पक अपार्टमैंट, नरनपुरा, अहमदाबाद ( गुजरात )
संपर्क न: 98240-21654

1. यहां 96 स्त्रियों को हर महीने राशन फ्री दिया जाता है।
2. राशन उन स्त्रियों को दिया जाता है जिनके बच्चे 15 साल से छोटी उम्र के हैं।
3. राशन के अलावा समय-समय पर वस्त्र एवं अन्य घरेलू सामान भी दिया जाता है।
4. यहां गुजराती विधवा स्त्रियां साड़ी पहन कर राशन लेने आती हैं और उनके मुख से निकलता है... "हमारे पति चले गए, हमें किसी गुजराती ने तो पूछा नहीं, ये सिक्ख कौन हैं जो हमारे पति की मृत्यु के बाद हमारी सार ले रहे हैं? ( धन्य सिक्खी )

**इस भलाई केन्द्र की ड्यूटी भाई गुरइकबाल सिंघ जी द्वारा गुरु की कृपा से भाई कन्वरबीर सिंघ जी, भाई सुखबीर सिंघ जी एवं सहयोगियों को सौंपी गई है।**



## अन्य शहरों में चल रहे विधवा स्त्रियों के प्रेरणा केन्द्र

| | | |
|---|---|---|
| 4. | माता कौलां जी भलाई केन्द्र ( बेवा औरतें ) | मेरठ ( यू.पी. ) |
| 5. | माता कौलां जी भलाई केन्द्र ( बेवा औरतें ) | नासिक ( महाराष्ट्र ) |
| 6. | माता कौलां जी भलाई केन्द्र ( बेवा औरतें ) | फरीदाबाद ( हरियाणा ) |
| 7. | माता कौलां जी विधवा बहन भलाई केन्द्र ( बेवा औरतें ) | सूरत ( गुजरात ) |
| 8. | माता साहिब कौर जी भलाई केन्द्र ( बेवा औरतें ) | चण्डीगढ़ |
| 9. | माता नानकी जी भलाई केन्द्र ( बेवा औरतें ) | सैदां गेट, जालंधर |
| 10. | माई भागो जी विधवा बहन भलाई केन्द्र ( बेवा औरतें ) | तिलक नगर, दिल्ली |
| 11. | बाबा दीप सिंघ जी सेवा सिमरन भलाई केन्द्र ( बेवा औरतें ) | पटियाला |
| 12. | बाबा दीप सिंघ जी भलाई केन्द्र ( बेवा औरतें ) | ग्वालियर ( म.प्र. ) |
| 13. | बाबा जवाहर सिंघ जी भलाई केन्द्र ( बेवा औरतें ) | होशियारपुर |
| 14. | बाबा दीप सिंघ जी भलाई केन्द्र ( बेवा औरतें ) | निकट नेपाल बार्डर, ननवा |
| 15. | गुरु नानक भलाई केन्द्र ( बेवा औरतें ) गु: इमली साहिब | इन्दौर ( म.प्र. ) |
| 16. | माता कौलां जी भलाई केन्द्र ( बेवा औरतें ) कौशलपुरी गुमटी न:5, ( दशमेश सेवक सभा ) | कानपुर ( यू.पी. ) |
| 17. | माता मनमोहन कौर जी भलाई केन्द्र ( बेवा औरतें ) | तुगलकाबाद, दिल्ली |
| 18. | माई भागो जी विधवा बहन भलाई केन्द्र ( बेवा औरतें ) | रजिन्द्र नगर, दिल्ली |
| 19. | माता साहिब कौर जी अशीष भलाई केन्द्र | ईस्ट आफ कैलाश दिल्ली |
| 20. | माता कौलां जी वैल्फेयर सोसाइटी भलाई केन्द्र ( राजा जी पूरम ) | लखनऊ ( यू.पी ) |
| 21. | मदर कौलां जी वैल्फेयर सैंटर | मैरीलैंड, अमेरिका |
| 22. | मदर कौलां जी *निष्काम* वैल्फेयर सैंटर | कैलिफोर्निया, अमेरिका |

## ट्रस्ट अधीन चल रहे 4 अस्पतालों का विवरण

1. यहां X-ray, Ultrasound, Heart, Ortho, Skin, Eyes, Physio, Pseychiatry, Dental E.N.T., T.B. और सभी शारीरक टैस्ट होते हैं। सबसे बड़ी बात यह सारे टैस्ट No Profit, No Loss पर किए जाते हैं।
2. यहां पर T.B. के टैस्ट और दवाई बिलकुल फ्री।
3. यहां गुरु की मेहर से रोज़ाना 1200 मरीज लाभ पा रहे हैं।
4. एक ही छत के नीचे लगभग सभी इलाज केवल 5/-की पर्ची से। दो दिन की दवाई और चैक-अप बिलकुल फ्री।
5. चाय मरीज के पास फ्री पहुंचती है, पानी मरीज के पास पहुंचता है, पांव दबाने की मशीन की सुविधा फ्री है, जोड़े पालिश की सुविधा फ्री है और टी.वी. पर धार्मिक प्रोग्राम चलता रहता है।



1

माता कौलां जी बंदी छोड़ चैरिटेबल अस्पताल, तरन तारन रोड, श्री अमृतसर

इस अस्पताल की ड्यूटी भाई गुरइकबाल सिंघ जी द्वारा गुरु की कृपा से भाई हरविन्द्र पाल सिंघ जी ( लिटल जी ) एवं सहयोगियों को सौंपी गई है।

संपर्क नः 97795-99990,98765-25865,98725-95910,0183-2485920



## बाबा दीप सिंघ जी बाबा कुंदन सिंघ जी चैरिटेबल अस्पताल,
### पताः बाबा दीप सिंघ जी कालोनी, अंदरून चाटीविंड गेट, श्री अमृतसर

1. यहां 10 रुपए की पर्ची पर चैक-अप किया जाता है और दो दिन की दवाई फ्री मिलती है।
2. M.D. डाक्टरों से मरीज लाभ प्राप्त कर रहे हैं।
3. अस्पताल में ही लैब (Lab.) सभी टैस्टों के लिए उपलब्ध है।
4. यह शाम 5 बजे से रात 8 बजे तक खुलता है। लगभग 125 मरीज रोज़ाना लाभ प्राप्त कर रहे हैं।
5. यह अस्पताल मौजूदा महापुरुष बाबा हरभजन सिंघ जी नानकसर वालों की आशीष से खोला गया है और माता ज्ञान कौर जी की प्रेरणा से चल रहा है।

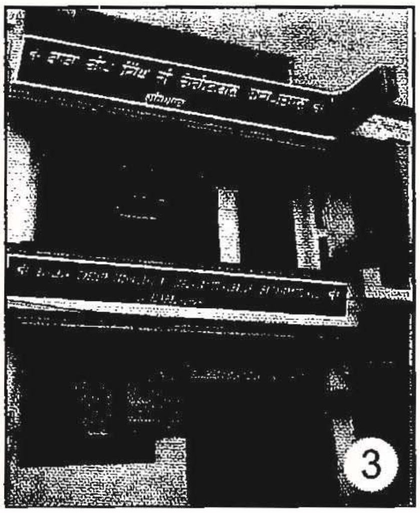


2

संपर्क नः 0183-2546277,98725-95910

## लुधियाना में बाबा दीप सिंघ जी चैरिटेबल अस्पताल
## पता : 1219/22, हरनाम नगर, माडल टाऊन, लुधियाना

दांतों के अस्पताल और होम्योपैथिक का समय सुबह 10 से 1 बजे तक जरनल डाक्टर और आंखों के अस्पताल का समय दोपहर 2 से 4 बजे तक



1. यहां दांतों का इलाज बिलकुल फ्री किया जाता है।
2. होम्योपैथिक की दवाई बिलकुल फ्री दी जाती है।
3. केवल 5 रुपए की पर्ची पर आंखों के टैस्ट और दवाई बिलकुल फ्री।
4. यहां पर (M.D.) डाक्टरों से मरीज लाभ प्राप्त करते हैं।
5. विधवा औरतों को पर्ची का कोई पैसा नहीं और दवाई बिलकुल फ्री।
6. लगभग 125 मरीज रोज़ाना लाभ प्राप्त कर रहे हैं, आप जी के सहयोग की आवश्यकता है।

**इस अस्पताल की ड्यूटी भाई गुरइकबाल सिंघ जी द्वारा गुरु की कृपा से भाई हरभजन सिंघ जी, भाई अरविंदर पाल सिंघ जी एवं सहयोगियों को सौंपी गई है।**

**संपर्क नः 0161-2429900,98157-93713, 98726-34013**

## 4. भाई घनईया जी चैरिटेबल अस्पताल, देहरादून
### संचालक : भाई बलविन्द्र सिंघ ( कथवाचक )

## ट्रस्ट अधीन चल रही गुः साहिब जी की कार सेवा

कलगीधर के लाडले, प्यारे, बहुत प्यारे, महान तपस्वी, महान जरनैल, यति-सति, पूर्ण ब्रह्मज्ञानी, प्रेम करने और सिखाने वाले अनोखे अमर शहीद, महान योद्धा, धन्य धन्य बाबा दीप सिंघ जी का इस जगह पर आगमन हुआ।



गुः श्री पहूविंड साहिब

1. 2000 शरीर के बैठने वाला प्रकाश स्थान का हाल, सोने के दरवाजे और सोने की बारियों वाला सुख आसन स्थान।
2. 5000 शरीर के बैठने वाला बड़ा लंगर हाल, लंगर बनाने वाला बड़ा रसोईघर, प्रबंधकी ब्लाक, सुंदर बाग, कार पार्किंग आदि तैयार हो चुकी है।
3. बड़ी पानी की टैंकी, बाबा दीप सिंघ जी डे-बोर्डिंग स्कूल, अजायब घर, संगतों के लिए सराय, यह सब निर्माणाधीन है। आप जी के सहयोग की आवश्यकता है।
4. कर्नल जी. एस. संधू जी और गुः साहिब जी की कमेटी की पूर्ण आशीष है।

**इस स्थान की कार सेवा की ड्यूटी भाई गुरइकबाल सिंघ जी द्वारा गुरु की कृपा से भाई हरमिन्द्र सिंघ जी ( बाबा जी ) एवं सहयोगियों को सौंपी गई है।**

**संपर्क नः 98765-25847, 0183-3292255**

# ट्रस्ट अधीन चल रही तीन सरायें

गुरधामों के दर्शन करने आई संगत के लिए




## माता कौलां जी संगत निवास सराय

पताः संगल वाली गली,
निकट गुः बाबा अटल राए साहिब जी, श्री अमृतसर।

1. माता कौलां जी संगत निवास सराय में गुरधामों के दर्शन करने आई संगत के आराम के लिए 22 A.C. कमरे और 3 बड़े A.C. हाल हैं।
2. सराय में बुकिंग के लिए 98765-25859, 98765-25811 पर संपर्क करो।




## बाबा कुंदन सिंघ जी संगत निवास सराय

**पताः नजदीक ब्रहम बुटा मारकींट श्री अमृतसर**

1. बाबा कुंदन सिंघ जी संगत निवास सराय में संगतों के आराम के लिए 29 A.C. कमरे हैं।
2. सराय में बुकिंग के लिए 98765-25832, 98765-25835 पर संपर्क करो।

**माता कौलां जी संगत निवास सराय की ड्यूटी भाई गुरइकबाल सिंघ जी द्वारा गुरु की कृपा से भाई प्रितपाल सिंघ जी एवं सहयोगियों को सौंपी गई है।**

**इन दोनों सराय में निम्नलिखित सुविधाएं उपलब्ध हैं।**

1. हर कमरे में डबल बैड, अलमारी, अटैच बाथरुम ( सर्दियों में गर्म पानी की सुविधा ), इंटरकोम, TV में Live कीर्तन श्री दरबार साहिब और सारा दिन कथा-कीर्तन चलता है।
2. संगतों के लिए U.S.A. से पांव दबाने वाली मशीन, जोड़े पालिश करने वाली मशीन, लिफ्ट की सुविधा है।
3. सराय के अंदर ही सामान्य मूल्य पर कैन्टीन की सुविधा।
4. आप जी किसी भी जगह से 6 दिन पहले फोन पर भी अपने कमरे की बुकिंग करवा सकते हो।
5. सबसे बड़ी बात, सुविधाएं सब पर कोई बिजनैस नहीं। एक ही चाव है कि आप श्री गुरु रामदास जी के दर पर आकर नाम का रस लो और आपकी सेवा हो सके।

**बाबा कुंदन सिंघ जी संगत निवास सराय की ड्यूटी भाई गुरइकबाल सिंघ जी द्वारा गुरु की कृपा से भाई अमरजीत सिंघ ( सिलकी वीर जी ) एवं सहयोगियों को सौंपी गई है। आप जी के सहयोग की आवश्यकता है।**

# तीसरी सराय ( निर्माणाधीन )

( साहिबजादा अजीत सिंघ जी संगत निवास सराय )

**सतिगुरु जी की कृपा से ट्रस्ट द्वारा तीसरी सराय श्री हरिमन्दिर साहिब जी से सिर्फ 2 मिनट का पैदल रास्ता, 260 गज जगह में 45 A.C. कमरे, बड़े हाल, बाहर से आई संगतों की सुविधा के लिए, जो कि शीघ्र ही तैयार की जा रही है।**

इस सराय की ड्यूटी भाई गुरइकबाल सिंघ जी द्वारा गुरु की कृपा से भाई हरमिन्द्र सिंघ जी ( बाबा जी ) एवं सहयोगियों को सौंपी गई है।

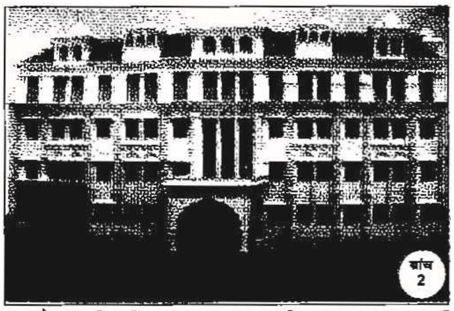
**संपर्क नः 98765-25847, 98765-25848, 0183-3292255**

# ट्रस्ट अधीन चल रहे दो स्कूल

1. यह स्कूल C.B.S.E. हो चुका है।
2. पंजाब में पहली बार सारा स्कूल A.C. है।
3. गुरमति और अंग्रेजी दोनों का खजाना बच्चों को मिले, यह चाव है।
4. रोटी खाने से पहले अरदास, बाद में अरदास, स्कूल छुट्टी के समय अरदास कैसे करनी है, कैसे बोलना है, सारी गुरमति का प्रशिक्षण।
5. गतका, कीर्तन, तबला, पुराने तंती साज, कम्प्यूटर, खेलों के विशेष प्रबंध।
6. पांचवीं का बच्चा अमेरिका की एम्बैसी (Embassy) में अंग्रेजी में बात कर सके, यह हमारी इच्छा है।
7. बच्चा बाणी कंठ करे, रोज गुरुद्वारे जाए, 15 मिनट सेवा करे, इसके अलग नम्बर हैं।
8. इस स्कूल पर आपके दिए दसवंध में से लगभग 10 करोड़ रुपए की लागत आई है।
9. यह सब कुछ होते हुए फीस केवल 375/- रुपए और 425/- रुपए है। कोई व्यापार नहीं, इच्छा है कि आम आदमी भी अपने बच्चों को दोनों विद्या दे सके। अैसे और स्कूल खुलें इस लिए आप जी के सहयोग की जरूरत है।
10. यह दोनों सकूलों में अभी होसटल की सुविधा नही है



माता कौलां जी पब्लिक स्कूल, तरन तारन रोड, श्री अमृतसर
संप्रक नं: 0183-2484920, 98151-18476



माता कौलां जी पब्लिक स्कूल, नजदीक गु: टाहला साहिब
तरन तारन रोड, श्री अमृतसर
( संप्रक 0183-2484922, 98765-25806 )

**तीसरी ब्रांच निर्माणाधीन**

तीसरी ब्रांच दाता बंदी छोड़ पब्लिक स्कूल, निकट गांव भिटेवड, राम तीर्थ रोड, ज़िला अमृतसर में निर्माणाधीन है।

इस स्कूल की ड्यूटी भाई गुरइकबाल सिंघ जी द्वारा गुरु की कृपा से भाई अमनदीप सिंघ जी एवं सहयोगियों को सौंपी गई है। संपर्क न: 98765-25824,98150-89513

## माता कौलां जी भलाई केन्द्र ट्रस्ट के समूह कीर्तनी जथों के संपरक नंबर।

| | |
|---|---|
| मुख्य कीर्तनीए भाई गुरइकबाल सिंघ जी | |
| भाई गुरपाल सिंघ जी ( उस्ताद जी ) | 098765-25825 |
| भाई हरविंदरपाल सिंघ जी ( लिटल ) | 097795-99990 |
| भाई अमनदीप सिंघ जी | 098765-25824, 098150-89513 |
| भाई हरदेव सिंघ जी ( दीवाना जी ) | 098765-25822, 0183-2493213 |
| भाई जसविंदर सिंघ जी ( सिवल-लाईन ) | 098765-25809 |
| भाई गुरदीप सिंघ जी ( बसंत एवेन्यु ) | 099152-82913 |
| भाई अंतरप्रीत सिंघ जी | 097791-12513, 098553-46036 |
| भाई जतिंदर सिंघ जी ( बिटू जी ) | 098150-29312 |
| भाई तेजपाल सिंघ जी | 095010-13678 |
| भाई सुरिंद्रर सिंघ जी ( मनी जी ) | 094641-18919 |
| भाई अरविंद्रर सिंघ जी ( लौंग मास्टर ) | 098765-25840 |
| भाई हरमिंदर सिंघ जी ( कथा वाचक ) | 098765-25847, 098765-25846 |
| बीबी परमजीत कौर जी ( पम्मा बहन जी ) | 098765-25833 |
| बीबी हरवीन कौर जी ( बिनू बहन जी ) | 099150-33901 |
| भाई हरभजन सिंघ जी ( लुधियाना ) | 098157-93713, 098720-07184 |
| भाई तजिंद्रर सिंघ जी जोश ( लुधियाना ) | 098760-58304 |
| भाई केवलजीत सिंघ जी ( दिल्ली ) | 098106-22413, 011-26220372 |
| भाई बलविंदर सिंघ जी ( कथा वाचक ) ( देहरादून ) | 092196-01313, 099277-22464 |
| भाई गगनजोत सिंघ जी ( जालंधर ) | 098154-13138 |

*जरूरी विनती:= सभा के समूह प्रेमियों एवं देश=विदेश की संगतों को हाथ जोड़ कर विन्ती की जाती है कि उपरोक्त सारे जत्थे माता कौलां जी भलाई केन्द्र की प्यार भरी कमांड में निष्काम सेवा निभा रहे हैं। विनती है कि दास सहित इन सभी जत्थों को कोई भी घरेलु वस्तु जैसे कि दस्तार, सूट, कुर्ता पजामा, जर्सियां, घड़ी, मोबाइल, बच्चों के कपड़े इत्यादि कोई भी घरेलु वस्तु न दी जाए। यदि आप जी का मन सेवा करना चाहे तो कछहरों का कपड़ा, सिलाई कछहरे, कृपानें, गातरे, गुटके, केसकी के लिए कपड़ा, माला या चल रहे विधवा स्त्रियों के केन्द्र के लिए माया या राशन का सहयोग दिया जाए जी। हमारी भावना है कि आपकी दी वस्तु संगत के काम आए, जिससे सब का भला हो।*

आशा है विनती स्वीकार करते हुए आशीषें प्रदान करोगे जी धन्यवाद।

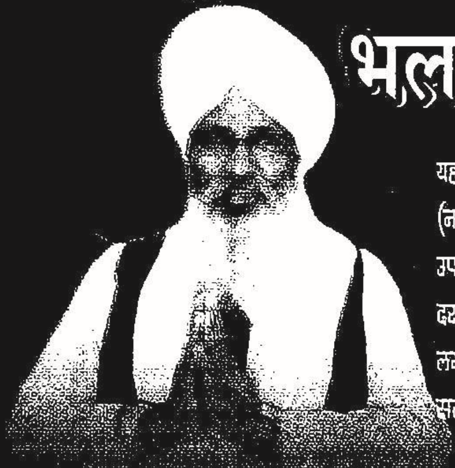
## माता कौलां जी भलाई केन्द्र ट्रस्ट द्वारा 4 अनुपम लहरें

300 साल गुरबाणी कंठ दे नाल' के अब तक 3 भाग हो चुके हैं, इस लहर में क्रमवार 3,23,207,/4,12,820/11,32000 बच्चों ने भाग लिया।

दूसरी लहर '300 साल लिखन भक्ति दे नाल' इस लहर में 2,81000 बच्चों/नौजवान/बुजुर्गों ने भाग लिया।

तीसरी लहर '300 साल सिक्खी सरूप दे नाल' इस लहर में 3,24,804 बच्चों/नौजवान/बुजुर्गों ने भाग लिया।

चौथी लहर '300 साल सिक्ख इतिहास दे नाल' इस लहर में 19,32,536 बच्चों/नौजवान/बुजुर्गों ने भाग लिया।



# भला ही भला कोई व्यापार नहीं

यह जो भी सबकुछ चल रहा है, सारी आशीष नदरि श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी, बाबा कुंदन सिंघ जी (नानकसर कलेरा) और मौजूदा महांपुरुष बाबा हरभजन सिंघ जी नानकसर वालों की है। यह उपरोक्त संस्थाएं आप स्वयं आकर देखो, आप दर्शन दो, हमें और सुमति दीजिए, लगभग हर सिक्ख दसवंध निकालता है। वह दसवंध लग कहां रहा है, यह देखना आपकी ड्यूटी है, दसवंध सही जगह लगाना, सही संस्था में देना, यह हमारा फर्ज है। ध्यान रखना ऐसे भलाई केंद्र, ऐसे अस्पताल, ऐसी सराएं, ऐसे स्कूल और खुलें, संगत जी आप जी की आशीष और सहयोग की जरूरत है।

## आपकी विश्वास पात्र संस्था:-

इन चल रहे कार्यों के लिए यदि आप जी अपने दसवंध में से सेवा [illegible] (चैक या ड्राफ्ट) भेजना चाहो तो निम्नलिखित नाम पते पर भेजना जी:-

नाम :- माता कौलां जी भलाई केन्द्र (ट्रस्ट)

पता:- माता कौलां जी भलाई केन्द्र (ट्रस्ट) तरन तारन रोड श्री अमृतसर साहिब।

आप जी अपना पूरा पता एवं मोबाइल फोन साफ-साफ अक्षरों में लिखकर साथ जरूर भेजना जी ताकि रसीद एवं सत्कार आप जी के दिए पते पर पोस्ट किया जा सके। ट्रस्ट को दी हुई सेवा में इन्कम टैक्स के कानून 80-G अनुसार छूट है जी।

यदि आप जी ने दसवंध की सेवा सीधी बैंक में ट्रांस्फर करके भेजनी हो तो हमारे दोनों बैंकों के आन लाइन एकाउंट नंबर (ONLINE ACCOUNT NO.) निम्नलिखित है जी:-

| | |
|---|---|
| नाम: माता कौलां जी भलाई केन्द्र (ट्रस्ट) | नाम: माता कौलां जी भलाई केन्द्र (ट्रस्ट) |
| खाता नंबर : 3398000100114013 | खाता नंबर : 02631770000020 |
| बैंक : पंजाब नैशनल बैंक | बैंक : एच.डी.एफ.सी बैंक |
| ब्रांच : कोट मित सिंह, तरन तारन रोड, अमृतसर | ब्रांच : आर एस टावर अमृतसर |

जरूरी विनती : आन लाइन बैंक खाते में सेवा डालकर मोबाइल नंबर 98765-25820 या 98765-25828 पर जरूर सूचित करो ताकि आप जी को रसीद एवं सत्कार पोस्ट किया जा सके।

### जरुरी सुचना

### संगत सावधान रहे

कई लोक माता कौलां जी भलाई केंद्र ट्रस्ट का नाम लेकर जां भाई गुरइकबाल सिंघ जी का नाम लेकर चन्दा (सेवा) ईकठा करने आते है संगत सावदान रहे

नोट:- अगर आप के पास कोई अनजान व्यकती हमारा नाम लेकर सेवा लेने आता है तो तुरंत इस नंबर पर संपरक करे:-

**M: 98765-25815, 98765-25830, 98765-25821**

धन्यवाद सहित दासन दास **भाई गुरइकबाल सिंघ**

**एवं सहयोगी**


**Ph.: 0183-3292255,3294659, FAX 0183-2483920,**

**(M) 98765-25830, 98765-25828,98765-25849**

**E-mail:-mkbkt_amritsar@yahoo.com**

**www.matakaulanjibk.org**

कि और बैठूं सांसारिक Duty के कारण अपने नेम से उठे लेकिन मन नहीं कर रहा। एक है मन का उकताना, एक है, रस आ गया।

भाई वीर सिंह के बचन हैं-"हमारा रस का अधिकार कहां है, यह तो गुरु कभी-कभी झलकारे मार कर देता है ताकि बच्चे कहीं डगमगा न जाएं। बन्दे (व्यक्ति) का धर्म है भजन करना, रस वाहिगुरु के बस में है। अभी तो युद्ध है। नाम के गोले मार कर माया के, मैल के, घबराहट के, गुबार के मोर्चे नष्ट करने हैं। ज़ोर-ज़ोर गोले बरसते रहने से दुश्मन के टिकाने नष्ट होते रहें। युद्ध क्या और रस क्या?" हमें गुरु पर विश्वास रखकर, गुरु के आश्रय-सहारे के साथ नाम जप-जप कर इन विकारों पर विजय प्राप्त करनी है। फिर रस की प्राप्ति होगी।



नाम बहुमूल्य वस्तु है, रत्न है, हीरा है लेकिन बहुत कठिन है नाम जपना। एक बार 10-12 ब्राह्मणों ने गुरु गोबिन्द सिंह जी के पास आकर प्रार्थना की कि जब से आपने निरंकार की भक्ति का मार्ग बताया है, हमारा व्यापार समाप्त हो गया है। हमारी अर्चना समाप्त हो गई है। सतिगुरु कहने लगे, "अगर संसार के लोगों ने आपकी अर्चना बन्द कर दी है तो हम करेंगे आपकी अर्चना, आपको अर्चना में क्या चाहिए? अच्छे वस्त्र, भोजन, धन-दौलत ये तीनों वस्तुएं हम आपको देंगे।" ब्राह्मण कहने लगे, "यह तो बहुत अच्छी बात है, हमें मंजूर है।" गुरु साहिब ने भाई आलम को कहा, "इन ब्राह्मणों के हाथों में माला पकड़ाकर और इन्हें 5-5 गज की दूरी पर

बिठाकर इनको कहो कि सिमरन करें। साथ में पहरा देना है कि सिमरन करते हुए किसी को निंद्रा का झोंका न आए। कोई सिमरन करना बन्द न कर दे। भाई आलम ने ऐसा ही किया। उन ब्राह्मणों ने बड़ी कठिनाई से सिमरन में दिन गुज़ारा।'' जब संध्या हुई तो गुरु साहिब ने सभी को वस्त्र, भोजन और पांच-पांच मोहरें दीं और कहा , ''यह सब कुछ प्रतिदिन मिलेगा। आपका कार्य सिर्फ नाम जपना है।'' ब्राह्मण कहने लगे, ''आप यह जो नाम जपने को कहते हो, यह बहुत कठिन है। यह जो कहते हो कि माला फेरो, यह बहुत कठिन है। नाम जपना हमारे वश की बात नहीं, हम कम कमा लेंगे लेकिन हमें छुट्टी दे दो क्योंकि यह नाम जपने का कार्य बहुत कठिन है।''



भाव कहने से कठिन है नाम जपना लेकिन अगर भीतर से द्वार खुल जाए तो आप फिर रह नहीं सकोगे। फिर तो यह बात बन जाएगी :

*''आखा जीवा विसरै मरि जाउ।।''*

(अंग ९)

जो नाम जपना पहले कठिन लगता था, वही फिर मधुर लगने लग जाता है। अगर आपको अभी भी नाम जपना कठिन लग रहा है तो महापुरुषों की बताई हुई कुछ युक्तियां हैं। इन्हें अपनाने से फिर नाम मधुर लगने लगेगा।

अमृत वेला को उठकर स्नान करके फिर प्रभु से जुड़ो। चाहे जपुजी साहिब जी के पाठ करो, चाहे पांच बाणियां पढ़ो, चाहे सुखमनी साहिब जी में जुड़ो तथा चाहे गुरमन्त्र में जुड़ो तथा चाहे मूलमन्त्र में, जहां भी

मन जुड़े, वहां जुड़ो। परंतु अगर आप पालथी मार कर बैठे हैं और 10-15 मिन्ट सिमरन करने के बाद निंद्रा दबाव डाले तो कहीं इसकी लपेट में न आ जाना। अगर मन उकता जाए या निंद्रा का दबाव पड़ जाए तो कई छोड़ देते हैं लेकिन छोड़ना नहीं। अगर निंद्रा दबाव डाले तो उठकर, घूम-फिर कर बाणी पढ़ना आरम्भ कर दीजिए, आँखों पर भीगा हुआ तौलिया रख लीजिए। अगर बाणी पढ़ते हुए मन उकता जाए तो चौर साहिब कर लीजिए और साथ-साथ में सिमरन कीजिए। 15-20 मिन्ट के पश्चात् अगर चौर साहिब करते हुए भी मन उकता जाए तो गुरबाणी की कैसेट लगा लीजिए, कानों से शब्द श्रवण करो और साथ-साथ सिमरन कीजिए। अगर फिर मन उकता जाए तो जपुजी साहिब, सुखमनी साहिब, सहज पाठ। कहने से तात्पर्य ढंग को बदलाए जाइए लेकिन साधना न छोड़ो।

कुछ समय हुआ है, हम जोधपुर गये। वहां कीर्तन का प्रोग्राम था। वहां हमने कीर्तन के दौरान, हाथ खड़े करवाए कि प्रातः 40-45 मिन्ट नाम जपकर या बाणी पढ़ने के पश्चात परशादा-पानी छकना है। हम जिस घर में ठहरे थे, वहां सुबह परशादा छकने लगे तो हमने उन्हें भी कहा कि आप भी हमारे साथ परशादा छको। वे कहने लगे, "मेरा अभी आधा घण्टा हुआ है, 15 मिन्ट और जपकर फिर छकूंगा।" दास ने पूछा कि क्या आप प्रातः अमृत वेला को नहीं उठे थे? उन्होंने कहा कि 4 बजे सुबह उठा तो था लेकिन जब सिमरन करते हुए अभी आधा घण्टा ही व्यतीत हुआ था कि मुझे निंद्रा ने

घेर लिया और मैं सो गया। 15 मिन्ट अब करके फिर छकूंगा। दास ने कहा कि अगर सिमरन करते हुए निंद्रा का ज़ोर पड़ जाए तो निंद्रा के काबू में नहीं आना, सो नहीं जाना, घूम-फिर कर सिमरन करना चाहिए, कोई भी ढंग अपना लो।

कई बार कई कहते हैं कि सिमरन करो लेकिन 10 मिन्ट में ही मन उकता जाता है। यह एक छोटी सी युक्ति बाबा नन्द सिंह जी बताते थे। प्रयोग करके देख लेना! बाबा जी बताते थे कि 108 मोतियों वाली माला ले लीजिए। उसका पहला मोती पकड़कर चार बार 'वाहिगुरु' कह, फिर दूसरा मोती, इस प्रकार रस बंधता जाएगा। अपने मन में यह निश्चय कर लो कि मैंने इस तरह 20 मालाएं करनी हैं। एक मोती पर चार बार 'वाहिगुरु' कहने से 80 मालाएं हो गईं। कितनी बड़ी हाज़री लग गई। इस प्रकार कलियुग के पहरे के कारण जो मन उकता जाता है, वह नहीं उकताएगा। बाबा जी एक और साधना बताते थे कि माला का एक मोती पकड़ो, चार बार 'वाहिगुरु' कहने के पश्चात कहो, 'धन्य गुरु नानक देव जी।' फिर रस में और अधिक वृद्धि होगी कि 'वाहिगुरु' किसको कहा है। भाव कि ''वाहिगुरु'' आप स्वयं ही गुरु नानक और 'गुरु नानक' आप स्वयं ही वाहिगुरु हैं।''

प्रातः अमृत वेला को उठकर 3-4 बजे एकांत में आसन लगाकर गुरु को अंग-संग जान कर जपुजी साहिब के पाठ करो तथा यह भावना बनाओ कि मैं बाणी अकेला नहीं पढ़ रहा अथवा अकेली नहीं पढ़ रही। मैं गुरु की हज़ूरी में हूँ। वे मेरे सामने बैठे है। मेरे पाठ को

श्रवण कर रहे हैं। ऐसा करने से गुरु के चरणों में ध्यान स्थिर होना आरम्भ हो जाएगा और निंद्रा कम आएगी। अगर फिर भी निंद्रा का दबाव बढ़े तो उठकर धीरे-धीरे टहलना शुरू कर दीजिए और उसी तरह पाठ में ध्यान लगाए रखो। कुछ समय के पश्चात बैठ जाएं। तात्पर्य यह है कि पाठ के समय जो निंद्रा, आलस्य उत्पन्न होता है उसमें कभी भी अपने आप को नहीं पड़ने देना। सावधान रहना है।

भाई वीर सिंह जी के समय एक अभ्यासी के बचन का दास ने अध्ययन किया। उसने अपने घर में 11 ढंग रखे हुए थे एकाग्रता के लिए। दास स्वयं उनके कमरे में दर्शन भी करके आया है, साधन देख कर आया है। ब्न्होंने अपने आप पर Ban (रोक) लगाया हुआ था। श्री जपुजी साहिब के पाठ एक घण्टा, लगातार जितने हो सकें, एक ही पालथी (चौकड़ी) में करके रस लेते थे। अब एक घण्टे के पश्चात सुस्ती भी पड़ जाती है। दूसरा ढंग— उन्होंने छाती तक की एक पाईप लगाई हुई थी, उस ऊपर दोनों बाजू रखकर फिर सिमरन करते थे। कुछ समय इस ढंग से रस लेना। अब अगर वे पाईप पर भी उकता गए तो उन्होंने कमरे में झूला लगाया हुआ था। उन्होंने अपनी पुस्तक में लिखा है कि जब मैं पाईप से झूले पर जाकर बैठता तो आधा घण्टा बहुत सुचेतना से व्यतीत हो जाता था। साथ-साथ में सिमरन और साथ में ही हल्का-हल्का झूटा। अगर झूले से मन उकता जाए तो चौथा ढंग उन्होंने बैरागन रखी हुई थी, उस पर कुछ देर चौपई साहिब या अन्य बाणी पढ़ते। पांचवां ढंग उन्होंने एक कुर्सी भी रखी

हुई थी जिस पर बैठ कर वे प्रभु से जुड़ते थे। छठा ढंग उन्होंने खुण्डी रखी हुई थी। उनके सेवादारों ने बताया कि जब निंद्रा का बहुत अधिक दबाव पड़ जाता तो खुण्डी पकड़कर खड़े हो जाते थे और जपुजी साहिब के 11-11 पाठ सरलता से कर जाते थे।

सातवां साधन सेवादार बताते थे कि एक सहज पाठ आरम्भ रखते थे। 50-100 अंग एक ही पालथी में कर लेते थे। आठवां साधन चौर साहिब करते हुए सिमरन। नौवां साधन टेप लगाकर शब्द सुनते थे और भावना बना लेते थे कि दरबार साहिब के भीतर बैठे हैं। दसवां साधन एक सुखमनी साहिब हस्तलिखित देखी, जिसका एक-एक पन्ना इतना चौड़ा था कि सारी अष्टपदी एक ही पेज पर लिखी थी। सेवादारों ने बताया कि अभ्यास करते हुए इतनी बख़्शिश हो गई थी कि एक ही सांस में एक अष्टपदी पढ़ लेते थे। हो सकता है कि कई इस बात को मानने को तैयार न हों कि यह कैसे हो सकता है? लेकिन किसी के घर की छत पर कोई गया ही नहीं तो उसको कैसे पता लग सकता है कि उस घर की छत पर क्या पड़ा है। परंतु जो गया है वह बता सकता है। अतः जो यहां तक नहीं पहुंचे, वे तो यही कहेंगे कि नहीं हो सकता लेकिन जिस दिन इस अवस्था पर पहुंच जाओगे, कहोगे, हो सकता है ऐसा !

आज भी दास की Knowledge में ऐसी आत्माएं हैं जो एक सांस में एक अष्टपदी नहीं तो दो सांसों में एक अष्टपदी पढ़ लेती हैं। लेकिन जो यहां नहीं पंहुचा उसके लिए तो आश्चर्य की बात है। ग्यारहवां साधन उन्होंने

एक हज़ार मनकों की माला रखी हुई थी। उनके सेवादार ने बताया कि वे कई बार Ban (रोक) लगाते थे कि एक लाख मूलमंत्र का पाठ एक मास में करना है। प्रतिदिन की 2-3 मालाएं, इस प्रकार मास में 100 मालाओं के साथ एक लाख पाठ का जाप हो जाता था। बाबा कुंदन सिंह जी महापुरुषों ने भी कई मालाएं एकत्रित करके (उनकी लीला वही जानें) बनाई हुई थीं। बड़े प्रेम से सेवादार को कहते थे, लाओ हमारी रस्सी!

हम जैसों को आलस्य आ जाए बाणी का अध्ययन करते हुए तो हम गुटका एक ओर रख देते हैं कि पहले पांच मिन्ट सो लिया जाए। कई बार ऐसी निंद्रा आती है कि 2–3 घण्टे पता ही नहीं चलता। जो महापुरुष इस मार्ग पर चले हैं, हमें उनके जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए। अगर हमें भी साधना करते हुए निंद्रा, आलस्य मन का उकता जाना, ये चीज़ें तंग करें तो भक्ति के अलग–अलग ढंग अपनाना कोई गुनाह नहीं है।

महापुरुष सिमरन की एक विधि यह भी बताते थे श्वास लिया, छाती में फंसा लिया, भीतर जाप करो, आवाज़ नहीं आएगी, होंठ नहीं हिलेंगे, जिह्वा में हलचल नहीं होगी, जपा जा रहा होगा। इस प्रकार एक 'श्वास में 9–10 बार 'वाहिगुरु–वाहिगुरु' कहा जा सकेगा। अगर अभ्यास हो जाए तो एक श्वास में 100 बार भी कह सकते हो (जितनी बार भी कहा जा सके, ज़िद्द नहीं करनी) बाद में दो 'श्वास छोटे लो, चौथा श्वास फिर लम्बा, छाती में फंसा लेना है और 'वाहिगुरु–वाहिगुरु' जपना है, जहां भी विश्वास हो चरणों में सुरति रखकर। इस प्रकार आधा

घण्टा भी बैठो तो अथाह फल मिलता है। इस प्रकार के अभ्यास में निंद्रा भी नहीं आएगी। आम व्यक्ति जब सिमरन में बैठता है तो निंद्रा बहुत दबाव डालती है, पर इस ढंग से निंद्रा दबाव नहीं डालेगी। दो छोटे श्वास इसलिए लेने हैं क्योंकि लगातार लम्बे श्वास लेने से पांच मिन्ट बाद आप थक जाओगे। छोटा श्वास लेने के समय भी 'वाहिगुरु' कहना है लेकिन उसमें 2-3 बार ही कहा जाएगा। जैसे-जैसे अभ्यास करोगे, अपने आप बढ़ता जाएगा।

बाबा ईशर सिंह जी तथा उनके सेवादार बाबा कुन्दन सिंह जी, भाई गुरमुख सिंह जी एक बार गोइंदवाल साहिब गए और बउली साहिब में स्नान करने लग पड़े। जब बाबा ईशर सिंह जी स्नान कर रहे थे तो भाई गुरमुख सिंह जी को कहते, "नाक पकड़कर केशों समेत डुबकी लगानी है बउली साहिब में।" भीतर पानी में भी व्यक्ति एक-आध श्वास ले ही लेता है। बाबा जी कहते, "जब तक पानी में रहना है, पहली पउड़ी 'नानक होसी भी सचु' तक पढ़नी है। बाहर निकलकर बताना कि कितनी बार पढ़ी है।" (अभ्यास की बात चल रही है कि अभ्यास क्या होता है?) जब बाहर आने पर भाई गुरमुख सिंह जी को पूछा तो उन्होंने बताया कि तीन बार जपा। फिर उन्होंने बाबा कुन्दन सिंह जी को भी इसी प्रकार करने के लिए कहा। बाहर निकलने पर पूछने पर कहते, "आपकी कृपा से सात बार।" अब बाबा जी ने स्वयं डुबकी लगाई और जब बाहर निकले तो सेवादार ने पूछा, "आप जी बताओ, कितनी बार जपा?" लेकिन बाबा जी

ने अपने बड़प्पन को छुपाने के लिए बात को टालने का यत्न किया परन्तु उनके ज़्यादा दबाव डालने पर कहने लगे कि गुरु की कृपा से तेरह बार। अब डुबकी तो वही है। किसी को तीन बार पहली पउड़ी जपने का अभ्यास, किसी को सात बार और किसी को तेरह बार। जब आप भी इसी प्रकार अमृत वेला को उठकर अभ्यास करोगे तो कृपा बढ़ती जाएगी।

ये सब अलग-अलग युक्तियां हैं सिमरन की, साधना की, नाम जपने की। आप कहीं कपड़े की दुकान पर जाते हो, कपड़ा लेने, अगर दुकानदार एक ही **Variety** आपके आगे रखता है तो आप कहते हो, और दिखा। अगर वह कहे, और नहीं है, एक ही **Variety** है तो शायद आप छोड़ दोंगे, न-पसन्द करें। लेकिन अगर वह **5-7-10** थान खोले, अन्य **Varieties** दिखाए तो आप कोई भी पसन्द कर लेते हो। अन्य भी महापुरुषों ने अलग-अलग थान खोल कर रखे हैं जोड़ने के लिए कि कहीं तो मन ठहरे, कोई तो पसन्द आए! जिस प्रकार भी रस आए तो जुड़ जाएं। ये सारे ढंग कठिनता और बेरसी को समाप्त करने के लिए महापुरुषों ने निकाले होते हैं। यह ध्यान देने *योग्य दूसरी युक्ति अगर साधना के समय आलस्य तंग करे, मन उकता जाए तो ढंग बदलाये जाए लेकिन साधना न छोड़े। शेष वह प्रेम का भूखा है, जैसे भी मन जुड़े, जपो!*

❖❖❖

# तीसरी युक्ति

**3. साधक बन्दे (व्यक्ति) के लिए तीसरी युक्ति है कि प्रभु की दिशा में गुरु की दिशा में जितने भी कार्य किए जाएं, वे सभी कार्य वैर-विरोध, ईर्ष्या-द्वेष से ऊपर उठकर करे, गुरु की प्रसन्नता लेने के लिए करे।**

कइयों को 80-80 वर्ष बीत जाते हैं तपस्या करते हुए, लेकिन जब तक निरवैरता की दात (ऊंची वस्तु), सरबत्त के भले की दात झोली में न पड़े, कोई सेवा काम नहीं आती, मोहर नहीं लगती, प्राप्ति नहीं होती। जपा हुआ नाम, की गई सेवा कब काम आती है, जब गुरु कृपा के घर में आकर यह दात दे दे—

*"ना को बैरी नही बिगाना*
*सगल संगि हम कउ बनि आई।। १।।"*

(अंग १२६६)

आपके जीवन में कोई सेवा हो, यह दृष्टि अवश्य बनाकर रखना, किया सफल हो जाएगा। अगर चाहते हो किया हुआ सफल बनाना है तो यह भावना बनानी है, "तेरे भाने सरबत्त का भला"। कई शरीर धार्मिक कार्य भी वैर-विरोध, ईर्ष्या-द्वेष में कर बैठते हैं। एक व्यक्ति है। संगत भी करता है। उसने स्वयं ही एक बार अपना एक वचन दास को सुनाया। कहता कि मैंने मन में एक मांग रखी हुई है कि बाबा दीप सिंह जी, मैं सात दिन पांच पाठ हर रोज श्री सुखमनी साहिब के करूंगा, फलाने व्यक्ति के मुंह पर कोढ़ निकलते हुए देखूं। उससे

दुःखी होगा किसी बात के कारण। अब नोट करना, श्री सुखमनी साहिब के पाठ करने—कार्य तो धार्मिक है लेकिन पीछे मनोरथ क्या है-ईर्ष्या।

दिल्ली की बात है। एक बार रकाबगंज गुरुद्वारे हाज़री लगाकर हम बाहर निकले। दूसरे स्थान पर भी जाना था। कार में अभी बैठे ही थे, चलने ही लगे थे, कार का शीशा बन्द था, 58-60 वर्ष की आयु के एक शरीर ने शीशा खटखटाया। दास ने शीशा नीचे करके पूछा, ''कहिए, बुजुर्गो !'' उसके शब्द थे-'क्या बाणी सभी मनोकामनाएं पूर्ण करती है?,' दास ने बैठे-बैठे ही कह दिया, 'करती है भाई!' उसके आगे के शब्द थे कि मैं दो पाठ श्री सुखमनी साहिब के नित्य कर रहा हूँ, एक व्यक्ति के लिए उसे सड़क पर ठोकरें खाता देखूं? क्या वह ठोकरें खायेगा आप ही सारांश ले लीजिए, दो पाठ श्री सुखमनी साहिब जी। कार्य धार्मिक है लेकिन पीछे मनोरथ ईर्ष्या है कि फलाने व्यक्ति को सड़क पर ठोकरें खाता हुआ देखूं। दास ने मन में सोचा कि अगले स्थान पर चाहे 10 मिन्ट लेट हो जाएँ परन्तु कार में से उतरकर विनती की कि दो पाठ सुखमनी साहिब के इसलिए कर रहे हो कि फलाना सड़क पर ठोकरें खाने लगे? कहता ''जी हाँ।'' दास ने कहा, ''वह तो सड़क पर ठोकरें नहीं खाएगा।'' वह फिर कहने लगा, ''आपने तो कहा था कि बाणी सारी मनोकामनाएं पूरी करती है।'' दास ने उत्तर दिया, ''करती है, लेकिन बाणी उन मंत्रों के जैसी नहीं है जो एक का बिगाड़े और दूसरे का संवारे।'' वह कहने लगा कि फिर तो कोई फायदा नहीं। दास ने

कहा, "वह तो सड़क पर ठोकरें नहीं खाएगा, लेकिन अगर तुम दो पाठ सुखमनी साहिब जी के करते जाओगे तो एक दिन ऐसा अवश्य आएगा कि बाणी तुम्हारे भीतर से बुरे बचनों को समाप्त कर देगी। अगर हो सके तो गुरु की प्रसन्नता लेने के लिए बाणी को पढ़ो।"

हम शरीर को तुच्छ सा समझ लेते हैं, सिर्फ रिश्तेदारी तक। किसी की कितनी रिश्तेदारी होगी, कितनों के साथ मेल होगा- किसी का 50 के साथ, किसी का 100 या 200 के साथ। लेकिन उसका संसार बहुत बड़ा है। सृष्टि बहुत बड़ी है। हम अपनी छोटी सी दुनिया में क्यों दीवारें खड़ी कर बैठे हैं? इन सब बातों से ऊपर उठें। हमारे भीतर कदम-कदम पर बैर की भावना है। लेकिन देखिए! गुरु-घर बुरे लोगों के साथ भी नेकी करता है।



प्रिथी चंद कितनी ईर्ष्या करता था गुरु अरजन देव जी के साथ, पर गुरु साहिब कितने निरवैर! उसकी प्रत्येक नीचता को तुच्छ समझ कर अनदेखा कर देते थे। एक बार प्रिथी चंद ने किसी को माया का लालच देकर कहा कि गुरु अरजन देव जी जब गुज़रते हैं तो 100 बंदा उनके साथ होता है, उनका इतना सम्मान मुझसे सहन् नहीं होता। वह जब तुम्हारे घर के नीचे से गुज़रें तो उनके ऊपर कूड़े का थाल उल्टा कर फेंक देना। उसने माया के लालच में ऐसा ही किया। लेकिन गुरु साहिब ने मुड़कर भी नहीं देखा। वे जानते थे कि यह हमारे भाई का ही कार्य है। वह हमेशा बड़े भाई का कार्य जान कर ही सम्मान करते रहे।

एक बार प्रिथी चंद को तेज़ ज्वर हो गया। जब बहुत

ईलाज कराने पर भी न उतरा, तब गुरु अरजन देव जी ने स्वयं अरदास की और प्रिथी चंद का ज्वर उतर गया। इतना ही नहीं, जब गुरु अरजन देव जी के सपुत्र छठे पातशाह गुरु हरगोबिन्द साहिब जी की सगाई निश्चित हो गई तो गुरु अरजन देव जी ने महादेव को बुलाया और सलाह की कि विवाह का पहला पत्र किसको दें। महादेव जी सोचते हैं कि गुरु अरजन देव जी के हृदय की बात पता करते हैं कि वे क्या चाहते हैं। महादेव जी कहने लगे, "जी आप बताइए!" अब देखिए! प्रिथी चंद कितनी ईष्या करता था! लेकिन गुरु साहिब कहते, "मेरा मन करता है कि पहला पत्र सम्मान के साथ प्रिथी चन्द को भेजें।" देखिए! है कहीं ईर्ष्या? हमारे लिए पूरने हैं।



धीरमल्ल ने जब सीहें मसन्द को कहकर गुरु तेग बहादर जी पर गोली चलवाई जो सतिगुरु को छूकर निकल गई थी तब भी सतिगुरु ने यही कहा, "धीरमल्ल! तेरा भला हो!" भीतर कोई बैर की भावना नहीं।

गुरु अंगद देव जी के समय खडूर साहिब में एक (तपा) तपस्वी था। बड़ी साधना थी उसकी। बचपन से ही साधना में लगा हुआ था। घर-बार भी छोड़ दिया। विवाह भी नहीं था करवाया। कोई छोटी बात नहीं। कर तो साधना ही रहा था। कितनी कमाई! लेकिन कहां मात खा गया? गुरु अंगद साहिब जी की प्रसिद्धि देख कर सहन न कर सका, ईर्ष्या करने लग पड़ा।

एक बार गांव में बहुत समय तक वर्षा न हुई तो गांव वालों ने तपे से प्रार्थना की, "आपके पास बहुत सिद्धियां हैं, वर्षा करवा दीजिए।" तपे ने उत्तर दिया,

"आप सब एक गृहस्थी (गुरु अंगद साहिब गृहस्थी थे) को शीश झुकाते हो, एक गृहस्थी के पास जाते हो जो ऊंच-नीच का भेद ही नहीं रखता, सभी को लंगर एक ही पंगत (पंक्ति) में छका देता है, उनके कारण ही वर्षा नहीं हो रही। अगर उनको गांव से बाहर निकालो तो वर्षा होगी।" देखिए! ईर्ष्या! है तो तपस्वी, विवाह भी नहीं करवाया, पोशाक भी वह रखी है, जीवन को इस ओर लगाया है, पहाड़ियों पर इतनी साधनाएं भी कीं, लेकिन यह तीसरा बचन नहीं संभाला। ईर्ष्या-द्वेष से ऊपर नहीं उठ सका। लेकिन देखिए! गुरु साहिब ने हमारे लिए क्या पूरने पाए हैं, क्या शिक्षा दी!

गुरु अमरदास जी जो उस समय सेवक थे जब उन्हें इस घटना का पता चला तो उनसे गुरु अंगद देव जी का अपमान सहन् नहीं हुआ। उन्होंने कहा कि इस तपस्वी को दण्ड मिलना चाहिए। उन्होंने गांव वालों को कहा कि इस तपे को घसीट कर जहां-जहां लेकर जाओगे, वहां-वहां वर्षा होगी। गांव वालों ने तपे को रस्सी डाल कर बांध कर घसीटा और इस प्रकार उसकी मृत्यु हो गई।

जब गुरु अमरदास जी, गुरु अंगद देव जी को लेने के लिए गए तो, गुरु अंगद देव जी ने मुंह फेर लिया और कहा कि आपने बहुत बड़ी भूल की है, आपको अपना दिल बड़ा रखना चाहिए था। बुरे का भी भला करना है। गुरु अमरदास जी ने फिर संपूर्ण आयु इस उपदेश को हृदय में बसाया और आगे अपने सिक्खों, सेवकों को भी ऐसी ही शिक्षा दी।

गुरु अमरदास जी ने जब गोइंदवाल शहर बसाया,

वहां पर शेखों के घर बहुत थे, जो गुरु की शोभा देख कर ईर्ष्या करने लग पड़े। जब सिक्खों ने गुरु-घर के लिए गागरों में पानी लेने जाना तो गुलेलों से बट्टे मार कर गागरें तोड़ देनी। सिक्खों ने जब गुरु साहिब को बताया तो गुरु साहिब ने कहा कि आप मसकों में पानी ले आया करो, लेकिन तुमने झगड़ा नहीं करना। लेकिन शेखों के लड़के शरारती। वे तीर मार कर मसकों को भी फोड़ दिया करें। सिक्ख फिर गुरु साहिब के पास आए लेकिन गुरु साहिब ने यही उपदेश दिया कि आप निरवैर बन कर जीयो। कहा, "अपनी वस्तु बदल लो, तुम शहर जाकर पीतल की गागरें ले आओ।" लेकिन शरारती लड़कों ने पीतल की गागरों को पत्थर मार कर टेढ़ी कर देना। सिक्ख फिर गए सतिगुरु के पास। कहते, "हुक्म करो तथा इनका मुकाबला करें।" परंतु सतिगुरु कहते, "गागर टेढी ही होती है न? पानी तो नहीं बहता? तुमने अगर हमारे पास रहना है तो निरवैर बनकर सेवा करो।"

गुरु अमरदास जी को जब गुरगद्दी की बख़्शिश प्राप्त हुई तो दातू के भीतर कितनी ईर्ष्या थी कि गद्दी मुझको मिलनी चाहिए थी! उसने ईर्ष्यावश होकर एक दिन जब गुरु साहिब समाधिस्थित दीवान में बैठे थे, गुरु साहिब को टांग मार कर तेज़ ठोकर लगाई लेकिन गुरु जी ने ईर्ष्या का उत्तर ईर्ष्या में नहीं दिया। ये हमारे लिए पूरने हैं। उन्होंने दातू जी के चरण पकड़कर दबाने आरम्भ कर दिए और कहा, "बूढ़ों की हड्डियां कठोर होती हैं, आप जी के चरणों को मुझे मारने से चोट लगी होगी। आप गुस्से में क्यों हो? आप मेरे गुरुदेव के सुपुत्र

हो।" और उनके कहने पर शहर छोड़ कर चले भी गए। 80%-85% संसार ईर्ष्या की अग्नि में जल रहा है। गुरु साहिब के नक्शे-कदमों पर चलोगे तो बहुत शान्ति मिलेगी!

एक बार भाई गोंदा नाम का सिक्ख खडूर साहिब गुरु अंगद साहिब के पास आया और कहने लगा, "सतिगुरु! मेरी बहुत ज़मीन है लेकिन न ही उससे धन कमाया जाता है और न ही उस पर खेती होती है, बंजर पड़ी है।"

सतिगुरु कहते, "तूने वो जमीन ली कहां से?" वह कहने लगा, "मैंने अपने रिश्तेदारों, साक-संबंधियों पर मुकद्दमें चलाकर सारी ज़मीन ली है, लेकिन इस ज़मीन में बरकत नहीं पड़ रही।" सतिगुरु कहते, "तू क्या चाहता है?" वह कहता, "जितनी ज़मीन है, आधी आप ले लो ताकि बाकी आधी ज़मीन में बरकत पड़ सके।" गुरु अंगद साहिब जिनकी यह अवस्था थीः-

*'ना को बैरी नही बिगाना...*

(अंग १२९९)

कहते, "जिन-जिन रिश्तेदारों पर तूमने झूठे मुकद्दमें बनाकर चलाए हैं, पहले हमारी यह शर्त है कि उन सभी को जब हमने नगर बसाया तो वहां मकान बनवाकर देंगे, उन सभी को बसाएंगे। अगर तुझे यह मंजूर है तो हम तुम्हारी बात मानेंगे।" देखिए! भीतर क्या भावना थी! वैर- विरोध समाप्त करने की। गुरु-घर जैसा इतिहास कहीं से नहीं मिलेगा। सतिगुरु के पास कोई सिक्ख वैर-विरोध की भावना लेकर आता था तो पहले उसके

भीतर से मैल निकालते थे। फिर आगे चलाते क्योंकि मैल निकाले बगैर बात बनती ही नहीं।

गुरसिक्ख है ही वही जो गुरसिक्खी की सूक्ष्मताओं को समझकर उनको अपने जीवन में ढालता है। बाबा नन्द सिंह जी बचन करते थे कि एक मज़दूर सारा दिन मज़दूरी करे, रात्रि को उसे रुपया मिले, रुपया डाले जेब में, घर वापस आ रहा हो और मार्ग में कोई जेब काट ले, सारे दिन का परिश्रम व्यर्थ हो गया कि नहीं? क्यों? कहते, "तुमने भी सारा दिन मज़दूरी की, सिमरन किया, सेवा की, बाणी पढ़ी लेकिन जब तूने निन्दा में, द्वेष में समय व्यतीत किया, इस द्वेष तथा निन्दा ने तेरी भक्ति की जेब काट ली। फिर खाली का खाली।" संभालना है। संभालने वाला बड़ा है। अवश्य अरदास किया करो कि सतिगुरु! कृपा करो, मेरे भीतर से यह वैर-विरोध, ईर्ष्या-द्वेष जैसी बुरी चीज़ें निकल जाएं। कृपा करो, मेरे भीतर सरबत्त के भले की भावना भर दो।



एक बार हमारे पास दिल्ली का एक प्रेमी आया और 10,000 की सेवा दी भलाई केन्द्र के लिए। हमने कहा, "हम तो आपको जानते नहीं।" वे कहने लगे, "आपने दिल्ली दीवान लगाए थे और वहां अनाउंस किया था कि संगत का जो भी पैसा है, वो विधवा औरतों के लिए प्रयोग में लाया जाता है।" उसने आगे से बात सुनाई, "हमने किसी से लाख रुपया लेना था। हमने संगत में बैठे ही अरदास की कि अगर यह रुपया मिल जाए तो हम भी दसवन्ध भलाई केन्द्र के लिए देंगे।" दास ने पूछा, "फिर वह मिला कैसे?" कहते, "जिससे हमने पैसे लेने

थे, हम उसे शीशगंज गुरुद्वारे ले गए। वह हिन्दू था। हमने देग लेकर अरदास की कि हमारा परिवार 11 पाठ जपुजी साहिब के हर रोज ज़्यादा करेगा। सतिगुरु! इसको इतनी माया दीजिए कि हमारा ऋण उतार दे (देखिए! हम आम लोगों का स्वभाव क्या है? हम कहते हैं कि यह हमारे पैसे नहीं देता, इसे पूरा रगड़ा लगे, इसको उजड़ते हुए देखें!) वे कहते, हमने पाठ आरम्भ किए। गुरु साहिब की ओर से ही विधि बन गई। उनका कोई प्लाट बहुत देर का फंसा पड़ा था। उनका वह प्लाट बिक गया। उसने लाख रुपया पहले हमारा उतारा। यह है सिक्खी ! इस नक्शे पर कदम रखना, 'तेरे भाणे, सरबत्त दा भला!'

एक बार महापुरुष संत गुरकिरपाल सिंह जी, तरनतारन रोड, गांव गिलवाली डेरे से कोई थालियां उठाकर ले गया। सेवादार कहने लगे, "बाहर जो भिखारी बैठे हुए हैं, या जिस पर संदेह है मार-पीट करें, बकाया जाए।" पर महापुरुष कहने लगे कि आओ! श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के चरणों में अरदास करें कि जो आज थालियां उठाकर ले गया है, "वाहिगुरु! इसको इतनी माया दो कि यह अगले वर्ष थालियां चढ़ाने वाला बन जाए।" देखो निरवैरता! यह है महापुरुषों की सोच। आम आदमी की सोच क्या है? उसको, पकड़ो, सज़ा दो। आइए! अपने भीतर झांक कर देखें कि हमारा जीवन कहां खड़ा है? हम कहीं वैर-विरोध में तो नहीं फंसे पड़े?

एक बार एक प्रभु का प्यारा किश्ती में बैठा हुआ था। उस किश्ती में कुछ शरारती लड़के भी थे। उन लड़कों ने मिलकर उस प्रभु के प्यारे का मार्ग में बहुत

अपमान किया। प्रभु से अपने प्यारे का अपमान बर्दाश्त नहीं हुआ। आकाशवाणी हुई कि अगर तुम कहो तो मैं यह किश्ती डुबो दूं ताकि ये लड़के जो तुम्हारा अपमान कर रहे हैं ये डूब जाएं। तुझे मैं बचा लूंगा। लेकिन देखिए! उस प्यारे के भीतर उनके लिए कोई द्वेष की भावना नहीं आई। क्या कहा? "हे परमेश्वर! अगर आपसे मेरा अपमान बर्दाश्त नहीं हो रहा तो इनको मृत्यु न दो! यह कृपा करो कि इनकी बुद्धि बदल दो क्योंकि बुद्धि-सदबुद्धि सिर्फ तुम्हारे हाथ ही तो है। इनको मृत्यु न देना!"

गुरु साहिबों, महापुरुषों, रंगे हुए सिक्खों की निरवैरता की बातें पढ़ने का तभी लाभ है अगर हमारी ज़िंदगी में भी निरवैरता आ जाए।



आज तो ऐसा समय आ गया है कि दूसरों का भला हमने क्या करना है?' जिनको नहीं समझ, दूसरा आगे बढ़े तो हमें ईर्ष्या होने लगती है। अगर कोई हमारे बराबर का या हमसे छोटा आगे बढ़ जाए तो हमें ईर्ष्या होने लग पड़ती है। कोई भी कला हो, कीर्तन की कला, हरमोनियम की कला इनमें साथ बख़्शिश भी काम करती है। कला में कोई दूसरी कक्षा में है और कोई चौथी कक्षा में तथा कोई आठवीं कक्षा में। कीर्तन की ही बात ले लीजिए। अगर कोई चौथी कक्षा का (प्रभु के घर की कक्षाएं) कीर्तन कर रहा है, संगत श्रवण कर रही है तो इसका शुक्र नहीं कि चलो, इतनी कृपा हो गई है। दूसरे को देख कर भीतर ईर्ष्या आनी आरम्भ हो जाती है कि यह मेरे से आगे क्यों निकल गया है, यह शब्द में प्रमाण भी लगाता है, यह

व्याख्या भी करता है, मैं पीछे क्यों रह गया? अरदास किया करो, सतिगुरु! इसमें भी वृद्धि करो और इसके कारण मुझ पर भी कृपा करो। देखना! कितनी खुशियाँ झोली में पड़ती हैं!

अमृतसर में एक बार रैण-सबाई कीर्तन दरबार का प्रोग्राम रखा। भाई अमनदीप सिंह जी हर वर्ष गुरु साहिब जी की कृपा से रैन-सबाई कीर्तन दरबार करवाते हैं। तिथि दो-चार माह पहले Set हो जाती तथा, इश्तिहार लगते हैं दस दिन पहले। जब इश्तिहार लगे तथा 2 दिन बाद एक और कीर्तन दरबार के इश्तिहार लग गए, जहां रैण-सबाई रखी हुई थी, वहां से केवल 3-4 मिन्ट का मार्ग। अगर हो अन्जान तो अरदास निकलती है, उधर पंडाल खाली रहे, हमारा भरा हो! जब शहीदां साहिब दास दर्शन करने गया तो सोचा, क्या अरदास करे? देग ली, जपुजी साहिब का पाठ किया और अरदास की, सतिगुरु! कृपा करना! हम भी आपके हैं और वे भी आपके। कार्य भी दोनों धार्मिक हैं। इस प्रकार की विधि बनाना, आपके सभी प्यारे खुराक लेने के लिए पहुंचें! इतनी संगत भेजना गरीब निवाज! कि इधर भी पंडाल में स्थान न मिले, उधर भी पंडाल में स्थान न मिले! दोनों पंडाल भरे हों! तेरे भाणे? सरबत्त दा भला!

जालंधर में एक उपक्षेत्र है। वहां की एक सोसाइटी ने कीर्तन दरबार रखा था। उसी उपक्षेत्र में एक और सोसाइटी थी। वहां के मुखिया ने किसी को पूछा कि कौन सा कार्य करूं कि इनके कीर्तन दरबार की रौनक कम हो जाए। उन्होंने यहां तक किया कि उससे एक दिन

पहले हज़ूर साहिब को जाने वाली रेलगाड़ी का एक डिब्बा बुक करवाकर यात्रा का प्रबंध कर दिया। यह भी कह दिया कि माया भी नहीं लगेगी और इश्तिहार छपवा दिए कि सिर्फ उसी इलाके की संगत जा सकती है। किराया भी नहीं लगेगा। और किसी इलाके की संगत भी नहीं जा सकती। निश्चित भी उस दिन का किया जब प्रोग्राम उससे एक दिन पहले। यह सब क्या है? कार्य तो धार्मिक है लेकिन है ईर्ष्या और द्वेष। जहां समझ न हो, कहीं कोई धार्मिक सोसाइटी कीर्तन दरबार बड़ा करा ले, पूछो कुछ न, जो कुछ अंदर आ जाता है!

दिल्ली से 4-5 व्यक्ति आए हमारे पास। कहते, ''प्रोग्राम लेना है।'' हमने डायरी दिखा दी कि कोई तिथि खाली नहीं। उनमें से एक शरीर कहने लगा, ''हमारे सम्मान का प्रश्न है, हमने प्रोग्राम अवश्य लेकर जाना है।'' दास ने पूछा कि करवाना तो कीर्तन दरबार है, इसमें सम्मान का प्रश्न कैसे? वे कहते, ''हमारे ही उपक्षेत्र में एक अन्य सोसाइटी है, उन्होंने एक सप्ताह पहले कीर्तन दरबार करवाया था। हम उनसे कह कर आए हैं कि हम आप से अधिक संगत एकत्रित करके दिखाएंगे।'' देखिए! करवाना तो कीर्तन दरबार है लेकिन लक्ष्य दूसरों को जलाना है, प्रचार नहीं। अधिक इकट्ठ करना अच्छी बात है लेकिन दूसरे को जलाने के लिए, यह सिक्खी नहीं।

एक बार एक कीर्तन दरबार की समाप्ति के पश्चात बाहर सात-आठ शरीर एकत्रित होकर हमारे पास आ गए। कहते, हमारे भी गुरुद्वारे हाज़री लगाओ। उनमें से

ही एक बोला संकेत करके, कि ये गुरुद्वारे के मुखिया हैं। दास ने पूछा, "पहले तो उस गुरुद्वारे मुखिया कोई अन्य थे।" अब जो मुखिया बने थे, आयु तो होगी कोई 60-65 वर्ष, लेकिन सिक्खी की कच्ची क्लास भी नहीं था चढ़ा। उसके शब्द थे, "पहले को भगा दिया है, आप हमें समय दीजिए, हमने उसे मज़ा चखाना है ज़रा।" कार्य तो धार्मिक है पर भीतर क्या है—ईर्ष्या। सिक्खी क्या है— अगर कीर्तन दरबार करवाने लगा है तो पहला कार्ड (न्यौता) नंगे पांव प्रधान के घर जाकर देकर आए।

बहुत सी दुनिया इन छोटी-छोटी बातों में ही फंसी पड़ी है कि मुझे सम्मान नहीं मिला, मेरा अपमान हुआ है, मैं इन्तकाम कैसे लूं? यह भी एक अवस्था है। जिस पर गुरु की कृपा हो, उसे प्राप्ति होती है कि कहीं मान-सम्मान न भी मिले उसे सहन करना।

एक बार हमारा एक कीर्तनी जत्था लुधियाना को प्रोग्राम करने गया। जिन्होंने समागम का आयोजन किया था, उनका कोई सदस्य बाहर 'साज़' (संगीत बजाने वाले यंत्र) लेने के लिए भी नहीं आया कि सफर करके आए हो, स्थान ग्रहण करने से पहले कुछ छक लीजिए। वे आप ही साज़ उठाकर भीतर चले गए। भीतर कीर्तन हो रहा था। स्टेज लगी थी। कीर्तन दरबार था। जाकर बैठ गए। अब बैठे भी 15 मिन्ट हो गए, किसी प्रबंधक ने नहीं पूछा, "कहां से आए हो, कौन हो, कैसे हो?" इन्होंने 15 मिन्ट पश्चात् अपना एक लड़का भेजा कि स्टेज सैक्रेटरी को कहो कि अमृतसर से एक जत्था आया है, आपने बुक किया था, कितने बजे का समय है, क्या

प्रोग्राम है? उस लड़के ने अभी इतना ही कहा था, स्टेज सैक्रेटरी को कि अमृतसर से जत्था आया हुआ है। वे कहते, "बैठ जाओ, बैठ जाओ, पता है हमें कि आया है जत्था। 10 मिन्ट बाद आपको भी लगा देंगे, आधे घण्टे के लिए।" कोई तीन घण्टे का सफर करके आया हो और शब्दों के साथ ही पूछ लिया जाए कि जल-पानी छकोगे, तो थकावट उतर जाती है। लेकिन उन्होंने कोई सम्मान न किया, उल्टा अपमान के शब्द बोले। पहले समय कहा गया था डेढ घण्टा लेकिन अनाउंस करने के वक्त आधा घण्टा किया। उन्होंने बैठते हुए सोचा कि चलो आधा घण्टा कहा है, इतनी दूर से आए हैं, अगर 10-15 मिन्ट ऊपर हो भी जाएंगे तो कोई बात नहीं। परंतु उन्होंने बताया कि एक अभी 25 मिन्ट ही हुए थे कि स्टेज सैक्रेटरी माईक लेकर खड़ा हो गया ताकि पता लग जाए कि समय हो गया है। इतना अपमान! जब समाप्ति के बाद वापसी के लिए गाड़ी में बैठे तो उनका एक साथी कहने लगा कि आपने भी स्टेज पर उनका अपमान करना था, स्टेज पर ज़रा बोलना था कि करवा तो कीर्तन दरबार रहे हैं और हाल यह है, बुलाकर इतना अपमान किया है! लेकिन जो Main बीच वाला था, उसने बहुत ही सुंदर उत्तर दिया। कहने लगा कि कई स्थानों पर गुरु भी चैक करता है कि कहीं अगर सम्मान न भी मिले तो भी क्या है कुछ शक्ति भीतर सहन करने की।

शिव जी के ससुर थे 'दक्ष-प्रजापति'। काफी मान-सम्मान था उनका। एक बार एक सभा में गए। सब देवताओं ने और अन्य सभी ने खड़े होकर सम्मान

किया, लेकिन शिवजी बैठे रहे, यह चैक करने के लिए कि कहां तक पहुंचे हैं? अगर कहीं सम्मान न मिले तो भीतर है कोई बात सहन करने वाली या नहीं? शिवजी समय के अवतार थे। होगी कोई लीला उनकी! शिवजी के ससुर बहुत क्रोधित हो गए। लेकिन खैर, उस समय तो सहन कर लिया, परन्तु बात अपने भीतर रखी।

दक्ष-प्रजापति ने महीने दो महीने बाद यज्ञ का आयोजन किया (उस समय यज्ञ होते थे, हमारे लिए नाम ही सबसे बड़ा यज्ञ है, कलियुग में नाम ही सब कुछ है) उन्होंने यज्ञ रखा और यज्ञ में हरेक देवता के लिए आसन का प्रबन्ध किया, लेकिन शिवजी का आसन न रखा। सबको बुलाया और साथ में ही शिवजी को भी बुलाया। जब शिवजी आए तो वे खड़े रहे क्योंकि उनके लिए आसन का प्रबन्ध नहीं किया गया था। यह क्या है? शिवजी के ससुर करवा तो यज्ञ रहे हैं, करवा तो धार्मिक कार्य रहे हैं परन्तु पीछे लक्ष्य क्या है? ईर्ष्या। शिवजी का आसन न रखना, उनका अपमान करना है, क्योंकि इन्होंने मेरा सम्मान नहीं था किया। यज्ञ का लक्ष्य, ईर्ष्या! हमने अपने लिए दिशा लेनी है कि हमारे धार्मिक कार्यों का लक्ष्य अगर यह चीज़ होगी तो हम आगे नहीं बढ़ सकेंगे। कुछ बर्तन भरेंगे, कुछ बहा देंगे।



लुधियाना में एक 13 घण्टों का समागम हुआ था। हमें कुदरती जत्थे की सेवा मिली थी, हम गए थे वहां। तीन घण्टे जब प्रोग्राम स्पीकर के माध्यम से सुना, तथा जो सज्जन बैठा था लगभग पौना घण्टा, उसने गुरु की बात तो कोई न सुनाई बल्कि एक सांप्रदाय को लेकर जी

भर कर उसकी निन्दा की। उसके पश्चात् दूसरा बैठा। उसने भी एक टकसाल की ३५-४० मिन्ट बहुत निन्दा की। है तो सत्संग ही था, लेकिन लक्ष्य ही संतों, महापुरुषों, सांप्रदायों, टकसालों की निन्दा। लक्ष्य ईर्ष्या। सुनने वाला क्या उपदेश, क्या शिक्षा लेकर जाएगा ऐसे सत्संग से, जिस सत्संग का लक्ष्य गुरु का बड्डपन नहीं, कोई गुरु की बात नहीं बल्कि लक्ष्य है ईर्ष्या, निन्दा, द्वेष? कहां तो सत्संग इसलिए करना है ताकि वैर-विरोध को नष्ट करके निर्मल हो जाए, और कहां ये सब बातें और जन्म होती जाएं!

कीर्तन दरबार तो बहुत होते हैं। कहीं तो ऐसे ही बैठ जाते हैं परंतु कहीं पर ऐसे भी होते हैं जिन्होंने मन को शोधा हुआ होता है। वे बताते हैं इस मार्ग पर चलने का ढंग क्योंकि आप स्वयं इस मार्ग पर चले हैं। ऐसे शोधे हुओं के वचन सुनने वालों पर भी प्रभाव डालते हैं। वे हमारी कमज़ोरियों, हमारी भूलों को बताते हैं। बताते हैं कि इस मार्ग में कौन-कौन सी कठिनाइयां हैं।



बाबा ईशर सिंह जी (नानकसर कलेरां वालों) ने अमृतसर चाटीविंड नहर अमृतसर पर आना तो ऐसा लगता था कि समस्त शहर वहां उमड़ आया हो क्योंकि उनकी अपनी प्राप्तियां थीं, उन्हें माया से कोई मतलब नहीं था, उन्होंने मन को एकाग्र किया हुआ था।

गुरु-घर के जितने भी इतिहास पढ़ लीजिए गुरु साहिब ने उन्हें ही गले से लगाया है, उनके लिए ही दशम् द्वार खोले हैं, दातें बांटने वाले बनाया, जिनके धार्मिक कार्यों में दुबिधा और ईर्ष्या नहीं थी। श्री हरिमन्दिर

साहिब की सेवा जब संपूर्ण हुई, गुरु अरजन देव जी ने लंगर में सबको बुलाया। सिक्खों ने पूछा कि आज का मुख्य मेहमान कौन है? गुरु साहिब कहने लगे, "पहला थाल जिसके आगे रखा जाएगा, वही हमारा आज का मुख्य मेहमान होगा।" पहला थाल आप गुरु साहिब ने किसके आगे रखा? भाई बन्नों जी के आगे! सभी कहने लगे, "सतिगुरु जी! सेवा तो अभी भी कइयों की पड़ी हुई है, लेकिन इनको आपने आज बहुत मान दिया है।" गुरु साहिब कहने लगे, "सबसे बड़ी बात तो यह है कि जितना समय भी श्री हरिमन्दिर साहिब जी की सेवा चली, भाई बन्नो जी ने अपनी सेवा के अन्तर्गत किसी से ईर्ष्या नहीं की, किसी के साथ द्वेष नहीं रखा।

भाई शाल्हो जी को कई वर प्राप्त हुए गुरु साहिब की ओर से। सिर्फ इसलिए क्योंकि उनके भीतर द्वेष नहीं था। छठे पातशाह ने स्वयं अपने मुख से कहा भाई जोधका सचिआर को कि कुछ मांग लो। निरवैरता थी, भाई जोधका सचिआर की सेवा में। आपके भी पांच बच्चे हों, चार हों, तीन हों, कई बार आप भी किसी की अच्छी आदतें देख कर कह देते हो, "बताओ, तुमको क्या चाहिए?" गुरु के सिक्ख गुरु के पुत्र ही हैं। उसका हृदय निर्मल देख कर आप गुरु साहिब ने प्रसन्न होकर उसको कहा, "कुछ मांग लो।" उसने मांगा क्या? कि जहां तक मेरा वश चले, गुरु नानक के घर का वास न निकले! किसी ने पूछ लिया कि किसी अन्य को तो नहीं पूछा इस तरह, यह इसको आप पूछ रहे हो? सतिगुरु कहने लगे, "इससे प्रसन्न हो गए हैं। यह जितनी भी सेवा करता है

किसी के साथ ईर्ष्या नहीं करता। इसके धर्म के सारे कार्य गुरु की प्रसन्नता लेने के लिए हैं। किसी को नीचा दिखाकर, अपने आप को ऊंचा दिखाने के लिए नहीं।"

एक बार युद्ध के दौरान गुरु गोबिन्द सिंह जी के पास शिकायत आई कि भाई घनईया जी युद्ध के मैदान में घायल मुसलमानों और दुश्मनों को भी पानी पिलाते है। गुरु साहिब हंस पड़े। भाई घनईया जी को जब बुलाकर पूछा गया तो उन्होंने उत्तर दिया, "सच्चे पातशाह! मैं तो केवल आप जी को ही पानी पिलाता हूं। मुझे तो कोई शत्रु नज़र ही नहीं आता।" गुरु जी उसकी इस निरवैर दृष्टि को देख कर प्रसन्न हो गए, गले से लगा लिया और मलहम देकर कहा, आगे से मलहम पट्टी भी किया करो। वही गुरु का घर और वही सिक्ख इतिहास। जिनके भीतर वैर-विरोध, ईर्ष्या-द्वेष था, गुरु-घर की सेवा करने के पश्चात् भी कुछ प्राप्त न कर सके।

गुरु गोबिन्द सिंह जी के समय एक बाज, कौए का मांस नोच-नोच कर खा रहा था और गुरु साहिब हंस रहे थे। संगत के मन में तर्क आ गई कि गुरु नानक का घर तो दया वाला है और गुरु साहिब एक कौए को तड़पता हुआ देख कर हंस रहे हैं। गुरु साहिब भीतर की बातें जानने वाले, घट-घट की जानने वाले। पूछ लिया, "तर्क आ गई है?" सतिगुरु कहने लगे, "आज की बात बताना तो नहीं चाहते, लेकिन आपकी तर्क को देख कर बता रहे हैं।" कहने लगे, "यह कौआ पिछले जन्म का गुरु नानक के घर का लांगरी (खाना बनाने वाला) था।" सारे आश्चर्य-चकित हो गए कि गुरु के लंगर की सेवा करके

कौए का जन्म और फिर इतना कष्ट भी? गुरु साहिब ने बताया कि लागरी ने गुरु के घर की सेवा तो की, लेकिन कोई इसका मित्र या रिश्तेदार होता तो उसके साथ मीठा बोलता, लेकिन अन्य संगत के साथ कटु भाषा में बात करता था, बड़े क्रोध के साथ बोलता था। आज यह एक-एक बोले कड़वे बचन का निरंकार बाज की चोंच के साथ लेखा बराबर कर रहा है।

उदाहरणें तो और भी हैं। कलगीधर महाराज के दरबार में एक रीछ नाच रहा था। सारी संगत उसके तमाशे देख कर हँस रही थी। गुरु साहिब, भाई कीरतीए को कहने लगे, "सारे चाहे हंसें लेकिन तूम मत हंसना।" वह पूछने लगा, "मैं क्यों न हंसू?" गुरु साहिब कहने लगे, "तू इसलिए न हंस क्योंकि यह रीछ नहीं नाच रहा बल्कि तेरा पिता भाई सोभा राम नाच रहा है।" सेवा की हो, गुरु तेग बहादर जी के समय प्रसाद बांटने की, और अन्य भी कई दिन दर्शन किए हों गुरु तेग बहादर जी के और जन्म मिल जाए रीछ का? फिर गुरु गोबिंद सिंह जी ने बताया कि यह सभी के साथ बहुत कड़वा बोलता था, द्वेष रखता था, भीतर ईर्ष्या थी।

गुरु अंगद साहिब ने तो भाई सोहना जी को लंगर की सेवा से मुक्त कर दिया था। उनको कहा था, 'तू विदाई ले ले' क्योंकि वे लंगर में लड़ते बहुत थे, दूसरों को नीचा दिखाते थे। ईर्ष्या वाले के सामने अगर भगवान भी आ जाए तो भी वह खाली रह जाता है, प्राप्ति नहीं होती।

अजमेर में किसी ने देवता की अराधना की, देवता

जी प्रकट हुए, "प्रसन्न हूं, कुछ मांग ले लेकिन शर्त है, जो तू मांगेगा, वह तेरे भाई के घर दुगुना जाएगा।" वह कहने लगा, "अगर मैं एक पुत्र मांगूंगा तो क्या भाई के घर दो होंगे?" देवता जी कहते कि यह मेरी शर्त है। वह कहता, "अगर मैं एक मकान मांगूंगा तो क्या भाई को दो मकान मिलेंगे?" देवता कहता-अगर तुझे दो की आवश्यकता है तो तू दो मांग ले लेकिन भाई को चार मिलेंगे। वह कहने लगा, "भाई को मुझसे अधिक मिले, यह मैं बर्दाश्त नहीं कर सकता।" सोच में पड़ गया, "क्या करूं?" देवता ने कहा, "समय कम है, मांगना है तो मांग लो, नहीं तो मैं जा रहा हूं।" वह कहने लगा, "अच्छा फिर देवता! ऐसा कर, मैंने काफी सोच कर निर्णय किया है, मेरी एक आँख को अन्धा कर दे ताकि भाई की दोनों आँखें अन्धी हो जाएं।" देख लीजिए! ईर्ष्यावश कुछ प्राप्ति की जगह अपना भी नुकसान करवा लिया। अगर चाहते हो, जपा हुआ नाम संभाला जाए तो नाम जपने के साथ-साथ अपनी आदतों को भी सुधारना है। कभी जीवन में किसी का बुरा न सोचो। चाहे बहनों-भाइयों, पड़ोसियों, रिश्तेदारों से आपको कोई हानि हो जाए, फिर भी प्रयास करना कि आपके हाथों से किसी का बुरा न हो।

गुरु नानक देव जी एक बार करतारपुर में से गुज़र रहे थे, देखा कि एक 20-22 वर्ष का नवयुवक अपने घर से गेहूं का बर्तन भरता है और पास ही एक घर, जहां ढेरी लगी हुई है गेहूं की, वहां फेंक आता है। यह देख कर गुरु नानक देव जी रुक गए और पूछा, "पुरखा! यह

क्या कर रहा है?'' वह कहता, ''यह मेरे बड़े भाई का घर है। जब हमारे परिवार में ज़मीनों की बांट हुई थी, बड़े भाई के हिस्से में ज़मीन कम आई थी। अगर उसको मदद के लिए कहता हूं तो वह मानता नहीं। आज वह बाहर गया है तो मुझे अवसर मिला है भला करने का।''

अगले दिन गुरु नानक साहिब फिर उधर से गुज़रे और देखा, आज बड़ा भाई बर्तन भर-भर कर छोटे के ढेर पर डाल रहा है। जब उससे गुरु साहिब ने पूछा तो उसने उत्तर दिया, ''यह मेरे छोटे भाई का घर है। आज वह बाहर गया है तो सोचा, उसकी कुछ सहायता करूँ क्योंकि उस तरह वह सहायता के लिए मानता नहीं।'' गुरु नानक साहिब कहने लगे, ''हमने तो सुना है, तुम्हारे हिस्से ज़मीन कम आई है, तू फिर भी उसकी सहायता क्यों कर रहा है?'' वह कहने लगा, ''आपने ठीक सुना है। मेरे हिस्से ज़मीन कम आई है लेकिन जो भी आया-गया है वह सब छोटे के घर ठहरता है, उसका खर्चा भी अधिक है। मैं इसलिए गेहूं उसकी तरफ डाल रहा हूं।'' गुरु नानक साहिब जी प्यार में कहने लगे, ''250-300 वर्ष की आयु के सिद्ध भी वहां नहीं पहुंचे, जहां तुम दोनों भाई पहुंच गए हो।'' तेरे भाणे? सरबत्त का भला।

देख लीजिए! जहां पर नहीं सोझी (समझ), ईर्ष्या-द्वेष हैं, वहां भाई का परनाला भी एक ईंच ऊपर हो जाए तो ताड़-फाड़ हो जाती है। अगर किसी के लिए प्रेम रखोगे, दूसरी ओर से भी प्रेम आ जाएगा। थोड़ा सा अपना आप कुर्बान कर देखिए, दूसरी ओर से भी बुराई

निकल जाती है।

एक बार एक महिला महापुरुषों के पास आई और कहती, "मेरा पति मुझे बहुत मारता है, यहां तक कि मुझे संगत में भी नहीं जाने देता।" महापुरुष कहते, "तू नित्य अपने पति की दो घण्टे टांगें दबाया कर।" बीबी बहुत आश्चर्यचकित हुई। जब महापुरुषों के कहे अनुसार ऐसा किया तो उसके व्यक्ति के भीतर से पत्नी के प्रति सारी मैल निकल गई और वह स्वयं भी संगत का प्रेमी बन गया।

गुरु साहिबों की, महापुरुषों की, गुरु के लाडले सिक्खों की बातें पढ़ने का तभी लाभ है, अगर हमारी ज़िंदगी में भी निरवैरता आ जाए, हमारे भीतर से भी ईर्ष्या निकल जाए। है तो बहुत कठिन चलना, लेकिन यत्न अवश्य करो। हमारे गुरु साहिब तो निरवैरता की प्रतिमा हुए हैं। अगर वे 100 पैसे हैं तो हम 10 पैसे ही चल पड़ें तो भी शुक्र है। अगर 10 पैसे चलेंगे तो 10 पैसे मार्ग समाप्त हो जाएगा। कोई अमृतसर से चले ही न कि हेमकुण्ट साहिब बहुत दूर है तो फिर वहां पहुंचेगा कैसे? अगर कोई चल पड़े तो कहता है, इतना सफर चल आए हैं। मंज़िल पास आनी आरम्भ हो जाती है।

महात्मा बुद्ध, जब किसी भिक्षुक की अवस्था बन जाए तो उसको चार महीनों के लिए शमशान में भेजते थे ताकि उसके भीतर इतना ज्ञान हो जाए कि कुछ भी स्थिर नहीं है, सब बिनस जाना है। इस ज्ञान से ईर्ष्या-द्वेष निकल जाएं क्योंकि जिसको पता चल जाए कि मैं स्थिर नहीं हूं, वह कभी किसी से ईर्ष्या नहीं करेगा, कभी

किसी से द्वेष नहीं रखेगा, कभी किसी को नीचा दिखाने का यत्न नहीं करेगा, सरबत्त के भले में जीवनयापन करेगा। इतनी शान्ति, सहज है निरवैरता में कि अगर आप भीतर से निरवैर हो जाओगे तो हर समय आपके भीतर प्रसन्नता एवं बिगास रहेगा।

*यह साधक शरीर के लिए तीसरी युक्ति है कि धार्मिक कार्य गुरु की ओर, प्रभु की ओर के सारे कार्य वैर-विरोध, ईर्ष्या-द्वेष से ऊपर उठकर करे, गुरु की प्रसन्नता लेने के लिए। गुरु की प्रसन्नता लेने के लिए पढ़ते तो हर रोज़ हैं, भीतर बस जाए, नानक नाम चढ़दी कला, तेरे भाणे? सरबत्त दा भला!*



❖❖❖

# चौथी युक्ति

**4. साधक बन्दे (व्यक्ति) के लिए चौथी युक्ति है कि साधक बन्दा अपनी साधना या किसी तरह की भी प्राप्ति को स्थान-स्थान पर न बताए।**

हम बाणी भी पढ़ते हैं, सेवा-सिमरन भी करते हैं लेकिन नासमझी के कारण, दामन में युक्ति न होने के कारण, हमारे मन में यह इच्छा होती है कि हम जो नाम जप रहे हैं, सेवा कर रहे हैं, दान-पुण्य या कोई भी भलाई का कार्य कर रहे हैं, इसको लोग देखें और हमारी प्रशंसा करें। हमारे मित्र-सज्जन, रिश्तेदार यह कहें कि यह नित्य गुरुद्वारे जाता है, यह बहुत बन्दगी करता है, यह बहुत बड़ा भक्त है, यह बड़ा दानी है। हम स्थान-स्थान पर अपनी बन्दगी, सेवा, भक्ति, बड़प्पन, भले कार्यों के बारे में लोगों को बताकर अपना प्रभाव डालना चाहते हैं ताकि लोग हमारी वाह-वाह करें।

'वाह-वाह' इस मार्ग की सबसे बड़ी खाई है। जिसमें कोई गुण है, कोई बाणी पढ़ता है, कोई सिमरन करता है, कइयों के जीवन में हस्त-सेवा बहुत होती है, कई जीवन में दान-पुण्य, दया के कार्य बहुत करते हैं। लेकिन अगर मंज़िल पर पहुंचना चाहते हो तो कभी भी दिखावा करने का प्रयत्न न करना। अपने आप प्रकट हो तो कोई बात नहीं लेकिन जब आप स्वयं प्रकट करेंगे तो कमाई उल्ट कर बह जाएगी।

सिक्ख का कर्तव्य है कि बन्दगी करे, वाहिगुरु के साथ जुड़े, लेकिन गुप्त रहे। वाहिगुरु तो स्वयं अपने प्यारों की प्रशंसा करवाते हैं, स्वयं प्रकट करते हैं। हरि का प्यारा छुपा नहीं रह सकता। जिस प्रकार कमरे में कोई लहसुन कटता हो तथा बाहर से कोई आए तो उसे बताने की आवश्यकता नहीं होती कि भीतर लहसुन काटा जा रहा है। लहसुन अपनी सुगंध आप ही बाहर बता देता है। इस प्रकार भक्ति भी छुपी नहीं रह सकती। सिक्ख का कर्तव्य यही है कि वह गुप्त होकर बरते। जब हम अपने जप-तप या जप-तप की सहायता से हुई प्राप्तियों को अभिमान-वश होकर प्रकट करने का प्रयास करते हैं तो ब्रेक लग जाती है, हम आगे नहीं बढ़ सकते, मंज़िल पर नहीं पहुंच पाते। हज़ारों का खेल कई बार समाप्त हो जाता है। अध्यात्मिकता की शिक्षा सांसारिक शिक्षा की तरह नहीं है कि द्वितीय कक्षा के बाद तृतीय और तृतीय के बाद चौथी कक्षा ही आएगी। यहां तो हर पग सोच कर, भय में उठाना है क्योंकि डबल एम.ए. वाला भी कच्ची में भी गिर सकता है।



कुछ समय पहले की बात है। एक बीबी (औरत) दास को कहती, नाम की दात (देन) दीजिए। दास ने कहा, "गुरु साहिब तो स्वयं 1430 अंग में आवाज़ लगाकर कहते हैं, नाम जपो, सिमरन करो और तू कहती है, नाम की दात (देन) दीजिए।" उसकी आँखों में आँसू आ गए। कहने लगी, "मैं ऊपर से नीचे गिर गई हूं, मेरा बड़ा मन जुड़ता था, अमृत वेला (समय) भी बना हुआ था लेकिन नीचे गिर गई हूं।" भाव लाखों हज़ारों आत्माओं

का बना हुआ सिमरन ना-समझी के कारण नीचे गिर पड़ता है, मिली हुई दातें छीन ली जाती हैं।

मंहगा सौदा है। कमाई (अच्छे कार्य) करके संभालना भी युक्ति का कार्य है। आम व्यक्ति कमाई (अच्छे कार्य) करता भी है और नासमझी होने के कारण साथ-साथ उसे बहा भी देता है और मंज़िल दूर होती चली जाती है। अगर भक्ति के मार्ग पर चलने का शौक़ है तो चौथी युक्ति का ध्यान रखने की बहुत आवश्यकता है। कई बार हम तुच्छ सी प्राप्ति को भी स्थान-स्थान पर बताना आरम्भ कर देते हैं। फिर ऐसी ब्रेक (रोक) लगती है कि कई-कई वर्ष बाद वह ब्रेक खुलती नहीं। यह भी उसकी रज़ा (इच्छा) है। दास अपने जीवन की भी बात विस्तार से तो नहीं बता सकता लेकिन जब नहीं थी समझ, बहुत वर्ष पहले, ये नासमझियां, हमसे भी हुई हैं। वह चीज़ आज तक वापस नहीं आई क्योंकि नहीं थी समझ।



हम अमृत वेला को उठना आरम्भ कर दें, अखण्ड पाठ करा लें, घर सहज पाठों के भोग डाल लें, जब तक दस व्यक्तियों को बता न दें, तब तक तृप्ति नहीं होती। 10-20 व्यक्तियों को शेखी पधार कर कहेंगे कि मैं फलाना कार्य करता हूं। महापुरुषों का कथन है कि इतनी सी भी बात तेरी कमाई (किए गए पुण्य) को बहा देती है, तेरे अंक कम कर देती है, तेरे पुण्यों को जला देती है। आप में से कोई जागता हो दो बजे, तीन बजे, अमृत वेला को और अपनी बात को प्रकट करने के लिए कहे, मैं तो इतने बजे उठता हूं। अगर अगले दिन ही उठ जाओगे तो कहना! अगले दिन ही वह बात नहीं रहती।

एक बार दिल्ली रकाबगंज गुरुद्वारे हम कीर्तन करके बाहर निकले कि एक गुरमुख प्यारा हमारे साथ ही चला जाये। चलते-चलते ही साथ-साथ कहने लगा, "मैं दिल्ली में मॉडल टाऊन रहता हूं, वहां के गुरुद्वारे में नित्य तीन बजे प्रकाश करने की Duty मेरी है, मैं करता हूं प्रकाश।" हम सुनते गए। फिर कहता, "प्रकाश करने के पश्चात् मैं तेरह मालाएं बड़े वाली पहली पउड़ी कीं, गुरुद्वारे में ही करता हूं, फिर घर जाकर मैं कुछ विश्राम करके फिर दो घण्टे 'वाहिगुरु' का सिमरन करता हूं।" दोबारा फिर यही बात शुरू से दोहराने लग पड़ा। तब दास से सहन नहीं हुआ। दास ने कहा, "कल प्रकाश करना है कि नहीं? कल माला फेरनी है कि नहीं?" दास ने कहा, "यह बचन चाहे तुझे कड़वा लगे लेकिन तेरे भले के लिए है। अगर चाहता है कि यह कार्य निरन्तर जारी रहे, अपने नेम को प्रकट न कर! यह न हो कि तेरा प्रकट करना कल तेरे लिए ब्रेक (रोक) लगवा दे।"

एक स्थान पर किसी के घर में पाठों की लड़ियां (श्रंखलाएं) चल रही थीं। तेरहवें दिन की लड़ी थी। बारहवें दिन की बात है। हम खड़े थे। साथ दो-चार गुरमुख प्यारे और भी खड़े थे। नौ-दस पग पीछे 3-4 औरतें खड़ी आपस में बातें कर रही थीं। एक दूसरी को कहती, "क्या तेरा कोई नागा (अवकाश) पड़ा है लड़ियों के पाठों की 'रौल' देने का?" वह कहती, "मेरे दो नागे पड़े हैं।" पहली कहती, "देखा! मेरा एक भी नागा नहीं पड़ा।" जब दास ने उस औरत की इतनी बात सुनी तो दास ने अपने पास खड़े गुरमुखों को कहा, "यह बीबी

कल नहीं आ सकेगी, चाहे वाहिगुरु कोई परचा डाले, कोई किसी तरह की बाधा डाले, क्योंकि इसने दम (अहंकार) में आकर अपनी चीज़ को प्रकट करने का प्रयास किया है। कई बार हम अपनी बात को घुमाकर अपनी चीज़ को प्रकट करने का प्रयास करते हैं। अपने आप प्रकट हो तो कोई दोष नहीं लेकिन जब स्वयं प्रकट करें तो कमाई (किए गए पुण्य) बह जाएगी।

एक गुरमुख प्यारे के हम सुबह आठ बजे घर गए तथा वह सोया पड़ा था। हमें देख कर कहने लगा, "अगर कोई दो बजे रात्रि उठे और नेम करके फिर सो जाए, लोगों ने तो यही सोचना है न कि यह इतनी देर तक सोया पड़ा है।" यह क्या है? वह दर्शाना चाहता था अपनी चीज़ को कि मैं दो बजे उठता हूं।



एक और सज्जन दास को कहता, "मैं रात्रि में 10 से 12 बहियां लिखता हूं, कोई बात तो नहीं?" दास बहुत आश्चर्यचकित कि रात्रि 10 से 12 बहियां, यह क्यों ? उसके साथ ही शब्द थे। कहता, "मैं साथ ही 12 बजे स्नान कर लेता हूं। फिर मैं 4 बजे तक जप-तप करता हूं।" अब यह सब क्या था? बात को घुमाकर अपना नेम बताना चाहता था। दास की जेब में गुटका था। दास ने कहा, "हाथ तो नहीं रखाता गुटके पर लेकिन गुटके की ओर देख कर ही सच्चाई बता दे कि जो बात आज दास से पूछी है, किसी और से भी पूछी है?" अब बाणी का भय था। कहने लगा, "12-13 को पूछ बैठा हूं।" यह क्या था? बात को किसी भी ढंग से छेड़ना और बताना कि 12 से चार बजे मैं रात्रि में नेम करता हूं। इस प्रकार

बंदा जब स्थान-स्थान पर अपने नेम को, बात को घुमा-फिरा कर या शौक से बताता है तो अगले दिन ही वह नेम नहीं रहता या कुछ दिनों में ही वह चीज़ समाप्त हो जाता है।

बात उन दिनों की है जब प्रातः आसा की वार के प्रोग्राम होते थे। इसी प्रकार ही एक गुरमुख प्यारा, जिसका आसा की वार पर पहुंचने का नेम था, एक दिन दास को कहने लगा, "मैं आजकल आसा की वार पर नहीं आता। मैं रात्रि 12 बजे तक अपनी दुकान पर लिखत-पढ़त के कार्य करता हूं तथा 12 बजे स्नान करके सिमरन, बंदगी करता हूं, फिर सुबह सो जाता हूं इस कारण सुबह आसा की वार के प्रोग्राम पर नहीं पहुंच पाता।" दास ने उसको कहा, "अगर मैं तुझसे पूछता कि तू सुबह आसा की वार के प्रोग्राम पर नहीं आता और तू उत्तर देता तो और बात थी लेकिन मैंने तुमसे पूछा ही नहीं, तू अपने आप बता रहा है कि मैं रात्रि 12 बजे स्नान करके सिमरन करता हूं। तू रह नहीं सका। तेरे भीतर यह लालसा थी कि किसी ढंग से मेरी चीज़, मेरा नेम प्रकट हो जाए।" दास ने कहा, "अगर दास तुझसे पूछता भी, तो भी अगर तुम्हारे भीतर प्रकट करने की लालसा न होती, तो यह उत्तर होना था कि गुरु कोई और नेम करा लेता है, इसलिए नहीं आता।" यह एक बहुत बड़ा अवगुण है, अपनी भक्ति को प्रकट करना। इस प्रकार भक्ति ठीक ठिकाने नहीं पड़ती।

अगर चाहते हो कि जपा नाम संभाला जाए, कोई भी नेक से नेक काम करके प्रकट न करना। बाबा नन्द

सिंह जी के बचन हैं, नाम जपना कठिन है। "नाम जपकर, परिश्रम कर के, बन्दगी करके या सरीर करके कोई गुरु- घर की सेवा करके या दान-पुण्य करके, कमाई (किए गए पुण्य) करके, कमाई को संभालने की भी युक्ति चाहिए।" संभालता वही है जिसको युक्तियां ज्ञात हों। जो युक्तियों को समझकर 10-20 पैसे भी चलता है, यत्न करता है कमाई को संभालने का वही आगे बढ़ सकता है। जिसको नहीं समझ वह साथ-साथ बर्तन भरता है और साथ-साथ बहता जाता है, जैसे कि गुरबाणी में फरमान है :

*जो पावहि भांडे विचि वसतु सा निकलै किआ कोई करे वेचारा।।*

(अंग ४४६-४५०)



कई ऐसे भी होते हैं जिनके जीवन में हस्त-सेवा बहुत होती है। हम एक स्थान पर कीर्तन दरबार पर गए। रात्रि के 10.30 – 11 का समय था। हम वापस आने लगे तो एक बुज़ुर्ग जिसकी आयु 70 वर्ष के लगभग होगी, टांग भी एक उसकी खराब थी, छड़ी के सहारे वह चलता आ रहा था, पीछे से हमें आवाज़ लगाकर कहने लगा, "रुक जाओ!" हम कार में बैठने लगे थे कि उसकी आवाज़ सुनकर रुक गए। सोचा, कोई काम होगा। पास आकर कहने लगा, "चले हो?" दास ने कहा, "जी हां, काफी समय हो गया है, जा रहे हैं।" "लंगर छका है ?" हमने सोचा, स्वभाविक पूछ रहे हैं। कहा, "हां जी, छक लिया है।" इतनी बात कहकर हम कार में बैठने लगे तो उसने फिर पूछा, "दाल कैसी लगी है?" दासों को तनिक सुगंध आई थी अभिमान की लेकिन शोअ न किया

हमने। दास ने कहा, "जी? बहुत स्वादिष्ट थी।" फिर कहने लगा, "जी, मैंने बनाई है।" आयु 70 वर्ष, लेकिन शायद किसी महापुरुष की संगत नहीं मिली। दास ने सोचा कि जिस तरह इसने कहा है कि दाल मैंने बनाई है, जो सेवा का फल इकट्ठा हुआ था, उसमें से 40 पैसे बह गया है:

*"हउमै विचि सेवा न होवई ता मनु बिरथा जाइ॥"*

(अंग ५६०)

मैं (अहंकार) से कोटा व्यर्थ हो जाता है। खैर 60 पैसे संभाल लेता तो भी शुक्र था। उसके आगे के बचन थे, "मैं 3 बजे का खड़ा हूं लंगर में, 11 बज गए हैं। गिनती कीजिए, कितने घण्टे हो गए? टांग भी मेरी खराब **(Handicapped)**। मानते हो?" दास ने कहा, "पूरा मानता हूं कि 80 पैसे कार्य समाप्त हो गया। अगर 100 पैसे कमाई की और उसमें से 80 पैसे तो कार्य समाप्त हो गया।" दास ने सोचा, "अब पूरा थर्मामीटर ही लगा लें?" दास कार में से बाहर निकला और दास ने उसके दोनों कन्धे पकड़कर कहा, "दाल बहुत स्वादिष्ट थी, आपने बनाई थी, 8 घण्टे सेवा की। बहुत बड़ी बात है लेकिन एक बात दास को बताओ कि यह जो कुछ दास को बताया है, सीधा मेरे पास ही आए हो या किसी और को भी बताया है? कहता, "आप सातवें हो। छः को पहले ही बता चुका हूं।" दास ने मन में कहा, "80 पैसे नहीं अब तो 10 पैसे अपने दामन से भी गए।" कई बार ऐसा होता है कि कमाया तो सौ तथा गया सवा सौ।

कइयों के जीवन में दान-पुण्य बहुत होता है। कई

सेवा करवाते हैं धन की, लेकिन भीतर होता है कि संगमरमर पर मेरा नाम लिखा जाए, मेरा नाम स्पीकर पर अनाऊंस हो, मेरी लोगों में टोहर हो। रिश्तेदारों को, लोगों को पता लगे कि मैंने इतनी सेवा की है। इस प्रकार प्रकट करने से सेवा में फल कम हो जाता है।

एक भाई गुरमुख सिंह, 'आनंद चमत्कार' के लिखारी, अपनी आप बीती लिखते हैं कि एक बार लुधियाना के गुरुद्वारे में किसी को समय दिया था। मीटिंग थी कोई, उसको मिलने गए। जिसको समय दिया था, उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे कि एक बुज़ुंग आया। ऐनक लगाई हुई थी। हाथ में थैला पकड़ा हुआ था। उसने गुरु ग्रंथ साहिब को मस्तक भी नहीं झुकाया, प्रणाम भी नहीं किया, भीतर आते ही कभी दाईं ओर, कभी बाईं ओर, कभी ऊपर और कभी नीचे की ओर देखे।



भाई गुरमुख सिंह जी कहते, मैं बुज़ुंग के पास चला गया और पूछा, "बाबा जी! आपका क्या खो गया है? मैं ढूंढ देता हूं।" वह कहने लगा, "मेरा खोया कुछ नहीं है। लेकिन जब पिछले वर्ष मैं इस गुरुद्वारे में आया था तो मैंने एक हज़ार रुपए की सेवा दी थी। मैनेजर ने कहा था, दहलीज़ के आगे तुम्हारा नाम लिखवा देंगे। मैं तो अपना नाम ढूंढ रहा हूं कि कहां लिखा है।" यह हाल है समझ के बिना।

एक ज़िक्र प्रिंसीपल सतबीर सिंह जी भी अपनी पुस्तक में लिखते हैं कि गुरु रामदास के घर में काले कौए आते हैं और सफेद हंस होकर जाते हैं। लेकिन गुरु रामदास जी! कई शरीरों ने दर पर अपने नाम लिखा-लिखा

कर सफ़ेद घर को काला कर दिया है। महापुरुष सुमति देते थे कि कभी भी दान देकर यह मत कहना कि अपना नाम संगमरमर पर लिखाऊं, यह मत कहना कि चार व्यक्तियों को पता चले कि मैंने दान दिया है।

दास के साथ ऐसी घटनाएं बहुत घटित होती हैं। एक बार किसी के घर कीर्तन कर रहे थे। गांव की जगह थी। एक सिक्ख आया। उसने बाजे पर दो रुपए रखे और दास के कान में कुछ कहे जाए। दास को पता न चले कि क्या कह रहा है। हमने समझा कि शायद कह रहा है कि कीर्तन की समाप्ति कर दो। हमने शब्द रोक कर पूछा, "क्या कहते हो?" उसने कहा, "मेरा नाम जगतार सिंह है, अनाऊंस करो कि इसने दो रुपए दिए हैं।" देखिए! ऐसी वृति वाले लोग भी धरती पर हैं कि मेरा नाम अनाऊंस हो। महापुरुष बचन करते थे कि जैसा बीज भूमि में बोएं, अगर नंगा रह जाए तो पूरा पौधा नहीं बनता और फल भी कम देता है लेकिन जो बीज़ मिट्टी में दबा हुआ हो वह पौधा भी पूरा बनता है और फल भी पूरा लगता है तथा अनन्त दानें देता है। इसी प्रकार अगर दान गुप्त दोगे, तो छिपे हुए बीज की भांति कई गुणा अधिक फल लगकर आपकी झोली में पड़ेगा।

एक बार हम पटियाले कीर्तन करके बाहर निकले कि एक बीबी हमारे पास आई और कहती, "मेरे भाई साहिब जरमन से आए हैं, उन्होंने सेवा देनी है।" हम ठहर गए। उस आदमी ने नोट निकाले और इस प्रकार गिनने लगा जैसे दुकानदार गिनते हैं। दास ने मन में

कहा, "दे तो सेवा रहा है लेकिन अभी कच्ची में भी नहीं चढ़ा। तू सेवा देनी है तो किसी लिफ़ाफे में डाल कर दे।" क्यों गिन रहा था ताकि जो पास में 80-90 शरीर खड़े हैं उनको पता चले! एक बार गिनने के बाद दोबारा फिर गिनने लग पड़ा कि जो रह गए हैं, वे भी देख लें! जब उसने फिर तीसरी बार गिनती आरम्भ की तो दास से रहा नहीं गया। दास ने उसका हाथ पकड़ लिया और कहा, "आपने सेवा देनी है, यह सेवा जेब में ही रखिए, जरमन आकर ही लेंगे। किसने जरमन जाना तथा किसने सेवा लेनी? कारण तो यह था कि सेवा देने का भी ढंग नहीं। अगर चाहते हो जपा नाम, की गई सेवा, किया हुआ दान-पुण्य सफल हो तो कभी भी उसको प्रकट करने का प्रयत्न न करना! स्वयं प्रकट हो जाए तो कोई बात नहीं।



गुरु साहिब कहते हैं, गुणों के होते हुए भी अवगुणहारे बन कर रहें। लेकिन आज का मनुष्य अवगुणों के होते हुए भी गुण पेश करना चाहता है। बिल्कुल विपरीत लेखा है। हम थोड़ा सा भला करके, उसे संसार को दोगुणा, चौगुणा करके दिखाना चाहते हैं। थोड़ा सा भला कार्य करके उस पर अपने नाम की पट्टी लिखवाना चाहते हैं ताकि थोड़ा-बहुत नज़र आए जबकि गुरु साहिब कहते हैं, जो है वह भी दिखाई न दे। गुरु साहिबों के, गुरु के लाडले सिक्खों के, महापुरुषों के जीवन से दिशा लेनी है।

गुरु अंगद देव जी को जब गद्दी मिली तो सिद्ध आ गए और कहते, "हमने सुना है कि गुरु नानक साहिब

जी ने आपको शीश झुकाया है (गद्दी देते समय 3 पैसे और नारियल रखकर मस्तक झुकाया) लेकिन देखिए! धन्य-धन्य गुरु अंगद साहिब ने क्या उत्तर दिया? कहने लगे, "अगर शिशु मां की गोद में पड़ा हुआ हो, मां का मन करे कि शिशु का मुंह चूमना है तो मां को बच्चे का मुंह चूमने के लिए झुकना पड़ता है। गुरु नानक साहिब ने तो हमें चूमा है, प्यार किया है, हमें यह नहीं पता कि शीश निवाया है कि क्या किया है" देखिए! अपना बड़प्पन प्रकट नहीं किया।

जब गुरु अमरदास जी दातू की ईर्ष्या के कारण अलोप हो गए तो संगत गुरु साहिब के दर्शनों को बहुत विह्वल हो गई तो उन्होंने बाबा बुड्ढा साहिब जी के पास जाकर प्रार्थना की क्योंकि बाबा बुड्ढा जी को वर प्राप्त था कि 'तैथों, ओहले ना होसां' लेकिन बाबा बुड्ढा जी अपना बड़प्पन दर्शाना नहीं चाहते थे। उन्होंने कहा, "हम गुरु साहिब जी की घोड़ी अरदास करके आगे-आगे बढ़ाते हैं।" पता था आपको सब कुछ लेकिन प्रकट नहीं किया। बड़प्पन घोड़ी को दे दिया। यह है सिक्खी तथा गुरु साहिब की घोड़ी को आगे करके गुरु साहिब को ढूंढा।

बाबा नन्द सिंह जी की कितनी कमाई, कितनी बड़ी अवस्था! लेकिन अपने आपको प्रकट नहीं थे करते। गड्ढा खोद कर बैठना ताकि जो संगत वहां से गुज़रती है उसकी धूल मुझ पर पड़ जाए। किसी ने एक बार ताना मार दिया कि आप छुपकर क्यों बैठे हो तथा कहते, "जिस कुत्ते को कीड़े पड़े हों, वह छिपकर ही बैठता है।"

अगर बाबा दीप सिंह जी के जीवन में झांका जाए तो

उन्होंने भी अपने आपको प्रगटाया नहीं। अमृतसर में कइयों के नाम पर कटड़े बने हैं, कटड़ा जैमल सिंह, कटड़ा आहलूवालिया, और अन्य कई। एक बार पंथ ने बाबा दीप सिंह जी को कहा कि आपकी पंथ में बहुत सेवा है, आपके नाम का भी कटड़ा बनवाना है तो बाबा दीप सिंह जी ने कहा, हमने अपने नाम का कटड़ा नहीं बनवाना क्योंकि वे अपने आप को जताना नहीं चाहते थे, प्रकट नहीं थे करना चाहते।

आज आम मनुष्य की यह दशा है जिसको नहीं सोझी, वह चाहता है कि कम कार्य करके उसकी अधिक प्रशंसा हो, लोगों में सम्मान बढ़े। एक शहर में हमारा ही एक आदमी प्रोग्राम की बुंकिग करता है। एक संस्था को उसने पिछले वर्ष दो प्रोग्राम दिए। अगले वर्ष वे फिर दो प्रोग्राम मांगने आए तो उसने आगे से कहा कि पिछले वर्ष आपको दो प्रोग्राम दिए थे, आपने कौन सा मुझे स्टेज पर सिरोपा दिलवाया था? देखिए! इलाके का मुखिया है तथा भीतर क्या है कि मेरी टोहर (रोअब) होनी चाहिए, लोग मुझे पहचानें।

आम व्यक्ति तुच्छ सी प्राप्ति हो जाए तो बताता है कि अगला कहे, "तू यहां पहुंच गया है?" अपनी चीज़ को प्रकट करने के लिए कहेगा, "मैं आज बैठा था, मुझे लाईट दिखाई दी।" यह किस लिए? ताकि दूसरा कहे, "मुझे तो कभी दिखाई नहीं दी, तू यहां पहुंच गया है, तेरी इतनी कमाई है, तेरी इतनी ऊंची अवस्था है?" आप अमृत वेला को जाग कर शब्द की कमाई करो। इस मार्ग पर चलो, कई कुछ दिखाई देता है, अवस्था भी मिलती

है, बचन भी सत्य होना आरम्भ हो जाता है।

फरीद जी को अवस्था मिल गई, "चिड़ियो! मर जाओ!" मर गईं। "चिड़ियो! जीवित हो जाओ!" जीवित हो गईं। कई बार आपको भी अवस्था मिल जाए, किसी की अरदास कर दी, पूर्ण हो गई। अब स्थान-स्थान पर बता दिया, अवस्था समाप्त। बाबा नन्द सिंह जी के समय की बात है कि संगत भुगत (दर्शन कर) रही थी। गांव की एक बीबी। साथ में उसका पति। उन्होंने भी बाबा जी को नमस्कार की। वहां पास में ही एक सिद्ध भी बैठा हुआ था। उस बीबी को देख कर दूसरे को कहता, "इस बीबी को पुत्र मैंने लेकर दिया है।" (यह अवस्था प्राप्त थी उस सिद्ध को कि किसी की प्रार्थना करनी, पूर्ण हो जाती थी।) जब उनकी यह बात बाबा नंद सिंह जी ने सुनी तो बाबा जी हँस पड़े। कहते, "सिद्ध जी, उस बीबी का कुछ गया नहीं और आपका कुछ रहा नहीं क्योंकि आपने अभिमान वश होकर अपने बड़प्पन को, अपनी अवस्था को प्रकट करने के लिए बताया है।"

एक नौजवान आया था दास के पास। बड़ी कृपा उस ऊपर। कहता, "जी बात करनी है।" दास ने कहा, "बताओ।" उसकी कोई बात सांसारिक नहीं थी, सच्चे धन की बात थी। उसने कहा, "आज से 3 वर्ष पहले मेरी यह अवस्था बन गई थी कि जब मैं साधना में बैठता था, मेरे अस्थूल शरीर से सूक्ष्म शरीर निकल जाता था। अगर मुझे कोई हिलाए नहीं तो पता नहीं चलता था, जब कोई हिलाए फिर वापसी।" यह भी एक अवस्था है। किसी के मस्तिष्क में 'किन्तु' न आ जाए, भ्रम न आ जाए!

आपको पता होगा कि गुरु अरजन देव जी के समय एक काबुल से माई हर रोज़ आती थी श्री हरिमन्दिर साहिब जी सेवा के लिए। यह क्या था? सूक्ष्म शरीर में सेवा करने आती थी।

सिन्धी धर्म में एक माता जी माता राधिका बाई जी हुए हैं जिन्होंने बाद में अमृत छका और माता 'जै कौर' सजे। वे भी इस अवस्था के धनी थे। बम्बई बैठे होते थे तो शब्द लगवाते थे, बाजे पर गुरु रामदास जी की सिफ़तों का। शब्द लगाने वाले को कहना, "जब तक मैं रुकने को न कहूं, बोलते रहना है।" दो-दो घण्टे समाधि लगती थी। जब नेत्र खोलते तो कहते, "आज आपने मुझे गुरु रामदास जी के घर की यात्रा करवाई है।" यह भी एक अवस्था है, कीर्तन और सिमरन के मण्डप में बैठ कर अस्थूल शरीर में सूक्ष्म शरीर के साथ दूसरे स्थान पर।



एक 'ज्ञानी सरूप सिंह जी' की भी पुस्तक है श्री हरिमन्दिर साहिब जी की प्रशंसा पर। पुस्तक का नाम है, 'हरिमन्दिर दर्शन'। गुरु रामदास जी के स्थान की स्तुति है उसमें। उसमें एक वाक्या लिखा हुआ है कि अमरीका का एक शरीर जिसे गुरु रामदास जी से बहुत प्यार था उसने ज्ञानी सरूप सिंह जी को बताया कि मेरे ऊपर गुरु रामदास जी की बख़्शिश है कि मैं 7 घण्टे अपने घर हरिमन्दिर साहिब के सरूप के सामने पालथी मार कर बैठ जाऊं तो मैं अमरीका में बैठ कर ही बता सकता हूं कि हरिमन्दिर साहिब के भीतर रागी सिंह कौन सा शब्द पढ़ रहे हैं। यहां एक बात बता रहा हूं कि प्रभु का संसार परे से परे है। जैसे-जैसे आइना साफ होता जाता

है आगे की मंज़िलें मिलती जाती हैं। उस नवयुवक ने बात सुनाई कि मैंने जब सिमरन में बैठना, न पांव में कोई हरकत होना, न घुटने में, लेटे हुए भी यह अवस्था मिल गई। उसने बताया कि कुछ वर्ष पहले मुझे यह अवस्था मिली थी। अत्यन्त रस भरा जीवन था। लेकिन आज वह नहीं रहा। वह अवस्था नहीं रही। वह अवस्था टूट गई है, समाप्त हो गई है।

उसने जब बचन सुनाया तो दास ने उससे पूछा कि यह अवस्था जब तुझे मिली वह कितना समय रही। उसने बताया, "6 महीने के लगभग।" दास ने पूछा, "आपने अवश्य इस बात को स्थान-स्थान पर बताया होगा, तो ही चली गई।" वह कहने लगा कि 10-12 व्यक्तियों को यह बात मैं बता बैठा कि यह अवस्था मुझे मिली है। अब ध्यान देना कि इधर ज़िक्र हुआ, उधर ब्रेक लग गई। आज वह शरीर 26 पाठ जपुजी साहिब के हर रोज़ कर रहा है कि सतिगुरु! कृपा करो, ब्रेक (रोक) खोल दीजिए! सो साधक व्यक्ति के लिए यह आवश्यक है कि किसी किस्म के नेम, प्राप्ति या अवस्था को स्थान-स्थान पर न बताए।

एक बार कोई बाबा नन्द जी के पास आया। कहता, "मुझे नाम में रस नहीं आता। मुझे कोई मंत्र दीजिए।" बाबा जी ने कहा, "तू मुसलमान है, जहां से तूने मंत्र लिया है, मंत्र में कोई कमी नहीं, तूने सही ढंग से जपा नहीं।" बाबा जी ने उसे युक्ति बताई। जब उसने युक्ति अनुसार जपा तो कुछ समय बाद ही रस आना आरम्भ हो गया। वह फिर आया बाबा जी के पास शुक्राने के

लिए। बाबा जी ने उसे जो सुमत्त बख़्शी, उससे हम भी दिशा ले लें। बाबा जी कहने लगे, "तुझे जब कोई मिलने आए, तो यह मत दर्शाना कि मैं कुछ बन गया हूं। युं सीधे-सादे ढंग से बात करना कि जैसे तेरे पास है ही कुछ नहीं, सीधा- सादा ही बने रहना!"

अब यहां पर एक बारीकी भी है कि अपने से किसी ऊँची कमाई वाले से अकेले में बात करनी कि साधना में कोई कठिनाई आ रही हो, या सलाह लेनी कि मैं यहां पर पहुंचा हूं, आगे क्या है? यह तो अलग बात है। बाबा नन्द सिंह जी के समय एक भाई भगत सिंह हुए हैं। उन्होंने बाबा जी से समय लिया कि मैं अकेले एक-आधा मिन्ट समय चाहता हूं, मुझे एक कठिनाई आ गई है साधना में। बाबा जी कहते, "बताओ!" वे कहते, "मेरी अवस्था यहां पहुंच गई है कि शरीर निश्चल हो जाता है, जिह्वा में भी कोई गति नहीं रहती, होंठ भी नहीं हिलते। क्या मेरे भीतर सिमरन चल भी रहा है या नहीं, यहां मेरा बैठना प्रवान भी है कि नहीं, मैं कहीं नीचे तो नहीं गिर गया?" जब उसने यह पूछा, बाबा जी ने नेत्र बन्द कर लिये। जब नेत्र खुले तो महापुरुष उससे कहने लगे, "सिमरन टांका है टांका। जिस प्रकार लोहे को लोहे से जोड़ना हो तो टांके आवश्यकता है। जब टांका लग गया, लोहे के साथ, लोहा जुड़ गया। अभेदता हो गई। आप इस अवस्था में पहुंच गए हो कि जिसका ध्यान करते हो 'धिआन-धिआनी-धे' एक हो गए। आपके सिमरन ने, कमाई ने जोड़ दिया है आपको।" अब निश्चल अवस्था बताकर पूछना, "क्या मेरी अवस्था ठीक

जा रही है या नहीं, कोई ब्रेक (रोक) तो नहीं लग रही?" इस प्रकार से बाधा नहीं पड़ती, ब्रेक (रोक) नहीं लगती। जब उस चीज़ को प्रकट करने के लिए बताते हैं तो ब्रेक (रोक) लगती है।

महापुरुषों के, छुपने वालों के जीवन की बातों से हमने भी सेवा लेनी है। एक संत सेवा राम हुए हैं। उनके पास एक बार एक माता आई थी जिसने कहा था, महापुरुषो! मेरे बच्चे की आँखों की ज्योति चली गई है। पता नहीं वे किस **Mood** में बैठे थे! कई बार मनुष्य सांसारिक बातें सुनकर उकताया होता है। एकदम कह दिया, "मिर्चें घोल कर पानी में, आँखों छींटा दे।" उन्होंने तो गुस्से में कहा था लेकिन वह माता सीधे-सादे स्वभाव की थी। वह उठकर गई और घर जाकर उसने उसी प्रकार ही किया। दो-अढ़ाई वर्ष का बालक था, जब उसकी आँखों में मिर्चों वाले पानी के छीटें मारे तो वह बहुत चिल्लाया। उसके घरवाले भी उसके पीछे पड़ गए कि यह क्या कर रही हो! उसने किया था भोले-भाव। 7-8 मिन्ट तो वह बालक बहुत चिल्लाया लेकिन लगभग आठ मिन्ट के पश्चात उसको दिखाई देना आरम्भ हो गया। वह माता भागी गई महापुरुषों के पास मिठाई का डिब्बा लेकर। जाकर कहती, "बहुत कृपा हुई, मेरे बच्चे की आँखों की ज्योति आ गई है।"

संत सेवा राम जी एक आश्चर्यचकित रह गए कि हमने तो टालने के लिए कहा था कि पानी में मिर्चें घोल कर छीटें मार। कहने लगे, "माई! अच्छा हुआ, तूने बात की है और मैं अकेला हूं। अब एक बात है, जो कुछ

भी हमने तुझको कहा और तेरे साथ हुआ, अब यह शर्त है कि किसी को बताना मत।'' यह बात पकड़ना! अगर हो कोई कच्चा संत, नकली संत, शुक्र करता है कि बात फैले और वाह-वाह हो। लेकिन वे क्या Ban लगा रहे हैं कि किसी को बताना मत! अगर तूने बताया, तो आँखों की ज्योति फिर चली जाएगी!

यह क्या है कि अगर सहज स्वभाव कोई बचन सत्य हो भी गया है लेकिन हम छुपना चाहते हैं। साखी तो आगे भी है कि लगभग 10 वर्ष पश्चात् महापुरुष चोला बदल गए। उस बालक की आयु जब 17 वर्ष की हो गई, उस माता के पड़ोस की औरत के बच्चे की आँखों में मोतिया उतर आया। उस औरत ने उस माता को कहा, ''कोई डॉक्टर बता, मेरे बच्चे को कम दिखाई देता है।'' उस माता ने सोचा कि अब तो महापुरुष चोला बदल गए हैं, अब बताने में क्या आपत्ति है? उसने कहा, ''मैं संत सेवा राम जी के पास गई थी। उन्होंने पानी में मिर्चें लाल घोल कर छींटे मारने को लिए कहा था। मैंने तो ऐसा ही किया था और मेरे बच्चे की आँखों की ज्योति आ गई थी।''

उस माता ने इतनी बात ही कही कि जब बालक घर आया तो कहने लगा, मुझे दिखाई देना बन्द हो गया है। यह क्या था? महापुरुष धरती से जा चुके हैं लेकिन निरंकार बचन सत्य करा रहा है क्योंकि अभेदता थी। हमारा लक्ष्य सिर्फ इतना ही है, हमने यह दिशा लेनी है कि आम कच्चा आदमी हो तो कहता है, बात फैले, लोग मुझे 'धन्य' कहें! लेकिन संत सेवा राम जी, इतनी ऊंची

अवस्था, ऐसी अभेदता परमेश्वर के साथ कि शरीर करके चले भी गए, तो भी बचन सत्य हो रहा है लेकिन क्या कहा माता को कि किसी को बताना मत! Ban लगा दिया। किस लिए? कि हम अपनी प्राप्ति को स्थान-स्थान पर नहीं बताना चाहते।

इसके विपरीत भी एक साखी है। भाई शाल्हो जी के समय एक फकीर हुआ है जिसने साधना करके सिद्धि प्राप्त की थी। क्या सिद्धि थी? कहता था, भूख लगी है और अपना कटोरा आगे करता था। कटोरे में जो चाहे डाल दो लेकिन कटोरा नहीं था भरता। यह सिद्धि प्राप्त की थी। देखिए! कितनी Negative- Positive कथाएं हैं दोनों! एक यह और एक पहली सेवा संत सेवा राम जी की। उसमें किस प्रकार अपने आप को छुपाने का प्रयास किया गया है और इसमें अपने बड़प्पन को प्रकट करने का प्रयास है!



एक बार यह सिद्ध गुरु रामदास जी के लंगर में आ गया। कहने लगा, "आज गुरु रामदास जी के घर का तमाशा देखते हैं।" सोचा, "कटोरा आगे करेंगे, वे उसमें डालते जाएंगे, मेरे पास सिद्धि है। कटोरा भरेगा नहीं। जब लंगर समाप्त हो जाएगा तो मैं कहूंगा कि आपसे एक शरीर को लंगर नहीं छकाया गया! इस प्रकार गुरु रामदास जी के लंगर का अपमान होगा।" अकस्मात भाई शाल्हो जी लंगर बाँटने की सेवा कर रहे थे। बड़ी कमाई थी उनकी। उन्होंने उस समय कपड़े की पोटली गले में लटकाई हुई थी और चावल बांट रहे थे। सिद्ध ने यह सोच कर कटोरा आगे किया कि इनकी पोटली समाप्त हो

जाएगी लेकिन मेरा कटोरा नहीं भरेगा। भाई शाल्हो जी की इतनी कमाई थी, उन्होंने आधी मुट्ठी चावल ही कटोरे में डाले होंगे कि कटोरा भर गया। वह सिद्ध आश्चर्यचकित हो गया कि यह तो मुझसे भी आगे की बात है, गुरु तो अभी परे है, गुरु के सिक्ख ही नहीं मान! वह भयभीत हो गया कि कहीं मुझे कोई श्राप ही न दे दें! उसने भाई शाल्हो जी के चरण पकड़ लिए। भाई शाल्हो जी कहते, ''गुरु रामदास जी के लंगर में भी शक्तियां दिखाने आ गया है?'' वह कहने लगा, ''मुझे क्षमा कर दीजिए।'' भाई शाल्हो जी कहते, ''क्षमा तो गुरु ने करना है लेकिन तूने आगे से शहर की चारदीवारी में कदम नहीं रखना (ताकि फिर ऐसी हरकत न करे) तुझे भिक्षा की कमी नहीं आएगी। लेकिन चार दीवारी के भीतर कदम नहीं रखना आज से।''

हमने क्या दिशा लेनी है कि साधना में किसी किस्म की भी कोई प्राप्ति हो जाए, अवस्था मिल जाए, अगर चाहते हो कि सुरक्षित रहे, अगर चाहते हो आगे बढ़ना, मंज़िल पर पहुंचना तो स्थान-स्थान पर न बतलाना, अपने आप को कभी जताने या अपने बड़प्पन को प्रकट करने का प्रयास मत करना!

देवते आए थे एक साधु के पास, उसकी महिमा को सुनकर, जिसने मन को साधा हुआ था। कपटी नहीं था। उसके दर्शन करने आए। उसको कहते, ''माया ले ले।'' वह कहता, ''क्या पता मैंने कब ऊपर चले जाना है, मैंने क्या करनी है माया?'' देवते कहते, ''हमसे यह वरदान ले ले कि जिसको चाहो, उसके रोग को दूर कर दे।'' लेकिन

देखो! कोई लालच नहीं भीतर, अपनी शोभा का। कहता, "संसार है, स्वयं कर्म बोता, स्वयं रोग भोगे, मुझे क्या आवश्यकता है?" वे कहते, "राजभोग ले ले।" साधु कहने लगा, "मैं बहुत आनन्द में हूं, मैं वह भी नहीं चाहता।" कहते, "फिर यह वर ले ले कि जिसका जो भी कार्य रसना से कहेगा, हो जाएगा।" वह कहने लगा, "रसना से कहूँगा, कोई कार्य, पूर्ण हो जाएगा तो मुझे यश ही प्राप्त होगा न? मुझे कोई चाहत नहीं।" देवता कहने लगे, "अगर तुम स्वयं हमारी बात नहीं मानोगे तो हम अपने आप तुझ पर वर थोप देंगे।" वह कहता, "क्या वर थोपोगे?" देवता कहते, "तेरे पर वर थोप देंगे कि जो भी तू रसना से कहेगा, वह कार्य अवश्य हो जाएगा।" साधु कहने लगा, "मुझे कुछ नहीं चाहिए, लेकिन अगर आपने निश्चय कर ही लिया है कि कुछ अवश्य देना है तो फिर यह दे दो कि मेरे द्वारा लोगों के कार्य अवश्य पूर्ण हों और मुझे इस बात का ज्ञान न हो कि किसी का कार्य पूर्ण हुआ है।" देवताओं को यह वर देना पड़ा कि तू जिधर से भी गुज़रेगा, तेरी परछाई भी जिस पर पड़ेगी, उसके मस्तिष्क की रेखाएं बदल जाएंगी लेकिन तुझको इसका ज्ञान नहीं होगा कि परछाई किस पर पड़ी है। भाव भीतर क्या है कि मुझे शोभा न मिले।

इसके विपरीत गुरु अरजन देव जी के समय एक योगी थे, जिन्होंने शिवजी को प्रसन्न करके वर मांगा था कि जो भी मेरे दर्शन करे, उसको एक वर्ष का स्वर्ग मिले और जिसको मैं चाहूं 100 वर्ष का स्वर्ग दे दूं। अपनी शोभा की, अपनी वाह-वाह की, अपने आप को जताने

की, प्रकट करने की लालसा। बाबा नन्द सिंह जी के बचन हैं कि वाह-वाह इस मार्ग की सबसे बड़ी खाई है। *साधक व्यक्ति के लिए यह बहुत ही समझने योग्य युक्ति है कि अपनी साधना, नेम, अच्छे कार्य, नेक कार्य, सेवा और प्राप्ति को स्थान-स्थान पर न बताए। यह युक्ति हमारे जीवन का आधार बने। गुरु साहिब सब पर कृपा करें!*

❖❖❖

# पांचवी युक्ति

5. साधक बन्दे (व्यक्ति) के लिए पांचवीं युक्ति है, "किसी प्रकार के परिवारिक माहौल की बाधा का नम्रतापूर्वक युक्ति के साथ सामना किए जाए लेकिन साधना न छोड़े।"

95% असत्य का पसारा है। सत्य मार्ग पर चलना बहुत ही कठिन है। थोड़ा सा कोई इस ओर चले, घर में ही बाधाएं पड़नी आरम्भ हो जाती हैं। बड़े-बड़े भक्तों के मार्ग में भी बाधाएं आई हैं। कोई भक्त बन जाए, संसार उसका जीना कठिन कर देता है। सांसारिकता से भक्तों की सुर नहीं मिलती। जब आप इस मार्ग पर चलोगे, आपको रोकने वाले बहुत मिलेंगे। बहुत ही साहस और धैर्य की आवश्यकता है।



कई आशा छोड़ कर बैठ जाते हैं। आशा नहीं छोड़नी। नदी से दिशा लेनी है। नदी की मंज़िल है समुन्द्र। नदी को समुन्द्र में मिलने के मार्ग में बहुत बाधाएं आती हैं लेकिन वह रुकती नहीं, चलती जाती है। जहां कोई बाधा आए, उसका बहाव और अधिक तीव्र हो जाता है। हमारे लिए प्रेरणा है कि हमें भी अध्यात्मिक मार्ग में बाधाएं आने पर गुरु का आश्रय लेकर, गुरु के आगे सविनय प्रार्थना करते हुए चलते जाना है। गुरु के आगे प्रार्थनाएं करने से, गुरु के चरणों में हमारी प्रार्थना पहुंचने की ही देर है, गुरु साधन बनाते हैं। 33 करोड़ देवता हाथ बांध कर खड़ा है उसके चरणों में, जिसकी

Duty लग जाती है साधन बनाने की। घर परिवार के किसी सदस्य की ओर से कोई ऐसी बाधा पड़े तो रुकना नहीं! आशा नहीं छोड़नी! घर में कलेश भी नहीं डालना! युक्ति के साथ चलते जाना है। इसका सामना नम्रता के साथ करना है, क्रोध के साथ नहीं, नहीं तो घर नष्ट हो जाता है।

संसार चतुर और अक्लमन्द है। वह अपने आप को सही मान कर चलता है। संसार इस रंग को समझ नहीं पाता और कई तरह से इस मार्ग पर चलने वालों को रोकने का यत्न करता है। कहीं पति इस ओर लगा है तो पत्नी रोकती है। कहीं पत्नी लगी है तो पति रोकता है। कई जगह मां लगी है तो पुत्र रोकता है तथा कहीं पुत्र लगा है तो मां रोकती है। कहीं पिता लगा है तो पुत्र रोकता है तथा कहीं पुत्र लगा है तो पिता रोकता है।



प्रहलाद भक्त है, भगवान को मानता है, धर्म के मार्ग पर चल रहा है लेकिन पिता चाहता है कि पुत्र मेरे नक्शे-कदम पर चले, मुझे भगवान माने। पिता ने कई प्रकार के दण्ड भी दिए कि पुत्र यह मार्ग छोड़ दे। अब प्रहलाद ने यह भी नहीं कि अहंकार के साथ या गालियों के साथ सामना किया हो, सारी स्थिति का सामना नम्रता के साथ किया लेकिन 'राम' कहना भी नहीं छोड़ा। जिनको इश्क लग गया जो मुश्के (मग्न हो) गए, उन्होंने नाम नहीं छोड़ा। मनमुख चाहता है कि वह मेरे मार्ग पर चले लेकिन निरभउ को जपने वाला सांसारिक भै (भय) में नहीं आता। वह डरता नहीं। वह कहता है, "मैंने नाम नहीं छोड़ना, क्योंकि यह नाम ही तो है जो मेरी

रक्षा करता है मैं इसको कैसे छोड़ दूं?" विजय आखिर में गुरमुख की है।

संसार नाम जपने वाले को कष्ट देने और बदनाम करने में कोई कसर नहीं छोड़ता लेकिन जिसका सहायक बनकर वाहिगुरु आप रक्षा करता है, उसका संसार कुछ नहीं बिगाड़ सकता। चाहे कितने भी लोग कुबचन बोल कर भगवान से तोड़ने का यत्न करते हैं लेकिन भक्त सहन कर लेते हैं, परन्तु अपने धर्म का त्याग नहीं करते। परमेश्वर के प्यारों की नासमझ लोग, यहां तक कि अपने माता-पिता, संबंधी भी निन्दा करते हैं, उनके साथ टिचकरें करते हैं, ईर्ष्या करते हैं, उन पर ज़ुल्म करते हैं। लेकिन एक बात समझ लेना कि जो नाम जपने वाले के मार्ग में बाधा बनते हैं, उनके पुण्य जलते जाते हैं, तब तक ही बचाव होता है जब तक पुण्य हैं। पुण्य समाप्त होते ही भगवान की ओर से परचा पड़ेगा ही पड़ेगा। लेकिन गुरमुख ने रोकने वाले से झगड़ा भी नहीं करना और अपने नेम (प्रभु का नाम) को भी नहीं छोड़ना, अपना मार्ग भी नहीं छोड़ना!

अगर जीवन में कार-व्यवहार करते हुए कहीं भी आपको दोनों जीव पति-पत्नी गुरु-घर में लगे हुए मिलें तो समझ लेना कि इनकी पिछले जन्म की बहुत कमाई है, दोनों ही लगे हुए हैं। अगर जीवन में चलते हुए कहीं सारा परिवार ही गुरु घर वल लगा है तो ओर भी बड़े भाग होंगे, पुत्र भी लगा है, पुत्री भी लगी है, पत्नी भी लगी है, दोनों जीव गुरु-घर की ओर लगे हों, उन जैसा सुखी कोई नहीं। लेकिन जिसका जीवन साथी न लगा

हो, मर्द तो वह है जो अपना नेम (नाम जपना) भी नहीं छोड़ता और यत्न करता है उसको भी जोड़ने का।

महापुरुष बताते थे कि कोई पति गुरु-घर की ओर लगा हो, पत्नी रोके न, उसको भी फल मिलता है। घर बैठे ही **50** प्रतिशत अच्छे कार्य का फल मिलता है। अगर पत्नी गुरु-घर की ओर लगी हो और पति रोकता नहीं, उसको भी फल मिलता है।

अमृतसर की एक बीबी है, सारी रात्रि जागती है। दस बजे स्नान कर लेती है और सारी रात नाम सिमरन में जुड़ती है लेकिन पति का ध्यान इतना गुरबाणी की ओर नहीं लेकिन उसको रोकता भी नहीं, उसका पूरा साथ देता है। जब दास उसको देखता है तो सोचता है कि पत्नी सिमरन करती है लेकिन पति नहीं, इसको भी अवश्य फल मिलेगा, क्योंकि यह रोकता तो नहीं है न पत्नी को कि गुरबाणी न पढ़!



कई ऐसे परिवार भी आँखों से आँसू बहाते मिलते हैं कि पति उठता है कि स्नान करके सिमरन करने को चित्त करता है, लेकिन पत्नी कहती है कि अगर इस प्रकार अमृत वेला को उठना था तो 'बाबा' बन जाना था, मुझसे विवाह नहीं था करवाना!

एक जोड़े-घर का शरीर है। सेवा करता है जोड़े घर में। उसके घर में भी इस प्रकार ही मुश्किलें। उस बेचारे को इश्क लग चुका था गुरु के साथ। उसका मन करता था कि **1** बजे उठूं, **2** बजे उठूं, **2/50** बजे उठूं। रहा न जाए। यह भी एक अवस्था है। इसको कहते हैं 'मुशका गया'। जिसको इश्क लग गया, अब वह रह ही नहीं

सकता सिमरन के बिना, बाणी के बगैर। लग्न लग गई।

बाबा नन्द सिंह जी बचन करते थे: सबसे कठिन भी नाम जपना और सबसे सरल भी नाम जपना। जिसको यह अवस्था मिल जाए, इश्क वाली, उसके लिए सरल बन जाता है। उस नौजवान शरीर को भी इश्क लग गया, रात्रि को उसका मन करे कि साईं की याद में जुड़ूं लेकिन जीवन-साथी इस तरह का। रुकावट। नहीं उठने देना। उसने सोचा, "क्या करूं? मुझसे रहा नहीं जाता, पत्नी उठने नहीं देती 6-7 बजे से पहले। कलेश करुं, तो भी नहीं ठीक।" उसने असत्य का सहारा लिया। आप भक्ति के मार्ग पर चले हो, घर में से रुकावटें पड़ती हैं, भक्ति के मार्ग पर जाने के लिए असत्य भी बोलो कि कहीं और जा रहा हूं, कोई गुनाह नहीं। जो असत्य, जो समझदारी किसी अच्छे कार्य के लिए प्रयोग की जाए, वह कोई गुनाह नहीं, यहां असत्य, सत्य से भी बड़ा है। उसने क्या किया? कहता, "जहां पर नौकरी करता हूं, मालिकों ने सप्ताह में दो बार रात्रि को बुलाना आरम्भ कर दिया है।" पत्नी को कहा, "मालिकों ने रात्रि की Shift दो दिन तय कर दी है।" और जाना कहाँ? 'गोइंदवाल साहिब।' सारी रात्रि वहां गुरबाणी की खुराक लेनी गुरु अमरदास के चरणों में, श्री जपुजी साहिब, श्री सुखमनी साहिब और शुक्राना कि महीने के 8 दिन तो cover हो गए। एक दिन के लिए वैसे ही पत्नी को मना लिया कि मैं एक दिन सप्ताह में जाग लिया करूं सम्पूर्ण रात्रि। एक दिन पत्नी को मायके भेज देना सप्ताह में। वह कहती, "अच्छा! आप इतने अच्छे हो!" वास्तव में मसला तो

भीतर में अपना था कि तू मायके जाएगी और तो मुझे रोकने वाला कोई नहीं होगा। इस प्रकार उसने सप्ताह के 4 दिन cover कर लिए। अब स्वयं अनुमान लगा लीजिए कि जिसने 16 दिन महीने के cover कर लिए उसकी कितनी बड़ी भक्ति है! परिवारिक माहौल का भी नम्रता के साथ सामना किये जा रहा है और नित्तनेम भी जारी है, नित्तनेम को भी नहीं छोड़ रहा।

कई महिलाएं ऐसे आँसू बहाती हैं जिनका मन करता है उठूं तीन बजे, दो बजे, लेकिन जीवनसाथी, पति ऐसा मिला होता है कि कलेश करता है कि ख़बरदार! अगर अमृत वेला को उठी तो! लेकिन जीवन-साथी जैसा मर्ज़ी हो, वास्तव में मर्द तो वह है जो नम्रता के साथ सामना भी करता जाए और नेम भी न छोड़े, वह सबसे अधिक सम्मानयोग्य है।



जीवन-साथी जैसा मर्ज़ी हो, लेकिन कहीं हृदय रूपी घर में से गुरु का वास न निकले! गुरमुख को भी युक्ति का प्रयोग कर लेना चाहिए। एक तो वे युक्तियां हैं जो गलत हैं। लेकिन जो युक्ति भले के लिए प्रयोग की जाए, कोई गुनाह नहीं।

गुरु गोबिन्द सिंह जी के समय एक सुथरा हुआ है। उसने भी प्यार भरी युक्ति प्रयोग की थी। वह जाये गुरु साहिब के दरबार में दर्शन करने और पहरेदार जाने न दे। पहरेदार कहे, "भेटा (उपहार) जिसके हाथ में हो वही भीतर जायेगा।" सुथरे ने युक्ति प्रयोग की। उसने रेत लेकर उसकी गठड़ी बांध ली और पहरेदार को कहा, "मैं लंगर के लिए चीनी लेकर आया हूं, मुझे जाने दो।

अन्दर, लंगर में चीनी दे आऊं।'' युक्ति प्रयोग की लेकिन प्रयोग किस लिए कर रहा है कि गुरु के दीदार हो जाएं। जब भीतर गया, गुरु साहिब के पास पहुँच गया और रेत की गठड़ी नीचे रखी और रेत की गठड़ी को बार-बार माथा टेके जाए। सतिगुरु कहते, ''यह क्या कर रहा है?'' सुथरा कहता, ''हे सतिगुरु! मेरी पहली नमस्कार इस रेत की गठड़ी को है, जिसके कारण मुझे आपके दर्शन हुए। मुझसे रूष्ट न होना! मैं पहरेदार को असत्य बोल कर आया हूं कि लंगर के लिए चीनी लेकर आया हूं।'' गुरु साहिब कहते, ''तेरे असत्य में गुरु के दर्शनों की प्यास है।'' इसका अर्थ यह नहीं कि हर समय असत्य का सहारा लेना आरम्भ कर देना है लेकिन अगर जीवन-साथी गुरु-घर जाने से रोके तो नम्रता के साथ सामना भी किये जाए और युक्ति प्रयोग करके चलता भी जाए। युक्ति प्रयोग करना कोई गुनाह नहीं।



हर समय प्रयत्न करना कि जीवन-साथी भी इस लाईन पर आ जाए, लेकिन इसके विपरीत यह न हो कि आप उसकी लाईन पर चल पड़ो तथा आपके हृदय रूपी घर में से गुरु का वास निकल जाए। उसको अपने मार्ग पर लाने का यत्न करना है अपनी लाईन पर लाने का। यह भी उसकी एक लीला है, गुरमुख और मनमुख का मेल बहुत करवाता है। अगर स्त्री मानती है गुरु-घर को और कहीं बहुत ही अच्छे कर्म हों तो पति मिलेगा गुरु-घर को मानने वाला, नहीं तो दूसरे स्वभाव का होगा यदि पति गुरु-घर को मानता है तो पिछले कर्म बहुत ही अच्छे हों तो पत्नी मिल जाएगी गुरु-घर को मानने वाली, नहीं तो दूसरी

लाईन की मिलेगी। पिछले कर्म भी होते हैं।

एक पंडित था बहुत नाम जपने वाला और संसार को जोड़ने वाला। बहुत सम्मान था उसका लोगों में लेकिन उसकी पत्नी उसको गालियां निकालती थी। एक दिन किसी ने पूछ लिया, "पंडित जी! लोग आपका इतना सम्मान करते हैं, आपकी इतनी पूजा करते हैं, लेकिन आपकी पत्नी आपका इस तरह अपमान करती है!" पंडित कहने लगा, "ये मेरे पिछले कर्म हैं। पिछले जन्म में मैं 'कौआ' था और मेरी पत्नी 'गधी'। इसकी पीठ पर एक ज़ख्म था। कौए का स्वभाव होता है गन्दगी में चोंच मारनी। मैं अपने स्वभाव के कारण इसके ज़ख्म पर चोंच मारता था और यह बहुत दुःखी होती थी। आज यह मुझसे वे प्रतिशोध ले रही है।" सो पिछले कर्म भी साथ ही चलते हैं। शेष वह एक उसकी लीला भी है, जिसके सदका उसको पार लगाना है और शेष चाहिए, पुण्य कमाने वाले को कि पापी मनुष्य को जो पापों के मार्ग पर नरकों की ओर जा रहा है, उसको अपने पीछे लगाए। कहीं ऐसा न हो कि पुण्य कमाने वाला भी उसके पीछे लग जाए और उस जैसा बन जाए। ऐसा प्रयत्न करना है जीवन में, जीवन-साथी जैसा मर्ज़ी हो, दूसरे के हृदय रूपी घर में से और ईंटों के घर में से भी गुरु का वास न निकले। अगर घर में सुख-शान्ति है, पति-पत्नी का स्वभाव मिलता है तो यह भी कोई पिछले जन्म के संजोग हैं, कोई अच्छे कर्म हैं। इसके विपरीत एक दूसरे को जीने नहीं देते तो ये भी पिछले किए गए बुरे कर्मों के लक्ष्ण हैं। प्यार के साथ समझाने का प्रयत्न करो, समझ

जाए तो ठीक है, न समझे तो ठाठा-बागा करके गुज़ारे चले जाओ।

एक घर में गरीबी बहुत थी। सारे परिवार के पास एक ही कमरा था। घरवाली का पांच पाठ सुखमनी साहिब नित्य का नेम था लेकिन घरवाला कहता था, "मैं टी.वी. देखे बगैर नहीं रह सकता, तुमने तो भगवान के घर का ठेका लिया हुआ है!" पति ने संध्या को टी.वी. लगाकर बैठ जाना। पत्नी के तीन पाठ दिन में हो जाने और लगभग दो रह जाने। अब कमरा एक ही, उसमें टी. वी. और वहीं पर पाठ करना होता था। वह बीबी कहती, "मैं पलंग पर टी.वी. की ओर पीठ कर लेनी कि आप फिल्म देखे जाओ और मैं पाठ कर लेती हूं।" लेकिन इस प्रकार मन न जुड़ना। कानों में फिल्म की आवाज़ पड़नी। फिर कहती, "एक दिन मन में एक विचार आई कि मैं कानों में रूई देकर पाठ कर लिया करूंगी।" देखिए! पारिवारिक माहौल का सामना भी किया, कलेश भी नहीं डाला कि आप टी.वी. छोड़ दीजिए परन्तु अपना नेम भी नहीं छोड़ा। कहने से भाव है कि किसी भी प्रकार का ठाठा-बागा ढंग अपनाकर नम्रता के साथ चलते जाओ परन्तु रुकना नहीं।



एक बीबी का ज़िक्र है। उसके ऊपर मणिकरन साहिब वाले महापुरुष बाबा हरि नारायण जी की भी कृपा हुई। जब अभी बालिका थी 13-14 वर्ष की, वह गई थी अपने परिवार के साथ मणिकरन साहिब, दर्शन करने। महापुरुषों ने उस बालिका का हाथ देखते हुए कहा, 'श्री जपुजी साहिब पढ़ा करती हो?' उसने उत्तर

दिया, "जी हां।" महापुरुष कहते, "कितना समय लगता है?" कहती, "जी 12-13 मिन्ट लगते हैं।" पास ही में एक और लड़की बैठी थी। उसकी ओर इशारा करके महापुरुष कहते, "यह तो पांच मिन्ट में पढ़ लेती है और तुम 12 मिन्ट में पढ़ती हो?" वह कहती, "जी मुझे 12-13 मिन्ट लग जाते हैं।" इसका अर्थ यह नहीं कि बाणी शीघ्रता से पढ़नी है। यह एक अवस्था है। जब अवस्था ऊंची बन जाती है, **Automatically** समय कम लगता है।

महापुरुष उसको कहते, "जा बाहर लछमण झूले के इर्द-गिर्द चार चक्कर लगाकर आ और चार चक्करों में चार पाठ जपुजी साहिब के करके आ।" बालिका जब वापिस आई तो पास पिता भी बैठे हुए थे। महापुरुषों ने बालिका के पिता को कहा कि यह बालिका संतनी है, इसका विवाह मत करना! पिता कहते, "यह बचन वापस ले लीजिए, मैं इसको कैसे रखूंगा?" महापुरुष कहते, "बचन मानो, यह संतनी है, इसने सेवा करनी है।" लेकिन वह न माना। महापुरुष कहने लगे, "अच्छा, फिर तुम्हारी मर्ज़ी! कर ले, परन्तु इसको परेशानियां बहुत आएंगी।" महापुरुषां ने बालिका को पता नहीं किस हृदय से आशीश दी थी कि बालिका के हृदय में बाणी का वासा हो गया, बख़्शिश हो गई। समय के मुताबिक बालिका का विवाह हो गया। उसका मायके घर नेम था 2½ बजे का तथा जब ससुराल जाकर 2½ बजे उठी कि करुं स्नान ओर पढ़ूं सुखमनी साहिब तो सास क्रोध में कहती, "यहां नहीं चलेगा तुम्हारा 2½ बजे उठना और न ही

सुखमनी साहिब पढ़ना।'' अब क्या करे? लड़े सास से? एक-दो बार समझाया कि मान जाएंगे। जब अगले दिन उठी, फिर काम गर्म। तीसरे-चौथे दिन सास ने कह दिया, ''अगर तेरे कमरे की बत्ती छः बजे से पहले जगी, रोशनी हुई तो तुझे मायके भेज देना है।'' अब बताइए, साधक हो, मार्ग पर चल रहा हो, खुराक लेने वाला हो 2½ बजे, यह उसको ही पता है कि कितना उसके लिए कष्ट है! कई तो यहीं रुक जाते हैं। अब अगर वो बालिका 2½ बजे उठती है तो घर में कलेश पड़ता है। विवाह भी नया है। कोई क्या कहेगा, तुमने 10 दिन में ही कलेश डाल दिया? अब उस बालिका ने दो कार्य किए। एक तो श्री सुखमनी साहिब ज़ुबानी (कंठ) स्मरण करनी आरम्भ कर दी और एक बैटरी मंगवा ली कि जितनी देर ज़ुबानी (कंठ) नहीं होती पाठ तब तक बैटरी से कर लूंगी, लेकिन 2½ बजे का नेम नहीं छोड़ना। उसने उठना 2½ बजे और बैटरी के साथ जो नेम कर लेना और फिर बाद में स्नान। अब स्नान लेट भी है, विवशता हो गई परंतु जपने के कार्य को नहीं छोड़ा।

काफी वर्ष इस बालिका ने इस प्रकार ही गुज़ारे। पारिवारिक माहौल बाधा डालता रहा लेकिन नम्रता भी रखी और सांई का नेम भी नहीं छोड़ा। क्या घटित हुआ इनके घर? कुछ वर्ष बाद सास को लकवा हो गया। इससे यह भी दिशा लेना कि जो बाधा डालते, उसको डर कर रहना चाहिए। जिस दिन बाधा डालने वाले के पुण्य समाप्त हो गए, भगवान की ओर से परचा पड़ेगा ही पड़ेगा! वह तब तक ही बचा हुआ है, जब तक उसके

पिछले पुण्य हैं। जैसे-जैसे बाधा डालता है, पुण्य जाते हैं। जब तक हरणाखश के पुण्य थे, बचा था, फेंका पहाड़ से, फेंका अग्नि मे, फेंका जल में, बड़ी स्पीड से समाप्त हो गए। फिर ?

*"हरणाखसु दुसटु हरि मारिआ प्रहलादु तराइआ।। "*

(अंग ४५१)

इस प्रकार जो बाधा डालता है, तब तक ही बचा है जब तक पुण्य हैं। जितनी बाधा की गति बढ़ती जाए, पुण्य उतनी ही स्पीड से समाप्त होंगे। हम कहीं बाधा डालने वालों की गिनती में न आएं! हमारे घर में कोई साधना करने वाला हो तथा हमको कोई बाधा नहीं डालनी चाहिए। अगर हमारे मार्ग में कोई बाधा डाले, उसका सामना नम्रता से किये जाएं लेकिन साधना न छोड़ें।



उस बच्ची की सास को लकवा हो गया लेकिन उस बालिका की अवस्था थी, हृदय में किनका (कण) नहीं आने दिया कि मुझे रोकती थी तो ही लकवा हो गया है! उसने पूरी सेवा की, गन्दगी भी धोई, जंगल-पानी भी, पेशाब भी करवाना, सब सेवा करनी। भीतर यह नहीं आने दिया कि मेरे करके यह सब, यही कि प्रकृति की ओर से जो घटित हुआ है। पूर्ण सेवा की सास की नम्रता के साथ।

अगर प्रहलाद का इतिहास पढ़ो तो उसने भी कहा था, "परमेश्वर! मेरे पिता का उद्धार कर देना।" परमेश्वर ने कहा था, "प्रहलाद! तू भक्त है, तू एक पिता की बात करता है? मैं तेरी 21 पीढ़ियों का उद्धार करूंगा।" भाव कि भक्त ने अपना बुरा करने वाले का भी भला मांगा

है। सास की पूरी सेवा की उस बालिका ने। एक दिन सेवा करते हुए, बालिका से गमला टूट गया। सास लेटे हुए ही कहती, ''गमला-गमला! मैं तुझे आशीर्वाद देती हूं कि भगवान तुझे सोने के गमले दे! तू मेरी इतनी सेवा करती है!'' वह बालिका कहती सास को, ''बुज़ुर्गों की आशीश लगती, स्वीकृत होती है, मुझे यह आशीश मत दीजिए, मैंने खाना है सोने को? अगर आशीश देनी है तो अपनी झोली फैलाती हूं, आप मेरी झोली में श्री सुखमनी साहिब का गुटका डाल दीजिए! आपकी बाधा का मैं सामना तो करती रही हूं।''

''लेकिन मैं चाहती हूं मुझे आपसे आशीश मिल जाए श्री सुखमनी साहिब जी की और मेरा रंग (नेम) और बढ़ जाए।'' सास कहती, ''मैंने नहीं डालना, श्री सुखमनी साहिब का गुटका, मैंने तो यही आशीश देनी है!'' वह बालिका कहती आगे, प्रेम से, ''अगर आपने मेरे अनुसार आशीश नहीं देनी तो मैंने भी आपकी सेवा नहीं करनी! मुझे नहीं चाहिएं, सोने के गमले, मेरी झोली में श्री सुखमनी साहिब का गुटका डाल दीजिए!'' जब उसने फिर वही बात की तो सास ने हाथ सुच्चे करवाए और कहा, ''ला फिर सुखमनी साहिब का गुटका।'' सास ने वह गुटका उसकी झोली में डाला और उसी बाधा डालने वाली के मुंह से निकला, ''गुरु नानक करे, इस सुखमनी साहिब से तू हमेशा जुड़ी रहे!'' कुछ समय बाद सास चढ़ाई कर गई। आज उस बीबी को अनेकों को पार लगाने वाली अवस्था बाबा नानक जी ने बख्श दी है।

ये तो बातें सांसारिक हैं। अगर हम इतिहास की तरफ दृष्टि घुमाएं, बेनी भगत की घरवाली भी कठोर थी। ग़रीबी भी थी। यहां तक कि घरेलू माहौल से तंग आकर, जब अभी तक भक्त नहीं थे बने, आत्महत्या करने चल पड़े थे कि आज मैंने मर ही जाना है! मार्ग में महापुरुषों से मेल हो गया, उन्होंने मार्ग दिया। कहा, ''आत्महत्या करने से शरीर समाप्त हो जाएगा लेकिन आत्मा तो कलपेगी ! भगवान की भक्ति की ओर परिश्रम कर।'' जब भक्ति आरम्भ की, घरवाली परेशान करे, ''ला कुछ।'' उसने असत्य बोला, ''मैं राजा के दरबार में कथा करता हूं। जिस दिन पड़ा भोग उस दिन सभी कुछ जो भेटें (उपहार) आदि, मिलेंगी, वे घर लेकर आऊँगा।'' 10-15 दिन, महीना गुज़रा। इश्क लगा था, जाना और बैठ जाना सिमरन में। एक दिन घर आया और घरवाली कहने लगी, ''तेरे 'मर जाने' राजा की कथा का भोग कब पड़ना है?'' मुंह में से गालियां, क्या बर्तन, क्या पीपे, सब बाहर फेंकने आरम्भ कर दिए। ''मर गया तेरा राजा और साथ में तू भी, अब घर में तब दाखिल होवीं, जब कुछ लेकर आयेगा!'' उस दिन मन में बहुत विलाप था। क्यों? कलेश में से निकला था, विवाद नहीं था किया, नेम भी नहीं छोड़ा। उसी दिन आप परमेश्वर राजा का रूप धारण करके आया। लेकिन बताओ, पहले टाईम कैसे गुज़ारा? भाई गुरदास जी लिखते हैं:

*''......वलु छलु करि कै झथ लंघावै।''*

(वार १०:१४)

यदि हरिचन्द की पत्नी की बात ले लें उसको राजा हरिचन्द रोकता था। क्या उसने नेम छोड़ा? नम्रता के साथ सामना भी किये गई कि सो गए हैं तथा चले जाना सत्संग पर, पता नहीं कितने महीने जाती रही कि आप ही जिस दिन पता चलेगा देखा जाएगा, जिसके दर पर जाती हूं, वह आप रक्षा करेगा और फिर रक्षा की भी।

अगर गुरु नानक साहिब के जीवन की ओर दृष्टि डालें, जब चले हैं संसार को पार लगाने, घरवाली ने नहीं रोका। बहन भी बाधा नहीं बनी। लेकिन एक शरीर बाधा बन गया। उसने तो निखट्टू भी कहा। कहा, "जहां भी भेजता हूं, नुक्सान करके आता है।" बाधा ने क्रोध का रूप भी धारण किया। जिह्वा से क्रोध हाथों पर भी आया और थप्पड़ भी मारा पर गुरु नानक साहिब ने थप्पड़ का सामना दूसरे रूप में नहीं किया। नम्रता के साथ दूसरी गाल भी आगे कर दी, "पिता जी, इधर भी मारिए।" लेकिन अपना लक्ष्य नहीं छोड़ा। आखिर में पहचाना भी पिता ने और कहा, "नानक! मैंने तुझको पहचाना न, थप्पड़ भी मारा, क्या मुझे दरगाह में स्थान मिल जाएगा?" गुरु साहिब कहने लगे, "यह कौन सी बड़ी बात है?" उनके श्वास होते हुए ही दिखा दिया कि दरगाह में कितने सम्मान से आपकी प्रतीक्षा हो रही है।



तीन संसार हैं, पारिवारिक, धार्मिक और सांसारिक। पारिवारिक संसार में नम्रता से सामना करना है। बाहरी दुनिया में कोई 100 बार नाजायज़ करे, 101 वीं बार तुझे भी गुरु के हुक्म के अनुसार खुशी है कि कुछ दिन सहन

कर, अगर तेरे साथ 100 बार नाजायज़ हो जाए, 101 वीं बार तेरे लिए धर्म है शस्त्र उठाना। एकदम नहीं, कुछ देर समझा और चला। लेकिन पारिवारिक माहौल में कुछ Final नहीं। नम्रता के साथ ही सामना किये जा और काम चलाये जा। धार्मिक संसार में क्रोध लिखा ही नहीं। पारिवारिक दुनिया में नम्रता के साथ सामना किये जा तथा चलाये जा, चाहे ठाठा-बागा करके चलाये जा। *यह पांचवीं युक्ति है कि पारिवारिक माहौल की बाधा का नम्रतापूर्वक युक्ति से सामना किये जाए लेकिन साधना न छोड़े।*

# छठी युक्ति

*6. साधक बन्दे (व्यक्ति) के लिए छठी युक्ति है कि ध्यान रखने योग्य बात, ''भगवान वाली साईड को जो भी कार्य करे, उसमें कर्तापन न आए, सेवक बनकर करे!*

कोई अच्छा कर्म, कोई पुण्य ऊपर आए तो शौक पैदा होता है, मैं भी अमृत वेला उठूं, मैं भी कीर्तन का श्रवण करूं, गुरबाणी कठस्थ करूं। मन करता है कि दरबार साहिब जाकर संगतों के जूठे बर्तन साफ करूं। कोई अच्छा कर्म ऊपर आए तो धार्मिक कार्य की ओर मनुष्य अग्रसर होता है। इन कार्यों की भूख लगती है, प्यास लगती है। इस जीवन में धार्मिक लग्न लगना बहुत बड़ी कृपा है। बड़े अच्छे भाग्य, अगर भीतर शौक जागृत हो, पाठों की रौलें देने का, सेवा का, सिमरन का, कीर्तन का, सुखमनी साहिब के पाठ करने का। लेकिन इस धार्मिक लग्न लगने के बाद दो लाईनें हैं, दो भक्तियां हैं।

एक है 'अहं भक्ति' और एक है 'शरणागत भक्ति'। अहं भक्ति क्या है-धार्मिक कार्य करने आरम्भ हो गए जीवन में लेकिन उनमें 'मैं' आ गई। शरणागत भक्ति क्या है? धार्मिक कार्य करने आरम्भ हो गए जीवन में, लेकिन करने के बाद भी शरण है, ''तूने किया है, तेरी कृपा हुई है।'' कइयों के जीवन में भक्ति बहुत होती है, अमृत वेला होता है, पांच-छः घण्टे का सिमरन होता है। जिसको सिमरन बन्दगी की दात (देन) मिल गई लेकिन

सोझी (समझ) नहीं, उसकी बातों में से 'मैं' की, अभिमान की बदबू आएगी कि मैं अमृत वेला को उठता हूं, मेरा इतना सिमरन है, बन्दगी है, मैं अच्छा कीर्तनिया हूं। बन्दगी की दात (देन), अमृत वेला की दात, नाम सिमरन की दातें, अगर कोई कहे, मेरी बुद्धिमता से या उद्यम से, नहीं! यह सब उसकी कृपा है!

*''जिस नो तेरी मिहर सु तेरी बंदिगी।।''*

*(अंग ९६१)*

अर्जुन ने कहा था, कृष्ण जी को ''मेरे जैसा प्यारा भक्त कोई नहीं, मैं आपको बहुत प्रेम करता हूं।'' कृष्ण जी ने कहा था कि यह मेरी ही कृपा जान, मेरी मेहर जान कि मैंने तुझको यह प्यार बख़्शा है। मैं चाहूं तो अभी तुझ पर माया का पर्दा डाल दूं। कहने से भाव, आपके जीवन में, अमृत वेला हो, बन्दगी की दात प्राप्त हो, सेवा हो, कभी भी मन में यह न लाना कि यह सब मेरा उद्यम है। यह ही मन में बसाना कि यह सब कुछ मुझसे वो 'वाहिगुरु' करवा रहा है, उसकी कृपा है।

कइयों के जीवन में हस्त-सेवा बहुत होती है। कई शरीर तौर पर सेवा बहुत करते हैं। सेवा करो, लेकिन अगर की हुई सेवा थाइं डालना चाहते हो, भूल कर भी अभिमान न कर बैठना! अभिमान आने से पहले इतनी बात सोच लेना कि यदि गुरु चाहे तो शरीर को पिंगला भी बना सकता है, लूला-लंगड़ा भी बना सकता है। जिस शरीर के बल से सेवा कर रहा है वो किसने दिया ? निरंकार ने। अगर उसके दिए हुए शरीर से सेवा कर रहा है तो काहे का अभिमान? और जितने भी धार्मिक

कार्य, सेवाएं करते हो, कोई कीर्तन सिखाता है, कोई पाठ सिखाता है, कोई किसी और ढंग से सेवा कर रहा है, कार्य तो सभी धार्मिक हैं, लेकिन करके कर्तापन न आ जाए,

"मैं न होता तो इतनों ने कीर्तन नहीं था सीखना। मैं पाठ न बांटता, तो इतनों ने पाठ नहीं थे करने! मैं न होता तो इतनी ग़रीब बच्चियों के विवाह नहीं थे होने।" जितने भी भगवान के कार्य हैं, सेवक बनकर करोगे तो भाग्य लगेंगे। किसी ने अगर 100 बच्चों को कीर्तन सिखाया और भीतर यह आ गया कि मैंने 100 बच्चों को कीर्तन सिखाया है तो कार्य तो धार्मिक ही है लेकिन अहं भक्ति कर रहा है। और अगर यह कहे कि हे वाहिगुरु! शुक्र है, मुझसे 100 बच्चों को कीर्तन सिखाने की सेवा ली है तो फिर ठिकाने है। आम कच्चा व्यक्ति कर्ता बनकर बैठ जाता है। कार्य तो भगवान वाली साईड के हैं, कार्य तो धार्मिक हैं, लेकिन अगर ज्ञान नहीं तो कर्ता बन गया। कर्ता कर्ता ही है और मनुष्य मनुष्य ही है। वैसे भी साहिब, साहिब रहे हमेशा और व्यक्ति व्यक्ति ही।



कोई दर्ज़ी कमीज़ बनाए, वह 'कर्ता' है उस कमीज़ का। कमीज़ उसने काटी, सिलाई की, बनाई। जिसकी कमीज़ है जब उसको दे दी, सिलाई ले ली, आप साथ नहीं गया, आप अपनी दुकान में ही रहा या घर में ही है। लेकिन 'उस' कर्ता का अन्तर है। उसने जो भी चीज़ बनाई है, आप साथ बसा है। हम वस्तु बनाने तक सीमित हैं, उसके बाद कार्य समाप्त। भगवान ने जो कुछ बनाया है, उसमें आप स्वयं बस गया है। तुम्हें-हमें

बनाया तथा आप बस गया। पशु-पक्षी बनाए, साथ में आप बसा है। बनस्पति बनाई और उसमें भी आप बसा है। जितनी बनस्पति है, इसमें कर्ता है तो ही बढ़ती है। उस कर्ता ने जो कुछ भी बनाया, भीतर स्वयं बस गया।

कोई घुमार बर्तन बनाता है, वह बर्तन का कर्ता है लेकिन जब बर्तन दे दिया, साथ में आप नहीं जाता। भगवान जितने बर्तन बनाता है, उसमें साथ स्वयं वास करता है।

आपने शायद कभी नोट किया हो, कभी साधना में बैठे होवें, सिमरन में बैठे होवें, कई बार मच्छर परेशान करता है बार-बार। वह जितनी बार भी बैठेगा, वहीं पर बैठेगा या हाथ पर या गाल पर तथा कभी दाहड़ी पर नहीं बैठता तथा छोटा सा मच्छर, उसमें भी कर्ता स्वयं है, इसलिए उसको चेतनता है। कहां रक्त है, मैंने उसको पीना है, उसके भीतर भी चेतनता भरी है सोझी (समझ) भरी है।

कुछ समय की बात है। दास अपने घर, गुरु साहिब के कमरे के बाहर बैठा था। भीतर भोग के लिए थाल रखा था। हुक्म है, बाहर जपुजी साहिब का पाठ करो, भीतर जितनी देर थाल लगाया है, कोई 7½ बजे का टाईम था, हल्की सी रोशनी होगी। दास ने देखा, अंधेरे में भी भूरे रंग की चींटियां चली आयें, लाईन बनाकर, उसके बाद 4-5 ईंच के फासले पर पीछे और, उसी लाईन पर पीछे 8-10 ईंच के फासले पर और। जिधर आगे वाली जा रही थीं, उधर भी। सोचा, "हे भगवान! तूने इतनी छोटी सी चींटी में भी चेतना भरी है।" अंधेरा

भी है लेकिन उनको पता है कि प्रथम पंक्ति वाली कहां जा रही हैं, पंक्ति में ही सब चली जा रही हैं। यह सब क्यों? क्योंकि कर्ता ने जो भी बनाया है, भीतर स्वयं शामिल है। हम कोई वस्तु बना लें, जब उसको बेच देते हैं तो साथ में स्वयं नहीं जा सकते। इसलिए यह सोझी भीतर बसाई, साहिब साहिब ही है, मनुष्य-मनुष्य ही है।

गुरसिक्खी सूक्ष्म है। हरेक के पास कोई न कोई गुण अवश्य है। किसी के पास अमृत वेला है, किसी का नित्तनेम बहुत है, कोई निवस्त्र का तन ढकता है, कोई भूखे का पेट भरता है। कोई कीर्तन सिखाता है, कोई बच्चों को बाणी कंठस्थ करवाता है। यह सब कुछ करके 'मैं' आ गई, 'कर्तापन' आ गया तो जैसे कागज़ पानी में गल जाता है, तेरे किए हुए भले कार्य भी गल जाएंगे। सब कुछ करके निमाने, निताने बनकर रहना है, सेवक बनकर रहना है, सब कुछ थाइं पड़ जाएगा। तान होते निताना, मान होते निमाना। निमाना बनकर रहना है। कभी भी कोई भला कार्य करके यह मत कहना, मैंने फलाना कार्य किया है। यही कहना, गुरु ने कृपा करके मुझसे यह कार्य करवा लिया है।

कई ऐसे हैं जिन्हें अभिमान घेर लेता है। मैं इतने बजे उठता हूं, मैं 4-4 घण्टे कीर्तन सुनता हूं, मैं दुखियों की सेवा करता हूं। अगर रस लेना चाहते हो, अगर चाहते हो मंज़िल तक पहुंचना तो सब कुछ करके गले पल्लू डाल कर कहा करो, "सतिगुरु! शुक्र है, मुझ ग़रीब को अमृत वेले उठा दिया है। शुक्र है, मुझ जैसे अकृतघ्न का इतना समय अपने चरणों में बिताया है।" सब कुछ

करके, कमाइयां (किए गए अच्छे कार्य) करके, अगर इस प्रकार निताने और निमाने बनकर अरदास करोगे, देखना! कितना रस आता है! जीवन में कहीं ऐसा न हो कि अभिमान का पर्दा पड़ जाए, गुरु से दूर हो जाएं! इस 'मैं' को, अभिमान को पास नहीं आने देना! अगर यह आ गया तो सब कुछ नष्ट हो जाएगा, किए हुए पुण्य भी जल जाएंगे।

संत बेअन्त सिंह जी एक बार, बाबा नंद सिंह जी के साथ मेल हुआ। कहते, "मैंने 30 वर्ष तपस्या की है लेकिन रस नहीं आया। मन सहज में नहीं आया।" बाबा जी कहते, "एक बार फिर कहना!" वे फिर कहने लगे, "मैंने 30 वर्ष तपस्या की है लेकिन रस नहीं आया।" बाबा जी ने 2-3 बार कहा कि फिर दोहराना! जब बेअन्त सिंह जी के मुंह से 'अभिमान' वाले, 'मैं' वाले बचन सुने तो बाबा जी कहने लगे, "रस कैसे आए, एकाग्रता कैसे आए, आनन्द कैसे आए? आपने तपस्या तो अवश्य की है लेकिन 'मैं' की गन्दी पूँछ साथ लिए फिरते हो कि मैंने 30 वर्ष तपस्या की है। जब तक 'मैं' साथ है रस नहीं आएगा। जब तक पल्लू में 'मैं' बांधी है 'तू' कैसे बसेगा?"

थाली में 36 प्रकार के व्यंजन परोसे हों, उसको 'विष्टा' वाला हाथ लग जाए, वह किसी भले पुरुष के खाने के योग्य नहीं रहता। आपने पालथियां (चौकड़ियाँ) लगाईं, अमृत वेला को उठे, नाम का जाप किया, तपस्या की, इतने साधन किये, लेकिन विष्टा वाली 'मैं' साथ में लगाकर बैठे हो। रस कैसे आए? केवल यही कह दो कि

उसकी कृपा से इतना समय हो गया है, अवश्य रस की प्राप्ति होगी। कुछ समय बाद उनका फिर मेल हुआ और वे बाबा जी के चरणों पर ढह पड़े। कहते, कि 'मैं' के कारण बात ठिकाने नहीं लग रही थी। जीवन में से 'मैं' को निकालने से आनंद आ गया है।

भाई नन्द लाल की पंक्तियां हैं:

*जिस ने कीती ज़रा बेअदबी! एस गली विच सहीओ!*
*जे मनसूर चढ़ाइआ सूली, फेर ना सानूं कहीओ!*

वह कौन सी बेअदबी है, जिसके कारण इतनी बड़ी सज़ा मिलती है, जिसके कारण निरंकार इतना रुष्ट हो जाता है? सबसे बड़ी अपमानजनक बात यही है, 'कुछ बन जाना'! कोई दान करके कहे, मुझ जैसा दानी नहीं, बड़ी बेअदबी कर रहा है। किसी का 3-4 बजे का नेम है, कोई सुबह उठकर, नेम पूरा करके कहे, मेरे जैसा नेमी कोई नहीं, बड़ी महान बेअदबी है। जो कुछ बन जाता है, मेरे जैसा परोपकारी कोई नहीं, मेरे जैसा दानी कोई नहीं, मेरे जैसा दयालु कोई नहीं, मेरे जैसा नेमी कोई नहीं, उस पर परमेश्वर की कभी कृपा नहीं होती। जो मनुष्य अवगुण अधिक करता है, उसके भीतर एक स्थान बना होता है कि मैं अवगुणहारा हूं, उसको अभिमान कम आता है, परन्तु जो अच्छे कार्य करे उसको बचकर रहना पड़ता है। हमेशा नेक मनुष्य को अभिमान अधिक आता है। इससे बचोगे तो ही प्राप्ति होगी। पता नहीं क्या चक्कर है, कामी बख़्शे गए, लोभी बख़्शे गए, पापी बख़्शे गए, विकारी बख्शे गए लेकिन अभिमान वाले को परचा अवश्य पड़ता है।

महापुरुषों को किसी ने पूछा, "अभिमान वाले को क्यों नहीं बख़्शा जाता?" बाबा जी कहने लगे, "अभिमान वाला भगवान का शत्रु बन जाता है कि 'तू' कुछ नहीं, 'मैं' हूं।" इतिहास से ही उदाहरण ले लें, अभिमानी तब तक नहीं बख़्शे गए, जब तक वे मन के कारण ढह नहीं गए। सत्ता और बलवंडा (गुरु अरजन साहिब के समय) को जब अपने रागी होने के गुण का मान हो गया, गुरु साहिब ने उनसे मुंह मोड़ लिया। भाई नन्द लाल जी इतने बड़े विद्वान थे कि औरंगज़ेब जैसे बादशाह तक भी उनकी विद्वता का लोहा मानते थे, लेकिन गुरु गोबिन्द सिंह जी ने उनके इतने गुणवान होते हुए भी बख़्शिश तब तक नहीं की जब तक वे मन के कारण झुक नहीं गए।



मनुष्य के पास गुरु का बख़्शा हुआ कोई भी गुण हो, अगर उसको उस गुण पर मान हो गया तो गुरु को उस मनुष्य की कोई परवाह नहीं। गुण होने बहुत आवश्यक हैं लेकिन अभिमान-रहित। अगर कोई कथावाचक गुरु के बख़्शे गुण के द्वारा अपने आप को बड़ा ज्ञानी समझे, ऐसा कथावाचक हमेशा गुरु से डर कर रहे कि मूर्ख झीवर से गीता के अर्थ करवाने वाले गुरु साहिब को हमारे कथा के गुण की क्या परवाह? कोई गरीबों की, ज़रूरतमन्दों की सहायता करता हो, डर कर रहे भगवान से कि वह चाहे तो उसे मांगने वालों की पंक्ति में खड़ा कर सकता है। मन को सोझी देनी है कि मैं तो खाली हाथ ही आया था और खाली हाथ ही जाना है। निरंकार की दी हुई माया में से अगर उसको कुछ अर्पण कर रहा

हूं तो कैसा अभिमान? प्रयत्न करना! यह हमारा जीवन सेवक बनकर ही व्यतीत हो जाए! अगर धर्म के मार्ग पर चले हो तो तुम्हारे गुणों में कहीं कर्तापन न आ जाए! जो गुणों के होते हुए अभिमानी हो जाए, मेरे जैसा कोई नहीं, वह आज गिरा नहीं तो कल तो गिरेगा ही नहीं तो महीने को, वह नीचे गिरेगा ही गिरेगा! जब तक पुन्य हैं, चलता जाता है, जब वे जलते हैं, गिर पड़ता है। अगर कर्तापन आ जाए इतनी स्पीड होती है, पुण्य जलने की। जब जल गए फिर वहीं ही।

महापुरुष एक मिसाल देते थे कि एक साहूकार अश्व पर सवार होकर आ रहा था। ध्यान न दिया कि साधु बैठा है। साधु ने श्राप दे दिया, "जा तुम्हारा अश्व मर जाए!" अश्व मर गया। साधु चेलों को कहता, "देखा मेरा बचन?" साहूकार ने जाकर नया अश्व ले लिया। अगले दिन वह साहूकार फिर आया। साधु ने फिर कह दिया, "जा तेरा अश्व मर जाए!" अश्व मर गया साहूकार तीसरा अश्व ले आया। साधु ने फिर कह दिया, "जा तेरा अश्व मर जाए!" वह भी मर गया। चौथे दिन साहूकार एक और अश्व ले आया। साधु ने फिर कहा, "जा तेरा अश्व मर जाए!" लेकिन अब नहीं मरता! साधु के चेलों के मन में बात आ गई थी कि यह बात जो कहता है, हो जाता है लेकिन अब नहीं हो रहा। अब क्यों नहीं हो रहा? क्योंकि जितना कोटा था, तूने कर्ता बनकर समाप्त कर लिया है।

कई रिद्धियों-सिद्धियों, चमत्कारों में पड़ जाते हैं। किसी को वर दे दिया। किसी को श्राप दे दिया, किसी का

कार्य बिगाड़ दिया और किसी का संवार दिया। यह क्या है? कर्तापन। कर्ता बनने से कोटा समाप्त होता जाता है, बात ठिकाने नहीं लगती, मंज़िल पर नहीं पहुंच पाते। कोई सेवक बने, संसार को बांटने वाला बन जाता है। कर्ता भाव आ जाए, बहुत स्पीड से पुण्य जलते हैं।

एक और साधु की वार्ता है जिसको इतनी भक्ति करके सेवक बनने का ढंग नहीं आया और नीचे गिर पड़ा। उसने एक छड़ी रखी थी और फुरना बनाया था कि जब यह छड़ी हरी हो जाएगी तो मैं सोचूंगा, मेरी पूर्ण समाप्त हो गई है। जुड़ता था और छड़ी हरी होनी आरम्भ हो गई। उसे विश्वास हो गया कि मेरी भक्ति सफल हो रही है। एक दिन एक राजा शिकार खेलने आया उस जंगल में। साधु के दर्शन करते ही उसका भी अच्छा कर्म जागृत हो गया। साधु को कहता, "मुझे भी नाम की दात दीजिए।" साधु कहता, "तुम भी बैठ जाओ, पालथी मार कर, माला पकड़ ले और मेरी तरह ही छड़ी रख ले। देख! मेरी छड़ी हरी होनी आरम्भ हो गई है।" राजा ने ऐसे ही किया। कुछ दिन बीते। एक गृहस्थी जोड़ा मार्ग भूल कर, भटकता-भटकता साधु की कुटिया के पास पहुंच गया। उन्होंने सोचा, संतों, महापुरुषों से बड़ा कौन सा सहारा है? लेकिन साधु के मन में इतना अहंकार भर गया था अपनी भक्ति का कि मुझ जैसा भक्त कोई नहीं। उनके साथ बहुत कटुता से बोला। कहने लगा, "आपको नहीं पता कि मैं तपस्या कर रहा हूं? मुझे ऐसे ही परेशान कर रहे हो, मेरी भक्ति को संसार मानता है। इसके विपरीत जब वही गृहस्थी जोड़ा

राजा के पास गया, राजा ने बड़े सम्मान के साथ उनको बिठाया, जल-पानी छकाया, अपनी कुटिया में रहने को स्थान दिया। उस गृहस्थी जोड़े की रात्रि आराम से व्यतीत हो गई। अगले दिन जब वे चले गए तो राजा ने सोचा कि अब फिर बैठता हूं बन्दगी में, तो क्या देखता है कि छड़ी का रंग हरा हो गया था। वह बहुत आश्चर्यचकित हुआ। साधु के पास गया। साधु भी बहुत आश्चर्यचकित हुआ। उसने सोचा कि मेरी छड़ी भी हरी हो गई होगी क्योंकि मुझे तो बहुत समय हो गया है लेकिन क्या देखता है जितनी हरी हुई थी अब उतनी भी नहीं रही। कारण क्या था? भक्ति के कारण अभिमान आ गया था, "मेरे जैसा भक्त कोई नहीं।" दूसरों को तुच्छ समझना आरम्भ कर दिया था।



गुरु गोबिन्द सिंह जी भी भेष बदलकर कई बार यह देखने जाया करते थे कि जिनको मैंने सेवा दी है, कहीं उनकी सेवा में कर्तापन तो नहीं आ गया? सत्रह लंगर चलते थे गुरू गोबिन्द सिंह जी के। एक दिन भेष बदलकर देखने गए कि कौन लंगर कर्ता बनकर चला रहा है और कौन सेवक बन कर? गए, करमंडल आगे किया, "बड़ी भूख लगी है, परशादा!" सुबह का समय था। उत्तर मिला, "ओए, तुमको 11:30 बजे ही भूख लग गई है! जब लंगर बनेगा, पहले हम लोगों में बांटा जाएगा, फिर तुम जैसों का नम्बर लगेगा।" आप ही अनुमान लगा लीजिए, कर्तापन है। दूसरे की ओर करमंडल किया, उसके भी शब्द बड़ी 'मैं' वाले, अभिमान वाले थे। क्या जानता था कि कलगियों वाले स्वयं हैं?

अब भाई नन्द लाल जी के पास गए। करमंडल आगे करके कहने लगे, परशादा मिलेगा?" वे कहने लगे, "जी दाल बन रही है, गेहूँ गूंथा जा रहा है, बस पांच मिन्ट बैठ जाइए, अभी तैयार हो जाता है।" इसे कहते हैं, सेवक जैसे गुण। अगले दिन विशेष गुरु साहिब ने दीवान में बताया कि हम कल भेष बदलकर गए थे निरीक्षण करने। केवल एक सेवादार भाई नन्द लाल सेवक बनकर लंगर चला रहा है। शेष सबके हाथ जुड़ गए, "सच्चे पातशाह! हमें सोझी (समझ) नहीं थी, आप आए हो!" गुरु साहिब कहने लगे, "अगर मुझसे ऐसा व्यवहार करते हो तो संगत के साथ भी ऐसे ही कड़वे बचन बोलते होंगे।" सभी ने प्रण किया कि हम भी आगे से सेवक बनकर लंगर चलाएंगे। गुरु साहिब आपसे भी जो धार्मिक सेवाएं लेते होंगे, अवश्य निरीक्षण करते होंगे। अगर भगवान मार्ग पर चले हो, अगर शौक है मंज़िल पर पहुंचने का, इस बात का ध्यान अवश्य रखना कि भगवान की ओर जितने भी नेम करो, इनमें कर्तापन नहीं आना चाहिए, सेवक बनकर करो। कर्तापन आ जाए तो बर्तन भरता भी है और बह भी जाता है। अर्थात मनुष्य द्वारा किए गए अच्छे कार्यों से पुण्य एकत्रित होते और बाद में किए गए बुरे कार्यों के कारण नष्ट हो जाते हैं।

बाबा जी का बचन है, थोड़ा कठोर है, ध्यान दीजिए; एक तो होती है रावण-भक्ति और एक होती है नानक-भक्ति। दोनों में आकाश-पाताल का अन्तर है, है तो दोनों ही अराधना पर बहुत अन्तर है। रावण-भक्ति क्या है? मुझे कोई मार नहीं सकता, मैं ही मैं हूं। कर्तापन। हरनाखश ने

कई प्रकार की कठिन साधना के साथ, समाधि लगा कर, कई-कई वर्ष आराधना की, भक्ति की, लेकिन कर्तापन आ गया, "जल-हरनाखश, थल- हरनाखश मेरी स्तुति हो।" यह है हरनाखश भक्ति। एक है नानक-भक्ति। गुरु नानक सृष्टि के मालिक हैं, जिसको जो चाहें दे सकते हैं, जिससे जो चाहें ले सकते हैं।

सर्वकला हथेली में हैं, लेकिन गुरु ग्रंथ साहिब '੧ੴ' से लेकर 'अठारह दस बीस' पढ़ लीजिए, कहीं भी अपने नाम के साथ 'हउं' अक्षर नहीं लगाया। यही कहा है, 'नानक नीच, नानक दीवाना, नानक दास, नानक सग।' सग का अर्थ है कुत्ता। वे शब्द जो हमारे मुंह पर भी नहीं आ सकते, वे अपने लिए प्रयोग किए, जबकि आप् निरंकार हैं। अच्छे भाग्य के कारण अगर धार्मिक लग्न लग गई है, तो यत्न करो कि नानक भक्ति की जाए! गुरु नानक साहिब तीन हिस्से दरगाह में से नम्रता लेकर आए और इस संसार को नम्रता बांटी। अब स्वयं अनुमान लगा लीजिए कि जिसके पास नम्रता नहीं, क्या वह गुरु नानक का सिक्ख कहलाने का अधिकारी है?

सिक्खी की जड़ है नम्रता। सिक्खी का बीज़ है नम्रता। सिक्खी की नींव है नम्रता। अगर नींव ही कमज़ोर है, जितनी भी ईमारतें बनाओगे, सबको खतरा है। अगर नींव पक्की है, फिर जितने चाहो महल बनाओ। अगर चाहते हो कि की गई सेवा-सिमरन को सफल बनाना, अगर सहज की इच्छा है, आनन्द की अवस्था को प्राप्त करना चाहते हो, अगर चाहते हो बर्तन को नाम रूपि अमृत से भरना, न गुणों का मान करो, न बन्दगी

का। सब कुछ होते हुए भी मन में विचार होना चाहिए कि मेरे जैसा अवगुणहारा कोई नहीं, मेरे जैसा नीच नहीं, मेरे जैसा कोई पापी नहीं। जो गुणों के होते हुए अवगुणहारा बनकर रहता है, वो तो अंक प्राप्त कर लेता है अर्थात गुरु-घर में स्थान प्राप्त कर लेता है और जो अभिमानी हो जाता है, वह अपनी कमाई (अर्थात किए गए पुण्यों) को बहा देता है। जो यह एकाग्रता बनाकर रखता है, नम्रता में रहता है, वही मंज़िल पर पहुंचता है। महापुरुषों के, गुरु साहिबों के, भक्तों के जीवन से शिक्षा लेनी चाहिए। गुरु नानक साहिब ने सर्व-शक्तिमान, सर्वकला समर्थ, आप निरंकार, जपुजी साहिब का उच्चारण किया और आखिर में क्या प्रार्थना की?

*"जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि।।*
*नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि।।"*

(अंक ८)



जिन्होंने नाम जपा, कठिन परिश्रम किया, उनके मुख दरगाह में उजले हैं अर्थात वे दरगाह से बख़्शिशें प्राप्त करते हैं। कृपा करो, मुझे भी उनकी संगति प्रदान करो। मैं भी भवसागर से पार हो जाऊं। हों सर्वकला समर्थ और यह मांगें! गुरु अंगद साहिब ने तो कमाल ही कर दिया, गुरु ग्रंथ साहिब में यह श्लोक 'पवन गुरु पाणी पिता' जपुजी साहिब के अलावा एक जगह (अंग 146) से भिन्न भी है, गुरु अंगद साहिब का उच्चारण किया हुआ। वहां आखिर में और शब्द भी दर्ज है:

*"नानक ते मुख उजले होर केती छुटी नालि।।"*

(अंग १४६)

इस 'होर' का क्या अर्थ है? हे निरंकार! जिन्होंने कठिन परिश्रम किया, मेरा इतना जप-तप नहीं, इतनी बन्दगी नहीं कि मैं उनकी संगति कर सकूं। कृपा करो, उनके 'कूकर' जिन्होंने उनकी संगति की है, मुझे उनकी संगति प्रदान करके भवसागर से पार करा दो। हैं तो समर्थ थे, लेकिन प्रार्थना कितनी निमानेपन से की है! हमारे लिए 'पूरने' हैं। गुरु रामदास जी, गुरु अमरदास जी के दामाद होने के बावजूद भी गुरु-घर की सेवा, सेवक बनकर की। सेवक के समान कठिन परिश्रम किया, सिर पर 'कीचड़' की टोकरियां भी उठाते रहे। उनको गुरगद्दी की बख़्शिश भी प्राप्त हुई तो किसके कारण? कि वे सेवक बनकर रहे।



सिक्खों ने गुरु अमरदास जी को प्रश्न किया कि आप गुरगद्दी की बख़्शिश किसको करोगे। सतिगुरु कहने लगे, "2-3 दिन के पश्चात् बताएंगे।" भाई जेठा जी और भाई रामा जी, दोनों को बुलाकर चबूतरे बनाने के लिए कहा। जब चबूतरे बन गए, सतिगुरु कहने लगे, "ये सही नहीं बने।" तुड़वा दिए। रामा जी कहने लगे, "जितना ऊंचा, जितना लम्बा कहा था, उसी प्रकार का तो बनाया है, अगर आप कहते हो तो तोड़ देता हूं।" जब भाई जेठा जी को कहा, "नष्ट कर दो, यह चबूतरा हमें पसन्द नहीं।" हाथ जोड़ कर भाई जेठा जी कहने लगे, मेरी बुद्धि तुच्छ है, मुझे आप जी की बात समझ नहीं आती, "अभी तोड़ देता हूं।" सतिगुरु कहने लगे, "कल फिर बनाना।"

अगले दिन फिर बनाए। रामा जी को कहते कि आज

फिर ठीक नहीं बना, हमें पसन्द नहीं, तोड़ दो। (अब परीक्षा तो यह हो रही थी कि सेवा कौन सेवक बनकर रहा है और कौन कर्ता बनकर) रामा जी ने 'बद्धा चट्टी' (बिना इच्छा के) के साथ तोड़ कर दिया। जब भाई जेठा जी को कहा, 'तोड़ दो, ठीक नहीं' तो भाई जेठा जी कहने लगे, "जी भूल हो गई। पता नहीं, मैं आप जी के अनुमान अनुसार क्यों नहीं बना सका!" अगले दिन फिर बनाए। सतिगुरु ने कहा, "ये भी हमें पसन्द नहीं, तोड़ दो।" अब रामा जी ने तो हद ही कर दी। कहने लगे, "मैंने तो बहुत बढ़िया बनाया है (कर्तापन आ गया है) आपकी उम्र ही अधिक हो गई है, आपको कुछ पता ही नहीं चलता।"



जब भाई जेठा जी को कहा, "जेठिया! चबूतरा तुमने भी बहुत निकम्मा बनाया है।" चरणों पर लेट गए। प्रार्थना की, सतिगुरु! कृपा करो, मेरे सिर पर हाथ रखकर, जिस प्रकार का चबूतरा चाहते हो आप, बनवा लो।" चबूतरा तो बढ़िया बना था, लेकिन सेवक-एकाग्रता रखी। सतिगुरु ने सीने से लगा लिया। कहने लगे, "जैसा चबूतरा मैं बनवाना चाहता था, वह बन गया है।"

आज कितना सम्मान है! भाई जेठा जी से गुरु रामदास जी बन गए। किसकी कृपा से? सेवक बनकर रहे।

गुरू गोबिन्द सिंह जी जिनके बारे भाई नन्द लाल जी लिखते हैं कि गुरु गोबिन्द सिंह, प्रभु का अक्स हैं, कोई ऐसा गुण नहीं हो जो उनमें न हो लेकिन मन की एकाग्रता कहां रखी?

*मो को दास तवन का जानउ।।*

जब हेमकुण्ट पर अकाल पुरख की तरफ से आज्ञा हुई, "दुष्ट दमन जी, जाओ! पृथ्वी पर आपकी आवश्यकता है। वहां जाकर सत्य का प्रसार करो।" देखिए, सेवक-एकाग्रता! हमारे लिए पूरने। यह नहीं कहा कि ठीक है, मैं जाता हूं और जाकर सत्य का प्रचार करता हूं। कितनी नम्रता! क्या कहा?

*पंथ चलै तब जगत मै जब तुम करहु सहाइ।।*

(कबिओ बाच दोहरा)

यह पंथ मैं नहीं चला सकता, जब तक आपकी कृपा नहीं होगी। कर्ता बनने का प्रयास नहीं किया। 'अकाल पुरख' की ओर से इतनी बड़ी **'Duty'** मिली, लेकिन कृपा मांग कर अपने मन की स्थिति सेवक जैसी ही रखी।

अगर धर्म के मार्ग पर चले हो, अगर चाहते हो मंज़िल प्राप्ति हो तो 'नानक भक्ति' करो। अपने मन की एकाग्रता यहां तक सीमित रखो कि मैं तो अवगुणहारा हूं।



फरीद जी की कोई कम भक्ति थी? 12 वर्ष, सूखे पत्ते खाकर तपस्या की थी, 12 वर्ष उल्टे लटककर तप किया, 12 वर्ष मुरशद की सेवा की लेकिन मन को कहां टिकाया हुआ था? कहने लगे, "मैं तो अवगुणों से भरा हुआ हूं, लेकिन लोग मेरे बाहरी भेष को देख कर मुझे 'दरवेश' समझते हैं:

*फरीदा काले मैडे कपड़े काला मैडा वेसु।।*
*गुनही भरिआ मै फिरा लोकु कहै दरवेसु।।"*

(अंग १३८१)

कबीर जी की कितनी बड़ी भक्ति! अन्त समय दरगाह से शरीर भी साथ लेकर गए। हड़म्भे की धरती पर श्राप

था कि जो इस धरती पर शरीर का त्याग करेगा, नर्क को जाएगा। कबीर जी ने श्राप वाली धरती पर शरीर का त्याग किया और नरक खाली करवा दिए। इतनी बड़ी अवस्था! श्राप वाली धरती का श्राप भी कटवा दिया परन्तु मन को कहां एकाग्र किया कि मैं तो अपने राम का कुत्ता हूं:

*"कबीर कूकरु राम को मुतीआ मेरो नाउ।।"*

(अंग १३६८)

भाई गुरदास जी जिनकी बाणी को गुरु ग्रंथ साहिब की कुंजी कहा जाता है, कितने पास थे गुरु साहिब के! लेकिन मन को कहां रखा? इतिहास में लिखा हुआ है कि एक बार भाई गुरदास जी ने लम्बा चोला पहना हुआ था, साथ में **5-10** शरीर, बाज़ार से गुज़र रहे थे (हम जैसों के साथ **5-10** बैठे हों तो ऐसे ही मन में अहंकार आ जाता है, मेरे जैसा कोई नहीं) एक औरत उनको देख कर पास खड़े सिक्ख से पूछने लगी, "यह कौन से महापुरुष जा रहे हैं, कौन से प्रभु के प्यारे जा रहे हैं, कौन से संत जा रहे हैं? भाई गुरदास जी के कानों में औरत की आवाज़ पड़ गई, क्या औरत मुझको महापुरुष समझ रही है? हैं भी महापुरुष थे, कोई कम नहीं लेकिन उस औरत के पास आकर कहने लगे, "तुम मुझे संत महापुरुष की पदवी देकर पूछ रही हो कि यह कौन है? बताया अपने बारे में कि मैं कौन हूं:

*"मै जेहा न अकिरतिघणु है भि न होआ होवणिहारा।*
*मै जेहा न हरामखोरु होरु न कोई अवगुणिआरा।*
*मै जेहा निंदकु न कोइ गुरु निन्दा सिरि बजरु भारा।"*

(वार ३७: २६)

कहने से भाव, इतनी ऊंची अवस्था, लेकिन मन को कहां रखा कि मेरे जैसा निंदक कोई नहीं, मेरे जेसा कृतघ्न कोई नहीं। यह अवस्था कहीं हमारे भीतर बन जाए कि सच्चे पातशाह! मेरे जैसा नीच कोई नहीं, मैं तो अवगुणों का भरा हुआ हूं। हमारी नाक तो इस अभिमान से ऊंची होती है कि मैं नित्य गुरुद्वारे जाता हूं, मैं तो 2 बजे अमृत वेला को जागता हूं। हमारे पड़ोसी तो 8 बजे तक सोए रहते हैं। इन बातों को लेकर हृदय पर अहंकार की मैल चढ़ा लेते हैं। कितना अच्छा हो कि सब कुछ करके भीतर निमाना और नितानापन आ जाए! किए गए सारे कर्म गुरु नानक के दर पर सफल हो जाते हैं।

बाबा नन्द सिंह जी, कितनी कमाई, कितनी ऊंची अवस्था के मालिक लेकिन कहते थे कि मैं तो अभी सिक्ख भी नहीं बना। गड्ढा खोद कर बैठना कि जो संगत वहां से गुज़रती है उसकी धूल मुझ पर पड़े और मैं भी सिक्ख बन जाऊं। किसी ने पूछ लिया, बाबा जी आप छुपकर क्यों बैठते हो?" कहने लगे, "जिस कुत्ते को कीड़े पड़े हों वह छिपकर ही बैठता है। कमाई कितनी, पूर्ण जती सती लेकिन क्या कहते, मुझे काम, क्रोध, लोभ के कीड़े पड़े हुए हैं।"

भाई नन्द लाल, इतने बड़े विद्वान, गुणी, ज्ञानी, गुरु गोबिन्द सिंह जी के कितने पास, कितना प्रेम किया गुरु से लेकिन मन को कहाँ रखाः

*तेरे कुत्तिआं तो वी नीवां, नंद लाल अखवावां।*

बहुत आवश्यकता है सतिगुरु के बचन, पढ़ने-सुनने की। अगर कमाई (भले कार्य) को सफल बनाना चाहते हो,

अगर मंज़िल तक पहुंचना चाहते हो, सब गुणों के होते मन यहां टिका हो, मेरे जैसा अवगुणहारा कोई नहीं चाहे हमारा अमृत वेला भी ही हो, चाहे हम किसी का बुरा भी न सोचते हों, लेकिन मन को झुकाकर रखना है।

बाबा नन्द सिंह जी ने पूर्णिमा से अगले दिन यह शब्द लगावाना 'रिदे ग़रीबी आवे' साथ शब्द के प्रमाण लगाने। किसी ने प्रश्न किया कि पूर्णिमा से अगले दिन यह शब्द क्यों लगवाते हो? बाबा जी कहने लगे, "पूर्णिमा के दिन लाखों लोग इकट्ठे होते हैं, यह मन कहीं यह न सोच बैठे कि मैं कुछ बन गया हूं। अगले दिन ही बाणी की पंक्तियों की सहायता से चोट लगाई जाती है कि गुरु नानक के घर में अहंकार स्वीकार नहीं, नम्रता स्वीकार है। बाबा जी ने बाज़ु के नीचे सम्मान के साथ गुरु ग्रंथ साहिब जी की सैंची (पुस्तक का अलग भाग) रख लेते थे और उस ओर ऊँगली से संकेत करते रहते थे। किसी ने पूछा, "यह क्यों?" बाबा जी कहने लगे, "मन पापी है, कहीं यह न समझ ले कि लोग मुझे सम्मान दे रहे हैं। हम 'सैंची' की ओर ऊंगली करके कहते हैं, मुझे नहीं आपको नमस्कार है। कहीं हमें अहंकार न आ जाए, जितने भी झुके हुए शीश हैं वे गुरु की ओर स्थानान्तरित कर देते हैं।

संत अतर सिंह जी मस्तुआने वाले, उन्होंने कई बार गुरु ग्रंथ साहिब जी के समक्ष प्रणाम करना। एक बार सेवादार पास खड़ा था। नमस्कार करके दोनों हाथ ऊपर उठाकर कहने लगे, "मेरा भार उतर गया है।" सेवादार पूछने लगा, "कौन सा भार उतर गया है?" कहने लगे,

"आज बहुत से लोग हमें मस्तक झुकाकर गए हैं, नमस्कार करके गए हैं, हमने सभी नमस्कारें धन्य गुरु ग्रंथ साहिब जी के आगे करके गुरु रामदास जी को स्थानान्तरित कर दी हैं। गुरु जाने या सिक्ख जाने, हमने पास कोई नहीं रखी। संत महापुरुष, जो इस मार्ग पर चले उनके जीवन के अध्ययन से हमें भी शिक्षा लेनी चाहिए।

बाबा नन्द सिंह जी कभी अपने अस्तिव में साध की महिमा का शब्द नहीं लगने देते थे कि कहीं यह मन यह न समझ ले कि मैं ही साध हूं। बाबा जी अपने सेवकों को नम्रता की शिक्षा देते थे ताकि बिहंगमों की कमाई सफल हो जाए। एंक बार अपने सेवकों से पूछने लगे, "अगर हम कहें कि फलाने व्यक्ति को बुलाकर लाओ तो आप वहां जाकर क्या कहते हो?" वे कहने लगे कि "बाबा जी की ओर से आज्ञा है, आओ!" बाबा जी समझाते हुए बोले, "इस प्रकार के शब्द नहीं बोलने। इस प्रकार से हमें अहंकार आ जाएगा कि फलाना हमारा हुक्म सुन रहा है। इस प्रकार से कहना है, बाबा जी स्मरण कर रहे हैं, कृपा करके दर्शन दीजिए!"

कई जो बहुत नाम जपते हैं या कीर्तन करते हैं, उनको कई कह देते हैं, हमारा घर अपने चरणों से पवित्र कीजिए, दर्शन दीजिए। अगर उसने किसी महापुरुष की संगति नहीं की तो यही कहेगा, अवश्य पवित्र करेंगे। यह अहंकार का चिन्ह है, तू चरण रखने योग्य हो गया, दर्शन देने योग्य हो गया? बाबा जी बताते थे, आगे से यह कहना है, आपके घर आपके दर्शन करने आएंगे। नम्रता

यह है। बाबा जी के बचन हैं कि हमारी बोली में भी नम्रता होनी चाहिए।

बाबा ईशर सिंह जी की कितनी कमाई! अमृतसर नहर पर दीवान लगते थे तो आधा शहर खाली हो जाता था कि अमृत की बूंद हम भी ले लें। उन्होंने बचन करने कि यहां पर तो कई गुणी, ज्ञानी, प्रचारक, रागी, गुरु के प्यारे, कथावाचक बैठे हैं लेकिन दास तो केवल प्रभु के घर झाड़ू देने वाला है। सेवक बनना! बताते थे कि मैंने तो अधिक शिक्षा भी ग्रहण नहीं की। मैंने तो सिर्फ तीन कक्षाएं पढ़ी हैं गुरु नानक के घर की! मुझे बाबा जी ने पढ़ाया है।

भभ्भा-भूल गया जी

भभ्भा-भला जी



भभ्भा-भाणा जी

ये तीन कक्षाएं कौन सी हैं? स्वयं अनुमान लगा लीजिए। जिनमें कर्तापन नहीं। कहते थे, न मैंने फ़ारसी का और न ही अंग्रेज़ी का अध्ययन किया है। उन्होंने आप बचन सुनाया। कहने लगे, ''एक बार मैं दिल्ली में था तो किसी गुरुद्वारे की ओर बाबा नन्द सिंह जी ने संकेत किया तो मैं आगे से उत्तर दिया, ''बिल्कुल ठीक।'' 3-4 मिन्ट के बाद जब बाबा नन्द सिंह जी, एक ओर आए और मुझे ज़ोर से तमाचा मारा। कहने लगे, ''बुद्धु ना होवे तां! यह फ़ारसी कहां से सीख आया है? सत्य बचन कहां गया तेरा?'' कहते, ''इतनी सी फ़ारसी बोल गया, 'बिल्कुल ठीक' और तमाचा पड़ गया। आगे नहीं पढ़ी। अगर पढ़ता तो पता नहीं क्या होता!'' बड़ी

बारीकी में जाते थे। कहते थे, 'हां' शब्द अहंकार का चिन्ह है और 'जी' नम्रता का सूचक। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में से नोट कर लीजिए, सब नम्रता भाव वाले शब्द मिलेंगे।

प्रयत्न करना है, यह जीवन हमारा सेवक बनकर व्यतीत हो! कभी यह मत कहना, मैंने फलां कार्य किया। यह कहना है कि गुरु ने कृपा करके मुझसे यह कार्य करवा लिया है। सब कुछ करके भी निमाने, निताने अवगुणहारे बनकर रहना है। जो यह वृति बनाकर रखता है, वही मंज़िल पर पहुंचता है। विगास, आनंद, सहज की अवस्था पर वही पहुंचता है। नम्रता न हो, युक्ति न पता हो तो एक ओर बर्तन भरता जाएगा, दूसरी ओर खाली होता जाएगा। जो भी सतिगुरु सेवा लें, सेवक बनकर करना, कर्ता न बनना! हर पल, हर घड़ी, हर समय यह ध्यान रखना है कि कहीं अहंकार न आ जाए! यह बहुत बुरा है। इससे बचकर रहना! इससे बचोगे, तभी प्राप्ति होगी। हर समय नम्रता धारण करके गुरु से बख़्शिश मांगनी है। नम्रता का पौधा हमारे हृदय में लग जाए तो गुरु की सारी बख़्शिशें चली आएंगी। नम्रता को ही भाग्य लगते हैं। नम्रता की ही पढ़ाई करनी है।

यह छठी युक्ति अच्छी तरह से जीवन में समझनी है, साधक भगवान वाली साईड को जितने भी कार्य करे, कर्तापन न आ जाए, सेवक बनकर करे!

❖❖❖

# सातवी युक्ति

*7. साधक बन्दे (व्यक्ति) के लिए सातवीं युक्ति है, व्यर्थ की बातें सुनने पर, करने पर, नेत्रों से व्यर्थ देखने और पढ़ने पर कंट्रोल करे।*

कभी नोट किया करो, आपके दिन में कई घण्टे संसार के लोगों से व्यर्थ की बहस में व्यतीत होते हैं। जिस बात का कोई अर्थ ही नहीं होता, कोई सिर-पैर ही नहीं होता, ऐसे ही किसी अन्य व्यक्ति की बात को लेकर आप कई-कई घण्टे बहस करते हो, समझ लेना कि हमारी रसना को हर पल में अमृत जैसा नाम जपना चाहिए था लेकिन हम विष जैसी बहस करके अपना समय ऐसे ही गँवा रहे हैं। जितने भी हमारे श्वास जा रहे हैं, ये रत्नों से भी अधिक कीमती हैं। ये हमें गिन कर मिले हैं। किसी व्यक्ति को डॉक्टर जवाब दे दें, वह व्यक्ति किसी को कहे कि मुझे तीन दिन के श्वास दे दे, मुझसे तीन लाख रुपए ले ले, नहीं मिलते। यह मूल्य नहीं बिकते! ये श्वास रूपि रत्न, दूसरे रत्नों से भी अधिक मूल्यवान है!

महापुरुष बताते थे कि कोई व्यक्ति जब सिमरन में बैठा हो, वो जितने समय में आठ श्वास ले, उतने ही समय में आम चलता-फिरता, धन्धों को करता हुआ व्यक्ति 16 श्वास लेगा। जब मनुष्य सो जाता है, नींद में उतने ही समय में 32 श्वास लेगा। जब व्यक्ति वासना भोगता है तो उतने ही टाईम में 64 श्वास लेगा। तीन

प्रकार के श्वास हम लेते हैं। एक तो वे श्वास जो व्यर्थ ही चले जाते हैं।

कुछ दिन पहले की बात है, किसी के घर मीटिंग थी। रात्रि का 7.30 बजे का टाईम रखा था। हम थोड़ा लेट हो गए, पांच मिन्ट कम आठ पर पहुंचे। आगे वहां 3–4 शरीर सरकार की बात को लेकर आपस में बहस कर रहे थे। हम बैठे, कि ये बात समाप्त करें तो मीटिंग आरम्भ करें। वे पूरे 30 मिन्ट लगे रहे इस बात पर कि सरकार ने विदेशी कंपनियां लाकर यहां फैक्टरियां लगवा दी हैं। हिन्दोस्तान को यह हो गया है, उसको वह हो गया है!

35 मिन्ट के पश्चात दास ने सोचा कि इन्होंने जितनी भी बहस की है आपस में किसी सरकार को लेकर, इसमें एक बात भी भगवान की नहीं, नाम की नहीं। यही नहीं, हम भी बिना किसी कारण के कोई बात छेड़ कर बैठ जाते हैं जिसका कोई लक्ष्य नहीं, बन्दगी नहीं। अगर आवश्यक बात नहीं तो समझ लेना, हमारे श्वास व्यर्थ गए।

कुछ दिन पहले हम गाड़ी में आ रहे थे दिल्ली से। संध्या सात बजे का समय था। हम 3-4 व्यक्ति आपस में बैठे और गाड़ियों के बारे में बहस छिड़ गई कि गाड़ियों में इस प्रकार सुधार होना चाहिए, गाड़ी इस प्रकार से यहां से चलनी चाहिए, यहां पर ऐसे होना चाहिए। जब घड़ी देखी तो 10:30 बजे थे। मन बहुत दुःखी हुआ कि सात बजे की बहस छिड़ी है, 3½ घण्टे में कोई भी बात गुरु की नहीं। न हम गाड़ियों में सुधार करवा सकते हैं, न कुछ कर सकते हैं। व्यर्थ की बहस में कितने ही श्वास

व्यर्थ गँवा लिए? ये बातें तो सब हँसी मज़ाक हैं लेकिन हम **90%** इसी में फँसे पड़े हैं। दिन के कई घण्टे इस प्रकार की व्यर्थ बहस में व्यतीत हो जाते हैं। बाद में मनुष्य सोचता है, मेरे इतने घण्टे व्यर्थ चले गए, मैं संभाल न सका।

कई स्त्रियों को बड़ी आदत होती है, किसी के घर जाएं तो पूछती हैं, यह साड़ी कितने की ली है, यह सूट कितने का आया है? ये पर्दे बहुत सुन्दर हैं, कहां से लिये? ऐसी बेकार की बातों में श्वास व्यर्थ जा रहे हैं। बहुत आवश्यकता है इस प्रचार की, हमारे कई-कई श्वास इतने से अनजानेपन के कारण व्यर्थ हो जाते हैं।

फरीद जी की माता कहती थी, आज भगवान रूठा और कभी कहना, आज भगवान तूठा। फरीद जी ने भोले-भाव पूछ लिया, "मां! कभी कहती हो, भगवान तूठा तो कभी कहती हो भगवान रूठा? इसका क्या अर्थ है?" फरीद जी की माता कहती, "जब कभी ऐसी बीबी-सहेली आ जाए घर, जो मेरा घण्टा, आधा घण्टा व्यर्थ की बातों में गँवा दे, तो कहती हूं, आज भगवान रूठा है, आज तू रूष्ट है जो ऐसी को मेरे पास भेज दिया है। जब कोई ऐसा घर आ जाए, जो मुझे अध्यात्मिक बात सुनाए, मैं कहती हूं, आज भगवान तूठा है।"

लगभग वर्ष पहले की बात है, हमारे अपने घर में छत के ऊपर मुग्घ (जहां से वर्षा के पानी का निकास होता है।) दास ज़्यादातर ऊपर ही होता है। खान-पान नीचे है। परनाले के नीचे एक बैंच सा पड़ा हुआ है। एक स्त्री आई और उस बैंच पर बैठ गई। साथ में दास की

घरवाली। कोई 1½ घण्टा बैठी रहीं। उस डेढ़ घण्टे में कोई बात गुरु की नहीं, प्रभु की नहीं। फलां की बहू का पता लगा? बात चल पड़ी उस ओर....। वह फलां के बारे में पता चला? बात चल पड़ी उस ओर। ये पर्दे बहुत सुन्दर हैं! कहाँ से लिए हैं? बात उस ओर चल पड़ी। अब किसी के होते हुए तो कहना योग्य नहीं क्योंकि घर कोई आया है। जब वह औरत उठकर चली गई तो दास ने आवाज़ दी अपनी घरवाली को, "आज भगवान तुझ पर भी रूठा है।" वह कहती, "क्या हुआ?" दास ने कहा, "1½ घण्टे की व्यर्थ बातों में एक बात भी प्रभु की नहीं।"

जब भी हम व्यर्थ की बातें करेंगे तो न चाहते हुए भी किसी की निन्दा हो जाएगी, किसी की चुगली हो जाएगी। जब हम व्यर्थ की बातें करते हैं, न चाहते हुए भी जो व्यक्ति पास नहीं होता, उसकी निन्दा आरम्भ हो जाती है। कभी Try करके देख लेना। हम स्वयं कई बार 10-12 शरीर बैठे होते हैं तो कई बार निन्दा शुरू होने लगती है तो फिर उसी समय अरदास करते हैं।

सतिगुरु नानक को सिक्खों ने पूछा था, "मन बस में कैसे आए?" सतिगुरु कहते, "जहां से मुड़ता है, मोड़ लीजिए, कि जितनी भी हो गई लेकिन ध्यान आ गया जिस समय, अब हटा ले! धीरे-धीरे हटा इतना छोटा हो जाएगा कि आपकी सोच में ही आएगी कोई ऐसी बात और आपको पता चल जाएगा। सोच तक क्षमा है। अगर आपकी सोच में आ जाए कि किसी का बुरा करना है, तब तक तो क्षमा है, लेकिन जब आपने रसना करके या

हाथों करके उस कर्म को कमा लिया फिर वह हमारा कर्म बन जाता है।" जहां से मुड़ता है मन इसको मोड़ लीजिए! एक दिन मोड़ इतना छोटा हो जाएगा कि विचार भी आएगी कि किसी की करें बात तो साथ ही मन में आ जाएगा कि यह निन्दा है! यह नहीं करनी!

अमृतसर की एक कालोनी है। किसी ने वहां से रिहाइश छोड़ी और किसी अन्य स्थान पर रिहाइश की। जहां से रिहाइश छोड़ी, वहां 10-12 घर थे, उन घरों के सदस्यों से प्यार बना हुआ था। प्यार तो अच्छी बात है लेकिन वह औरत क्या करती थी? उसने दो बार आना सप्ताह में, अपनी पहली कालोनी में Special और चारपाई लगा लेनी और सभी को आवाज़ देनी। फिर 2-3 घण्टे जी भरकर आप ही अनुमान लगा लीजिए क्या करना! यह साधक व्यक्ति की लाईन नहीं।



चाहिए तो बस यह कि हमारा खाली समय बेकार बातों में न व्यतीत हो, घर में काम कर रहे हो तो भी सिमरन, किसी की प्रतीक्षा में हो तो भी सिमरन, डॉक्टर के पास दवा लेने गए हो अभी बारी लेट है तो भी सिमरन। आधा रोग तो ऐसे ही समाप्त हो जाएगा। आजकल तो ऐसा कलियुग का दबाव है कि डॉक्टरों ने रोगियों के लिए टी.वी. लगाया होता है। कोई भी किरत हो, बीच में घण्टा-दो घण्टे जो खाली समय आता है, उस समय दौरान सिमरन करो। आम रिवाज़ है कि जब मन्दा हो या खाली समय हो, एक दुकानदार के पास दूसरा दुकानदार बैठ जाएगा, फिर तीसरा। फिर बातें आरम्भ, निन्दा चुगली आरम्भ। आजकल तो बहुत साधन हैं।

मध्यम् सी आवाज़ में टेप लगा छोड़ो, अपने आप ध्यान रहता है गुरबाणी की ओर। दुकानों पर लिखकर लगा दो कि यहां बात करनी है तो गुरु की करो! पता चले कि कलगियों वाले के प्यारे की दुकान है!

तरनतारन किसी के घर गए हम। कीर्तन का प्रोग्राम था और लंगर उनके घर था। उनके घर में प्रवेश करते ही बरामदा था। बरामदे में ही बिछाई की गई थी पंगतों के बैठने के लिए। बारमदे में प्रवेश करते ही अंदर बोर्ड लगा था कि यत्न करो, इस घर में सिमरन करो, वाहिगुरु जपो, कोई और बात न करो। पढ़ते ही ठंडक महसूस हुई कि किसी मेहर वाले का घर है, किसी बख़्शे का घर है।

कई बार हम टेलीफोन पर भी घण्टा-घण्टा, पौना-पौना घण्टा बातें करते रहते हैं, 2-4 मिन्ट में भी बात हो सकती है। आवश्यक बात करनी है तो करो, कोई मनाही नहीं गुरमति में, लेकिन जिन बातों की आवश्यकता नहीं, व्यर्थ में कर कर के कितने श्वास व्यर्थ गँवा लेते हैं! कभी चेक कर लेना, 3-4 मिन्ट में किसी न किसी की निन्दा आरम्भ हो जाएगी। सुबह नित्तनेम करके बर्तन भरा, सारा दिन निन्दा, चुगली, हंसी मज़ाक कर करके बर्तन खाली कर लिया, कहां की बहादुरी है?

बाबा नन्द सिंह जी को किसी ने कहा था, "पहरेदार क्यों रखे हैं?" कहते, शरीर की रक्षा के लिए नहीं, श्वासों की रक्षा के लिए रखे हैं।" कहते, "वो कैसे?" कहते, "जब अनेकों शरीर व्यर्थ बातें करने वाले आएंगे, कितने श्वास व्यर्थ चले जाएंगे? साधक व्यक्ति को उतना

ही बोलना चाहिए, जितना आवश्यक हो।"

एक बार भाई अड्डन शाह अपने सेवक को कहने लगे, "रस्सी की गुछियां बेच कर आ।" सेवक चलने लगा तो अड्डन शाह जी कहते, "कुछ उसूल हैं, वो भी सुन ले! एक गुच्छी 11 पैसे की खरीदी है तो 12 पैसे की बेचनी है।" एक गत्ते पर लिखकर रख लेना है कि रस्सी की गुच्छी 12 पैसे की है। सेवक नया था। कहता, "लिखने की क्या आवश्यकता है? मैं बोल कर बता दिया करूंगा कि 12 पैसे की गुच्छी है।" महापुरुष कहते, "प्यारे! दुकान पर 100 में से 80 ग्राहक ऐसे आएंगे जिन्होंने सिर्फ भाव ही पूछे जाना है, सौदा नहीं लेना होता। इसलिए कोई भाव पूछे तो अंगुली कर देनी है गत्ते की ओर और आप सिमरन में रहना है। नहीं तो 80% ग्राहक आएंगे, पूछते रहेंगे। कहेंगे, "8 पैसे की लगा ले 12 पैसे की दो लगा ले।" अगर तू सारा दिन उनसे बोल-कुबोल करता रहा तो तेरे कितने श्वास व्यर्थ चले जाएंगे?"

महापुरुषों के जीवन से दिशा लेनी है। महापुरुष बाबा दर्शन सिंह जी (घनुपुर काले वाले) अब चोला बदल गए हैं। उनके समय एक छोटी सी घटना घटी। चार सौ कौला (कटोरे) उनके अस्थान से चोरी हो गया। अगले दिन एक प्रेमी आया। आते ही कहता, "पता चला है कि 400 कौला चोरी हो गया है।" बाबा जी कहते, "11 पाठ सुखमनी साहिब के तुझे ज़ुर्माना बात छेड़ने का।" अब इतनी सी बात से अनुमान लगा लीजिए कि अगर वे कहते, "हां, चोरी हो गया है, देखिए! क्या कुछ हो रहा

है'' तो व्यर्थ की बातें आरम्भ हो जानी थीं। आप सोचो, उस व्यक्ति पर क्या बीती होगी? उसने मज़ा लेने के लिए बात छेड़ी, उन्होंने गुटका पकड़ा दिया कि कल तक 11 पाठ सुखमनी साहिब तुझे जुर्माना।

आप कई बार महसूस करोगे कि बातें कर-करके दिमाग थक जाता है, बोल-बोल कर, झमेलों में पड़-पड़ कर, लोगों के फैसले कराकर, लोगों को मिल-मिल कर थक जाता है। ये झमेले नहीं समाप्त होने! एक बात स्मरण रखना कि काम नहीं समाप्त होने, इन्सान ने समाप्त हो जाना है। ऐसे ही व्यर्थ की बातों में अपना बहुमूल्य समय व्यर्थ न गँवाए जाएं। अगर बातें करनी ही हैं तो गुरु की करो, कोई कथा की बात करो, कोई प्रभु की बात करो ताकि श्वास सफल हो जाएं।



यत्न करो, अपने घरों में गुरु की जन्म-साखी में से घण्टा, दो घण्टा बच्चों के साथ बैठ कर, एक-दो कथा पढ़ा करो। बच्चे को कहा, ''तू सुना।'' कभी बिठाकर देखो इस तरह प्रेम से, देखना! कितना रस आएगा! बच्चा कथा सुनाए और आप पास बैठ कर अन्तर्ध्यान होकर सुनो, उस समय आपकी गुरु नानक की दरगाह में हाज़री लग रही होगी। साथ चमत्कार सामने आते हैं। यह आधे बचन की विचार गुरु साहिब जी ने कृपा करके लिखने की सेवा ली है कि साधिक बन्दा व्यर्थ की बातें करने और सुनने पर कंट्रोल करे। साधिक बन्दे ने नेत्रों से व्यर्थ देखने और पढ़ने पर भी कंट्रोल करना है। नेत्र दो काम करते हैं। देखते हैं और पढ़ते हैं। परमेश्वर की प्राप्ति के लिए मन निर्मल होना आवश्यक है। अगर नेत्रों

से नॉवल, पत्रिकाएं आदि पढ़ेंगे तो मन मलिन हो जाएगा।

शताब्दी गाड़ी जो दिल्ली जाती है, सुबह सवा पांच बजे चलती है। कुछ दिनों की बात है, हम दिल्ली जाने के लिए 5.05 पर स्टेशन पहुंचे। जो हमें चढ़ाने आए थे, उनको विदा कर ही रहे थे कि एक सरदार जी आए और फतहि बुलाई। उनके हाथ में नॉवल पकड़े हुए थे। सामने पुस्तकों की दुकान से खरीद कर लाए थे। दास ने पूछा, "यह क्यों?" कहने लगे, "11:30 बजे गाड़ी पहुंचनी है दिल्ली, सुबह-सुबह मन नहीं लगना और सोचा, ये पढेंगे।" देखिए, अमृत वेला का टाईम है, सरदार है, लेकिन इतनी भी नहीं सोझी (समझ) कि क्या पढ़ना है? तकरीबन हर इंसान को कुछ न कुछ पढ़ने का शौक होता है। कोई नॉवल पढ़ता है, कोई कहानियों की पुस्तकें तो कोई फिल्मी मैगज़ीन।



एक औरत, अपनी संगत की ही है। कीर्तन करती है। हारमोनियम भी सीखा है। एक दिन उनके घर जाने का समय बना। उन्होंने हमें पलंग पर बिठाया। उस पलंग के पीछे एक ढोह थी। स्वाभाविक वह ढोह खुल गई। क्या देखा? उसमें 10-12 नॉवल पड़े हुए थे। दास ने सारे ही निकाल लिए और निकाल कर चारपाई पर लगा दिये। जब वह चाय लेकर आई तो कभी चाय की ओर तो देखे तो कभी नॉवलों की ओर। कहती, "ये कहां से बाहर आ गए?" दास ने कहा, "पहले बताओ मुझे, कौन पढ़ता है?" अब कोई बहाना नहीं था। पलंग उसी का था। जो पढ़ता है वह ही पास ही रखता है। घरवाले का

हमें पता था कि इस लाईन में नहीं। दास ने कहा, "ये कौन पढ़ता है?" वह कहने लगी, "मेरी आदत है, मैं नॉवल पढ़ते हुए सोती हूं।" दास को बाबा खड़क सिंह जी का बचन स्मरण हो आया।

बाबा खड़क सिंह जी भी कहते थे, "सोने का भी ढंग आना चाहिए। एक तो यह कहते थे, जब निंद्रा आई हो तब ही सिक्ख सोए, कई ऐसे ही आलस्य कर जाते हैं।" दूसरा बताते थे कि किसी को निंद्रा आने में दस मिन्ट का समय लगता है, किसी को कुछ अधिक, किसी को कुछ कम। सिक्ख उतना समय सिमरन करते हुए सोए, वाहिगुरु को स्मरण करते हुए सोए। फिर रात्रि भी उसके चरणों में व्यतीत होगी जिसको स्मरण करते हुए सोएगा।



बाबा नन्द सिंह जी अपने शीश की ओर, गुरु नानक जी की फोटो रखते थे। आप फोटो न रखें, चाहे सुरती के साथ से ही भावना बना लो कि आप मेरे साथ हो सतिगुरु! और मैं आपकी गोद में हूं। आप भी करके देखिए! बड़ा ही आनन्द बनता है। बाबा जी दो घण्टे विश्राम करते थे और भावना बनाना कि गुरु नानक की गोद में शीश रखा हुआ है। कैसे न सिमरन चले? कैसे न साथ-साथ नाम का रस चलेगा? कोई औरत नॉवल पढ़ते हुए सोए और कोई युं सोए, आप ही तराज़ू में तोल लीजिए, कितना अन्तर है? अगर नॉवल पढ़ते हुए सोवेंगे तो रात्रि में वैसे ही विचार आएंगे।

एक बार हम अमरीका से आ रहे थे। 400 यात्री थे जहाज़ में। दास ने टाईम देखा, पौने चार बजे थे। सीट

से उठे गये। मुंह-हाथ धोया क्योंकि स्नान के लिए तो जहाज़ में जगह नहीं होती। जब अपनी सीट पर वापस आ रहा था कि नित्तनेम करें तो अचानक मन में ख्याल आया कि देखें, जहाज़ में क्या पुज़ीशन है शेष यात्रियों की? जब जहाज़ में नज़र डाली तो देखा कोई 250 सवारी सोई पड़ी है। पता ही नहीं कि कहां पड़े हुए हैं क्या टाईम है, अमृत वेला संभालना है! जब अगली बात पढ़ोगे तो कहोगे कि इससे तो सोए हुए ही अच्छे क्योंकि जो 150 सवारी जाग रही थी वे सोए हुओं से भी बुरी हालत में थे! उन्होंने हाथों में जो चीज़ें पढ़ने के लिए पकड़ीं, देख कर मन में इतना अफ़सोस हुआ कि समय कौन सा? अमृत वेला, नाम जपने का और ये पढ़ क्या रहे हैं? गंदगी भरे, वासना भरे नॉवल? दास ने सोचा, पता नहीं किस धर्म को मानने वाले हैं परंतु इनके मुरशिद ने सिखाया ही नहीं।

अगर आप भी सफ़र में ऐसी वस्तुएं ले जाते हो कि मार्ग में टाईम पास हो जाए कि बात कुछ और है, लेकिन अगर मार्ग में सुखमनी साहिब, जपुजी साहिब या चौपई साहिब पढ़ते जा रहे हो तो समय पास नहीं समय सफल होता है। जहाज़ में दास ने जो कुछ उस समय उनके हाथों में देखा अमृत वेला को-गन्दगी भरे नॉवल, गन्दगी भरी पुस्तकें पढ़ रहे हैं तो कहा, "सच्चे पातशाह! इनसे तो सोए हुए ही अच्छे!"

दास आगे चला जा रहा था, अपनी सीट की ओर तथा एक अन्य ओर निगाह गई, जहां तीन अंग्रेज़ (शायद अमरीकन मूल के) सिंह और सिंहनी बैठे हुए थे।

उन्होंने तो अपनी-अपनी लाईट जलाई हुई थी, वे तीनों भी पढ़ रहे थे। मन में विचार आया कि देखें, ये क्या पढ़ रहे हैं? जब दास की उन पर निगाह पड़ी तो क्या देखा, तीनों के हाथों में अंग्रेज़ी के गुटके थे और जापु साहिब का पाठ कर रहे थे। एक ओर कूड़ और एक ओर हीरों का व्यापार। वे तीनों अंग्रेज़ भी जब कलगियों वाले की मोहर नहीं लगी होगी, जहाज़ में वो पहले भी सफर करते होंगे, लेकिन अमृत वेला को जुड़ते नहीं होंगे, जब से पाँच प्यारों से खण्डे-बॉटे की पहुल ली तो उन्होंने बताया कि अमृत वेला कैसे संभालना है तो देखिए! सफर में भी अमृत वेला संभाल रहे हैं। अमृत छकने से पहले शायद ये भी उनमें शामिल होंगे! गर्व आ गया कलगियों वाले पर कि जब से तेरी मोहर लगी है, तेरे बने हैं, जीवन बन गया है।



आप भी सफर में होवें, कहीं जायें, या घर में ही खाली समय में महापुरुषों की पुस्तकें पढ़ा करो! कई कुछ मिलेगा आपको। महापुरुषों की पुस्तकों के द्वारा बीते हुए समय में हो गुज़रे महापुरुष या अब के समय के महापुरुषों, चाहे वे संसार के किसी भी कोने में क्यों न रहते हों, उनकी संगति हो जाती है। उनकी पुस्तकें आत्मिक विकास का साधन सिद्ध हो सकती हैं। हमें इनसे लाभ उठाना चाहिए। जिस पर वाहिगुरु मेहर करे, उसको ही धार्मिक पुस्तकें पढ़ने का शौक उत्पन्न होता है। अगर कहीं सतिगुरु की कृपा से यह दात झोली में पड़ जाए तो धार्मिक पुस्तकें, महापुरुषों की पुस्तकों को आम पुस्तकों की तरह न पढ़ना! कोई भी धार्मिक पुस्तक

हो उसकी एक साखी को दो बार, 4 बार, चाहे 10 बार पढ़ो, अब पढ़ने के पश्चात् पांच मिन्ट के लिए सोचो कि यह साखी जो मैंने पढ़ी है, इसका सारांश क्या है, इससे उपदेश क्या मिलता है, क्या शिक्षा प्राप्त हो रही है? फिर सोचो, उस साखी में से जो शिक्षा मिलती है, उस शिक्षा के अनुसार, मेरे जीवन में कितनी कमी है?

कुछ समय हुआ एक औरत लुधियाना से आई। सत्संगिनी थी। कहने लगी, ''हमारे घर में कोई धार्मिक पुस्तक नहीं।'' दास ने उसी समय दो पुस्तकें बाबा नन्द सिंह जी के जीवन की, दो गुरु इतिहास की दे दीं। मन में शुक्र किया कि वाहिगुरु ने मेहर की है जो धार्मिक पुस्तकें पढ़ने का उत्साह जागृत हुआ है। वह औरत, स्वाभाविक 4-5 दिन पश्चात् फिर आई। कहती, ''मुझे और पुस्तकें दीजिए।'' दास ने कहा ''4-5 दिन हुए तो आपको दी तो थीं।'' वह कहने लगी, ''वो तो मैंने पढ़ ली हैं।'' दास ने विनती की कि यह कोई प्रतियोगिता नहीं कि दो दिन में किताब पढ़कर समाप्त करनी है। अगर इस प्रकार फटा-फट धार्मिक पुस्तक सिर्फ पढ़े ही जाएं तो यह 'पड़ि पड़ि गडी लदीअहि' वाली बात हो जाएगी। कोई भी धार्मिक पुस्तक पढो, उसकी एक-एक साखी को कई-कई बार पढ़कर उससे शिक्षा लेनी है, उसके अनुसार अपने जीवन को ढालना है। साधिक बन्दे के लिए यह बहुत आवश्यक है, क्या-क्या पढ़ना है? इस चीज़ का ध्यान रखे।

आँखें एक और भी कार्य करती हैं। वह है देखना! जब परिवार में बैठ कर हम टी.वी. देखते हैं तो जितने भी

पुण्य किए होते हैं, वो जलने आरम्भ हो जाते हैं। झूठे रंग-तमाशे, टी.वी. पर सीरियल देखने, पिक्चरें देखनी, यह पुण्य गँवाने का मार्ग है। इनसे मन बाहर भटकता है।

किसी ने दास को प्रश्न किया कि फिल्में देखने की क्या हानि है? जब आप जपुजी साहिब, सुखमनी साहिब के पढ़ने के लिए बैठे होंगे, वही सीन आपके सामने आएंगे जो आपको गुरु नानक के चरणों से तोड़ देंगे। आँखों को वही चीज़ दिखाओ जिससे गुरु नानक ही याद आए।

कोई दुलभ ही होगा जिसने टी.वी. को 'माथा टेका' होगा। दोष टी.वी. का नहीं, लेकिन साधिक बन्दे ने यह ध्यान रखना है कि टी.वी. पर कौन से प्रोग्राम देखने हैं। महापुरुष वचन करते थे कि प्याले का दोष नहीं लेकिन प्याले में पीना क्या है? दूध या ज़हिर? यह पीने वाले ने सोचना है। टी.वी. पर महापुरुषों के बचन भी आते हैं। कीर्तन के प्रोग्राम भी आते हैं और जो धार्मिक प्रोग्राम आते हैं वे देखो! कहीं ऐसा न हो कि एक पाठ, दो पाठ सुखमनी साहिब के किये और दो घण्टे दूसरे प्रोग्राम देखे, जितना भी बर्तन भरा हुआ था, खाली!

दास एक दिन शहीदां साहिब बैठा था। एक औरत 100 का नोट और पर्ची मेरी झोली में रख गई। दास ने अपनी जो हाज़री भरनी थी भरकर, पर्ची पढ़ी तो उसमें लिखा था कि हमने नया टी.वी. खरीदा है रंगदार, अरदास कर दीजिए। पहले तो मुझे बहुत क्रोध आया कि टी.वी. की अरदास करूं कि यह ठीक-ठाक चले और ये जी भर कर देखें? लेकिन मुझे अगली बात बहुत पसन्द आई। वह क्या थी कि हमने 1100 पाठ जपुजी साहिब के

किये हैं, टी.वी. लाया है, हमारी यह अरदास कर दीजिए कि हम टी.वी. में अच्छी चीज़ें, अमृत जैसी देखें, दूसरी किसी चीज़ के दास न बन जाएं!

जब मनुष्य धार्मिक प्रोग्राम देख कर उसमें घण्टा-दो घण्टे समय बिताएगा तो यह भी हौंसला रहता है कि मेरी आँखों ने कुछ देख लिया है और इस प्रकार रहे भी गुरु नानक के पहरे में।

बाबा जी के बचन हैं यह जो दूसरे रंग-तमाशे हैं ये नर्कों को मुंह दिखाते हैं और गुरु नानक के घर के धार्मिक सीरियल सच्चखण्ड में स्थान दिलवाते हैं। बीते समय में बाबा दीप सिंह कालोनी किसी के घर पाठों की लड़ियां चल रही थीं। दास ने पूछा, "रौलों की कोई कठिनाई तो नहीं आई?" उन्होंने कहा कि एक बजे से लेकर तीन बजे तक बड़ी कठिनाई आई, शेष समय इतनी 'रौल' रही कि पूछो कुछ न! इसका कारण क्या था कि उस टाईम पर जो सीरियल आते हैं वे हमने अवश्य देखने होते हैं, वे नहीं छोड़ सकते। अब अगर कोई कहे, मैं फलां सीरियल नहीं छोड़ सकता तो इसका अर्थ है कि वह उसका दास बन गया है जबकि दास तो बनना था गुरु का। जब हम सीरियल देखते हैं तो उस समय गुरु को आँखों में से निकालना पड़ता है।

दास एक बार किसी के घर गया। उन्होंने एक ही कमरे में दो टी.वी. रखे हुए थे। दास ने पूछा, "एक ही कमरे में दो टी. वी. का क्या काम?" वे कहने लगे, "हमारे घर 19 घण्टे टी.वी. चलता है। जब गरम हो जाता है, वह बन्द करके दूसरा लगा लेते हैं" आप ही

अनुमान लगा लीजिए कि जिस घर में 24 घण्टों में से 19 घण्टे टी.वी. चलता है, वहां तो घोर कलियुग है। बाढ़ आई हुई है, 60-70 चैनल चल रहे हैं।

अमृतसर में तीन घरों में Chance हुआ है दास के साथ। दास ने देखा, घरों में, रसोई में टी.वी. लगा है। दास ने पूछा, "रसोई में टी.वी. क्यों?" वे कहते, "कमरे में टी.वी. पर सीरियल देख रहे होते हैं तो खाने का टाईम हो जाता है। अगर खाना बनाने चले जाएं रसोई में तो सीरियल का Link टूट जाता है, इसलिए हमने रसोई में ही लगवा लिया है।" अब जो कुछ अनाज भीतर पड़ना है, वही प्रभाव पड़ना है। हलवाइयों से ले लो पांच रुपए का कड़ाह तो वह कड़ाह ही है। दरबार साहिब से लिया जाए, भीतर बाणी पड़ती है, इसलिए ही वह प्रसाद बनता है। और यदि यह कुछ पड़ेगा अन्न में तो फिर खाने वालों की बुद्धि भी तो वैसी ही होगी।



एक मोहल्ले की औरत के साथ बचन हुए। यह औरत हर रोज़ अपने बच्चों को लेकर शहीदां साहिब जाती थी। दास ने उसको पूछा, "तू पहले हर रोज़ जाती थी बच्चों को लेकर, वहां बाणी भी पढ़ती थी, झाड़ू की सेवा भी करती थी लेकिन अब क्यों नहीं जाती?" वह औरत कहती, "हमने Cable लगवा ली है सुबह-शाम फिल्में, सीरियल बहुत अच्छे आते हैं, वे सीरियल छोड़ कर शहीदां साहिब नहीं जाया जाता।" यह है कलियुग का प्रभाव।

पहले सिनेमा घर होते थे, कोई महीने पश्चात या अधिक से अधिक सप्ताह पश्चात फिल्म देखने जाता था। देखते-देखते टी.वी. चल पड़े। पहले पंद्रह दिन पश्चात

पिक्चर आती थी, देखते-देखते सप्ताह पश्चात और अब तो गिनती ही कोई नहीं। हर समय टी.वी. पर सीरियल फिल्में, वी.सी.आर, वी.सी.पी., सी.डी. चल पड़ी हैं। कैसेटें लाओ किराये पर और जितनी मर्ज़ी देखो! चाहे सारा दिन गन्दगी देखते रहो! यह हाल हो गया है! कलियुग ने कहा था कि ऐसा माहौल बनाऊंगा कि घर-घर वेश्या नचाऊंगा। आज यह बचन सत्य हो रहा है।

कुछ दिन हुए दास को एक गुरमुख प्यारा मिला। कहता, "संतान नाम नहीं जपती, हर समय टी.वी. लगाये रखते हैं। बच्चों ने और पत्नी ने जिद्द करके केबल तार लगवा ली है, अब तो मेरा घर वेश्या का कोठा बन गया है।" वह गुरमुख प्यारा कहने लगा, "मैंने अब एक मन्नत मांगी है कि 13 सहज पाठों के भोग घर में रखने हैं। 15 दिन में एक सहज पाठ का भोग सारे परिवार ने मिलकर डालना है।" अब स्वयं अनुमान लगा लीजिए कि पत्नी को भी और बच्चों को भी गुरबाणी पढ़ने लगा दिया। पांच-छः महीने जिस घर में निरन्तर बाणी चलेगी, उस घर में से तो स्वयं ही नरक निकल जाएगा। ऐसे उपाय टी.वी. के प्रचलन पर रोक लगा सकते हैं।

अगर सचमुच ही इस मार्ग पर चलने का शौक है तो इन बातों का ध्यान रखने की बहुत आवश्यकता है। व्यर्थ बातें करने से, व्यर्थ की वस्तुएं देखने से, पढ़ने से पुण्य जलते हैं। हमने अपने काम-धन्धों से निवृत होकर, मनोरंजन के लिए, समय गुज़ारने के लिए कई साधन बनाए होते हैं जैसे किसी के घर जाना, टी.वी. देखना और कई फालतू के झमेले। एक बात ध्यान में रखना!

झमेले नहीं समाप्त होने, इन्सान ने समाप्त हो जाना है! जीवन को किसी ढांचे में ढाल कर चलाओ, जीवन सफल हो जाएगा। रंगे हुए सिक्खों के जीवन से दिक्षा लें।

भाई तिलका हुआ है, गुरु अरजन देव जी के समय। उसने अपने जीवन में एक रुटीन बनाई थी कि सुबह दो बजे उठकर, स्नान करके, गुरु अरजन देव जी के चरणों का ध्यान धरके, सिमरन में, नित्तनेम में जुड़ता था। 7-8 बजे चाय-पानी लेकर फिर काम-काज़ पर आ जाना। घर आकर दो घण्टे मौन धारणा, परिवार में किसी से बात नहीं करनी, बन्द कमरे में गुरु के चरणों का ध्यान धरके साईं के साथ जुड़ना है। फिर एक घण्टा **Research** करनी। गुरु साहिब की कथा-कहानियां पढ़नी। गुरु की कथा-कहानियां पढ़ें तो गुरु की फिल्म चल पड़ती है।



एक बार बाबा नन्द सिंह जी ने भाई डरोली को कहा, "कोई बाबा जी की कथा सुना।" वह कहने लगा, "आपको कथा की क्या आवश्यकता है? आपके तो श्वास-श्वास में सिमरन चलता है!" बाबा जी कहते, "जिसकी कथा सुनते हैं, उसकी फिल्म चल पड़ती है तो फिर एक बार नहीं कई बार दर्शन हो जाते हैं!

साधिक बन्दे के लिए बहुत आवश्यक है, इन बातों का ध्यान रखना। अगर नहीं ध्यान रखते तो एक ओर नित्तनेम करके, बाणी पढ़ के पुण्य बनाओगे और दूसरी ओर इन चीज़ों के साथ जलते जाएंगे। यह सातवीं युक्ति बहुत ध्यान देने वाली है। साधिक के लिए व्यर्थ की बातें सुनने और करने पर, नेत्रों के साथ व्यर्थ देखने और पढ़ने पर कंट्रोल करे।

# आठवीं युक्ति

**8. साधिक बन्दे के लिए आठवीं युक्ति है, ध्यान रखने योग्य बात कि परमार्थ के किसी भी नेम को बोझ डाल कर न करे, खुशी और चढ़ती कला के साथ करे।**

कई बार हम भगवान की ओर कार्य बोझ डाल कर करते हैं तो भी मंज़िल दूर है। बात तो ही बनती है अगर किसी काम में सफलता प्राप्त हो जाए। बच्चा स्कूल में पढ़ता हो, सारा वर्ष पढ़ाई करे, पेपर हों तो फेल हो जाए, बड़ा दुःख होता है। सारा वर्ष परिश्रम किया, फिर भी फेल हो गया। जब कारण ढूंढोंगे तो अवश्य यह कारण मिलेगा कि इस बच्चे ने मन लगाकर पढ़ाई नहीं की। यह विद्यालय तो अवश्य जाता रहा है, पुस्तकें भी लीं, मास्टर से स्कूल का कार्य लिया भी और किया भी लेकिन इसका पढ़ाई में मन नहीं था लगता, यह पढ़ाई को बोझ समझकर करता रहा है। इसके भीतर पढ़ने का कोई शौक नहीं था, चाव नहीं था। यह तो बस विवशता वश, भय वश पढ़ता रहा है। इसलिए सफलता प्राप्त नहीं हो सकी।

जो पढ़ाई को खुशी-खुशी करे, मन लगाकर करे, वह फेल नहीं होता। हमारी भी गुरु के दर पर की हुई सेवा, किए नेम तब ही सफल होंगे, तब ही प्राप्ति होगी, तब ही सफलता मिलेगी अगर समस्त कार्य प्रसन्नता और चढ़ती कला के साथ करेंगे, मन लगाकर करेंगे। सच्चे परमात्मा की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए, सफलता प्राप्त

करने के लिए, मंज़िल तक पहुंचने के लिए आवश्यक है कि गुरु की ओर जितने भी कार्य करें, खुशी और चढ़ती कला से करें, बोझ समझकर न करें। जितने भी परमार्थ की ओर आपके कदम हैं, कोई सेवा है, कोई नेम है, सिमरन का नेम है, नित्तनेम है, सुखमनी साहिब के पाठों का नेम है, कई बार हम बोझ समझकर करते हैं कि करना ही पड़ेगा। यह है बोझ। एक है चढ़ती कला से करना कि शुक्र है कि सेवा मिली है, किसी बहाने कोई सेवा हुई है!

पाठों की रौलें चल रही हों, कई शरीर ऐसे होते हैं कि रौल पर बैठते समय एक बोझ होता है, पता है कि दो से चार बजे की लिखाई है, देनी ही पड़नी है, बैठना ही पड़ना है! वही कहीं हृदय को छोटा सा करंट लग जाए, ज्ञान हो कि आग लगी पड़ी है संसार में, बड़ा शोर है, तेर-मेर बनी पड़ी है, बहुत कठिनाइयाँ हैं, शुक्र है कि गुरु के चरणों में दो घण्टे बैठ कर बाणी पढ़ूंगा, कोई फोन भी नहीं आएगा, कोई बुलाने वाला भी नहीं होगा।

बाबा जी बचन करते थे, ''रौल' देते समय तेरा ध्यान बाणी के एक-एक अक्षर में खोया हुआ हो, जुड़ा हुआ हो। फिर देख! तेरी पढ़ी हुई बाणी तेरी ज़िंदगी में कितना रंग लाती है!'' वही कार्य अगर ज्ञान हो तो चढ़ती कला के साथ होता है और वही कार्य अगर ज्ञान न हो तो बोझ डाल कर होता है। जब बोझ डाल कर हो वही मनुष्य दो घण्टे रौल में बार-बार घड़ी देखेगा कि कब मैंने उठना है, अगली रौल कब आएगी? इस प्रकार मनुष्य को सन्तुष्टि भी नहीं होती, ऊपर-ऊपर से ही

निकल जाता है। वही बाणी, जुड़कर पढ़े, खुशी एवं, चढ़ती कला से पढ़े, संतुष्टि आती है।

जो थोड़ा सा इस मार्ग पर चला है वही जानता है कि अगर उसका कोई नेम रह जाए, कितना दुःखी होता है उसका मन या अगर कहीं ज़रा सी देर हो जाए नेम से तो कितना उछाले खाता है मन! उसको होता है कि मैं शीघ्र से शीघ्र पहुंचूं गुरु साहिब के कमरे में और बाणी पढ़ूं, सिमरन करूं क्योंकि उसको बहुत तेज़ भूख लगी होती है। बड़ा आनन्द है जब सिमरन की, सेवा की, बन्दगी की भूख लगनी आरम्भ हो जाए। एक तो है कि नित्तनेम किया, करके गुटका रखा, और भीतर ख़्याल बन गए कि शुक्र है, कार्य समाप्त हो गया है पाठ का, शुक्र है नेम समाप्त हुआ! लेकिन जिसको भूख लगनी आरम्भ हो जाए, वह नेम करने के पश्चात यह नहीं सोचता कि कार्य समाप्त हो गया है। यत्न करता है, भीतर सिमरन का भोग न पड़े!

एक है भूख लगनी। एक है, धक्के से चलाना। हम कैनेडा गए। एक व्यक्ति, चार दिन उसके इलाके में रहे, चार दिन वह व्यक्ति हमारे साथ ही। हर प्रोग्राम पर साथ। दास ने पूछ लिया, "आपका काम-धन्धा किस तरह?" वह कहने लगा, "मेरा स्टोर है।" दास ने पूछा, "आप तो चार दिन से हमारे साथ हो, वहां पर किस तरह चलाते हो?" कहने लगा, "नौकर है वहां, वह काम चलाए जाता है।" दास ने पूछा, "क्या वह आपकी पूर्ति किये जाता है? नुकसान नहीं होता?" वह कहने लगा, "नुकसान तो होता है लेकिन क्या करूं? रहा ही नहीं जाता। बड़ी भूख

लगती है।"

वह प्रेम में आकर बताने लगा। कहता, "शनि और रविवार मैं अपना स्टोर बन्द रखता हूं। दोनों दिन गुरुद्वारे में ही समय व्यतीत करता हूं। वहीं पर थालियां साफ करनी, जोड़े झाड़ने, कीर्तन सुनना, बाहर से कोई कथा करने आया हो तो उसके विचार सुनने।" उसने जब अपनी अगली स्कीम सुनाई तो दास को और भी आश्चर्य हुआ। कहने लगा, "जब मेरे कार्य का हिसाब-किताब ऐसा बन गया, मैंने स्कीम बनाई है कि छः महीने कैनेडा रहना है और छः महीने दरबार साहिब गुरु रामदास के चरणों में।" जब गुरु का कार्य खुशी और चढ़ती कला से करो, फिर प्रसन्नता भी होती है।



परमार्थ के कार्यों में सभी ही बातें आएंगीं। रौलों की भी, सेवा की भी, प्रकाश की भी। जिनके घर में गुरु साहिब का कमरा हो, गुरु साहिब का प्रकाश हो, कइयों के घर में समस्या बनी होती है। कोई कहेगा, "प्रकाश तू कर, कोई कहेगा सुख आसन तू कर!"

एक बार हमें किसी के घर जाने का अवसर मिला। 10–12 कमरे उनके घर में। गुरु साहिब का कमरा बनाया तो है घर में लेकिन तीसरी मंज़िल पर, जहां आने-जाने में ही आलस्य आ जाए। घर में बहुएँ, पुत्र हैं लेकिन किसी के पास समय नहीं गुरु साहिब के प्रकाश के लिए। बुज़ुर्ग माता है जो इतनी सीढ़ियाँ चढ़कर जा नहीं सकती। गुरु साहिब के प्रकाश और सुख-आसन के लिए पाठी सिंह रखा है। वही कर जाते हैं। आप सिर्फ संग्रांद को जाता है परिवार, गुरु साहिब के कमरे में। किस को

क्या कहेंगे? घर में गुरु साहिब का प्रकाश तो है लेकिन भीतर गुरु के लिए कोई श्रद्धा नहीं।

बाबा नन्द सिंह जी जिन्होंने श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को हाज़िर-नाज़िर प्रगट गुरां की देह जान कर सेवा की, प्रकाश की मर्यादा बताते थे कि स्नान करके, पवित्र वस्त्र धारण करके, द्वार पर 'सतिनाम-वाहिगुरु' की आवाज़ देकर सम्मान के साथ कमरे में प्रवेश करना है, प्यार से नमस्कार करके, प्यार से दस पातशाहियों को 'धन्य-धन्य' कहकर श्री गुरु साहिब जी को 'धन्य' कहकर प्रार्थना करनी है, कृपा करके गरीब को दर्शन दीजिए! प्रकाश करते हुए पहली पउड़ी पढ़नी है। अब आप स्वयं अनुमान लगा लीजिए कि वह परिवार जिनके घर में प्रकाश कैसे हो रहा है और एक कोई इस तरह नित्य प्यार और चढ़ती कला के साथ करे प्रकाश, कितना अन्तर है?



कई घरों में भोग लगता है, 'थाला' जाता है गुरु साहिब के कमरे में। कई घरों में जहां नहीं प्रेम वाली बात वहां 'समस्या' बन जाती है। एक कहेगा, "तू थाली को लेकर जा" और दूसरा कहेगा, "तू लेकर जा"। यह क्या है? भोग लगाना एक बोझ बन गया है।

दास के अपने घर में, बच्चों को कहती है माता, "तू ले जा थाली।" एक कहेगा, "दूसरे को कहो, वह ले जाए।" हम सुनते रहते हैं कमरे में बैठे, फिर आवाज़ देते हैं कि हम ले जाते हैं। हमको प्रसन्नता होती है कि चलो! थाल लावेंगे भोग का, सुरति के साथ हाज़री लग जाएगी और साथ विनय प्रार्थना भी कर लेंगे! बाबा जी के साथ कोई दिल की बात भी कर लेंगे। एक है बोझ के

साथ, एक है प्रसन्नता से।

जिन घरों में गुरु साहिब का कमरा है, यत्न करो, तीन समय थाला भेजा करो, बाहर बैठ कर जपुजी साहिब का पाठ करो, दरवाज़े के बाहर बैठ कर, ज़मीन पर सेवक बनकर बैठकर करो, भावना बनाओ कि भीतर मालिक परशादा छक रहे हैं। थाल लाना है, हाथ धुलवाने हैं। दास तो जिस जल से हाथ धुलवाते हैं, वह अवश्य छक लेता है। पता नहीं उसी के साथ चलते रहते हैं।

कई कट्टर लोग यहां तक कह देते हैं कि भोग लगाने की क्या आवश्यकता है? लेकिन कभी इतिहास पढ़ो, जिन्होंने प्रेम, भावना और श्रद्धा से भोग लगाया, उन्हें भोग लगाने के सदके ही प्राप्ति हो गई, प्रत्यक्ष दर्शन हो गए। गुरबाणी कहती है :



*करी पाकसाल सोच पवित्रा हुणि लावहु भोगु हरि राए।। २।।*

(अंग १२६६)

बाबा नन्द सिंह जी और संत जवंद सिंह जी गुरुद्वारा सारागड़ी में तपस्या करते थे। एक बार मन में विचार आया कि हम रोज़ गुरु साहिब के आगे परशादा रखते हैं, छकते तो हैं नहीं! हमारा मन करता है कि गुरु नानक साहिब प्रत्यक्ष दर्शन देकर परशादा छकें। ऐसी भावना बनाई कि सतिगुरु! अगर आप प्रत्यक्ष होकर छकोगे तो ही हम छकेंगे, नहीं तो भूखे ही बैठे हैं। अब रोज़ परशादे का थाल बदलते हैं लेकिन कोई छकता नहीं। इन्होंने भी अपने मन को पक्का रखा। एक दिन भक्ति सफल हो गई। गुरु ग्रंथ साहिब में से प्रत्यक्ष गुरु नानक हाज़िर हुए।

अगर भक्त धन्ने की बात ले लें, धन्ने को ब्राह्मण ने एक पत्थर लपेट कर दिया था। पाठ पूजा तो आती नहीं थी लेकिन भीतर चाहत थी कि यह ठाकुर है, मैंने भी ठाकुर को ब्राह्मण के समान भोग लगवाना है। उसने बड़े चाव के साथ लस्सी रिड़की, रोटियाँ बनाईं, मक्खन निकाला, कटोरे में डाल कर रखा, ठाकुर के आगे रखकर अरदास की कि भोग लगाइए। क्या जानता था कि यह पत्थर का टुकड़ा है, भोग कैसे लगाएगा? जिद्द में आ गया। प्यार वाली जिद्द। कहता, "मैंने भी तुझे छकाए बगैर नहीं छकना!" तीन समय ताज़ा परशादा तैयार करके पत्थर के आगे रखना और उठा लेना। सात दिन इसी प्रकार बीत गए। आखिर उसके भोलेपन पर ठाकुर रीझ पड़े और परशादा छका।



बाबा नन्द सिंह जी बचन करते थे कि धन्ने के पत्थर में से नहीं था भगवान प्रकट हुआ बल्कि धन्ने की भावना में से प्रकट हुआ था। धन्ने ने अपनी श्रद्धा और भावना के साथ पत्थर में से भगवान को प्रकट कर लिया। अगर हम गुरु ग्रंथ साहिब, प्रत्यक्ष गुरां की देह पर भावना रखेंगे तो क्या हमें दर्शन नहीं होंगे? आवश्यकता है प्रतीत की, श्रद्धा की, प्रेम की, भावना की, उत्साह की, चाव की, उसके दर्शनों की अभिलाषा की। बाबा नन्द सिंह जी स्वयं श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में से प्रत्यक्ष गुरु नानक साहिब के हाज़िर-नाज़िर दर्शन करके भोग लगाते थे।

समाचार पत्र में एक बार इंटरव्यू आई थी एक फकीर की जो गुरु नानक साहिब के स्थान पर पाकिस्तान में सेवा करता है। पहले वह फकीर पहलवान था। उसका

नेम था महीने बाद उस गुरुद्वारे में जाना और वहां सेवा करना। विवाह उसने किया नहीं था। बँटवारे के पश्चात उसने उस स्थान की स्थाई रूप से सेवा संभाल ली। समाचार पत्र वाले ने इंटरव्यू में पूछा, "तू जो इतने समय से यहां सेवा-संभाल करता है, क्या तुझे कभी गुरु नानक जी ने प्रत्यक्ष दर्शन भी दिये हैं?" उसने कहा, "रमज़ की बातें बताई नहीं जातीं।" लेकिन वह समाचार पत्र वाला पीछे पड़ गया कि तेरे उत्तर देने से अनेकों का पार-उतारा हो सकता है। उस फकीर ने उसके बहुत जिद्द करने पर बताया कि मैं रोज़ संध्या को परशादे का थाला तैयार करता हूं, वस्त्र से ढककर, इस गुरुद्वारे की हज़ूरी में रखकर अरदास करता हूं कि परशादा छकिए। अगर सच्च बताऊं तो पहले गुरु नानक साहिब परशादा छकते हैं और उनके पश्चात् मैं परशादा छकता हूं।



बात तो सारी प्रेम की है, भीतर की चाहत की है। नामदेव के भीतर कितना चाव होगा! कोई ज़्यादा अमीर भी नहीं था, परंतु थोड़े-थोड़े पैसे जोड़ कर भगवान को भोग लगवाने के लिए सोने की कटोरी बनवाई हुई थी। गुरबाणी कहती हैः

*सुइन कटोरी अंम्रित भरी।।*
*लै नामै हरि आगै धरी।। २।।*

(अंग ११६३)

इसमें दसवन्ध भी आएगा। एक है, प्रसन्नता से गुरु की अमानत समझकर दसवन्ध देना लेकिन जिनके भीतर से अभी माया की पकड़ नहीं निकली, उनको दसवन्ध देना भी कठिन लगता है, कन्नी कतराते हैं। बाबा जी के बचन

हैं, जब हम एक हिस्सा गुरु-घर के लिए निकालते हैं तो घर में पड़े हुए नौ हिस्से भी अमृत बन जाते हैं, घर के राशन में भी बरकत पड़ जाती है, नहीं तो माया तो अग्नि है। जो दसवन्ध नहीं निकालते, उनका पैसा अस्पताल में लगता है या कचहरियों में। दसवन्ध देने से कुछ कम नहीं होता बल्कि शेष की माया भी सफल हो जाती है।

कई ऐसे हैं जिनके भीतर इतना प्रेम है गुरु के चरणों के साथ कि वे दसवन्ध से भी ऊपर उठे हैं। उन्होंने एक गोलक लगाकर गुरु को अपनी फर्म में हिस्सेदार बनाया है। बाबा दीप सिंह जी को अपनी फर्म में हिस्सेदार बनाया है, इतना मोह का त्याग किया है!

अगर कभी घर में कोई मुश्किल आ जाए तो मनुष्य मन्नत मांग लेता है कि मैं फलां सेवा दूंगा, 5000 की या 10,000 की सेवा दूंगा। जब मुश्किल चली गई, माया पास होती भी है लेकिन देते समय एक बोझ बना होता है, कई टाल-मटोल भी करते हैं। अगर देता भी है तो बड़ा मन को पक्का करके कि निकल रहे हैं, मेरे दामन से जा रहे हैं!

एक शहर की बात है। 18-20 वर्ष की। किसी की जायदाद थी, मकान, वह मकान बिकता नहीं था। दास को कहने लगे, "आप अरदास करो, हम एक लाख भलाई केन्द्र के लिए देंगे।" दास ने कहा, "खाली अरदास ने काम नहीं करना।" सुखमनी साहिब जी के 13 पाठ सप्ताह का नेम दिया और कहा, "देग कराकर अरदास करते रहो।" महीने, दो महीने में ग्राहक लग गया, सुखमनी साहिब की बाणी ने कृपा कर दी, समय

पास ला दिया, बंधन काट दिए, वह मकान बिक गया।

अब वह जो मन्न्त मांगी थी वो बोझ बन गई। payment मिल गई लेकिन अब हिम्मत नहीं पड़ रही थी। हमने भी कोई ज़ोर वाला नेम नहीं रखा हुआ था। कोई सेवा का कार्य हो, संगत में सिर्फ संकेत ही देते हैं। Door to Door वाला कोई काम नहीं। (पिता बहुत बड़ा है, सारी जिंदगी जिसने माया को हाथ नहीं लगाया, वह भूखा रहने देगा? रहने देता भी नहीं। बड़ी कृपा है) उसको एक दिन किसी सज्जन ने कहा, "तुमने मन्नत मांगी थी कि मैं दूंगा।" जिसको देना बोझ लगे, वह स्कीमें भी सोचता है। कहने लगा, "नहीं! मैंने सोचा था कि अगर एक महीने में हो जाएगा काम, तब दूंगा! दो सप्ताह ऊपर हो गए हैं, इसलिए नहीं बनता।" महीने बाद किसी और ने कह दिया, उसे भी यही बात कही। फिर कहने लगा, "आज सोचता हूं, कोई कमेटी डाल लेता हूं, वह थोड़ी-थोड़ी भरूंगा। फिर कमेटी उठाकर दे दूंगा।" यह क्या है? बोझ एक है, उसी चीज़ को प्रसन्नता और चढ़ती कला के साथ करना। एक है बोझ डाल कर करना। होता तो भीतर मोह है और मोह जन्म-मरण में डालता है।

वसती राम अमृतसर का एक साहूकार। कोई मुश्किल आ गई। मन्नत मांगी, फलां महापुरुष के डेरे 100 चादरें चढ़ाऊंगा। रोज अरदास करे। अरदास प्रवान हो गई, कार्य बन गया। अब चाहिए तो यह था कि कार्य हो गया, उस समय जाता डेरे पर और चादरें चढ़ाकर अपनी मन्नत उतार लेता लेकिन सोचता है, कल चढ़ाऊंगा।

अगले दिन फिर कहता है, "अच्छा कल सही!" अगले दिन फिर अन्य काम पड़ गया। कहने लगा, "अगले सप्ताह।"

ऐसा कहते-कहते कई महीने बीत गए। एक दिन मन में विचार आया कि 100 चादरें मन्नत मांगी थी लेकिन अब तो काफी समय बीत गया है, मंहगी हो गई होंगी, 50 ही चढ़ा देता हूं, अब दाम बढ़ गए होंगे! पचास के ख़्याल को लेकर बाज़ार की ओर चल पड़ा। मार्ग में सोचता कि महापुरुषों को कोई चादरों की कमी है? २० ही चढ़ा देता हूं! जब खरीदने गया, रेट देखे, मन में सोचता है कि दस ही चढ़ा देता हूं, दस ही काफ़ी हैं। एक Zero ही उतरनी है! कार्य बन गया तो मन्नत कहां की कहां चली गई? महापुरुषों ने ताड़ना की; कहते, "हमें तृष्णा नहीं लेकिन तू अगर इस प्रकार की चतुराइयां निरंकार के साथ प्रयोग करेगा तो ऐसे पीठ लगेगी कि ज़िंदगी भर नहीं उठ सकेगा।"

मक्खन शाह ने भी मन्नत मांगी थी। समुन्द्र में तूफ़ान आ गया तो अरदास की, "सतिगुरु! कृपा करो, मेरी किश्ती डूब रही है, मैं आप जी की बख़्शी कमाई में से 500 मोहरें भेटा करूंगा।" अरदास पहुंची गुरु साहिब के चरणों में और गुरु साहिब ने कन्धा देकर किश्ती को किनारे लगाया। जब तूफ़ान थम गया तो वह सबसे पहले गुरु की मंनत उतारने दिल्ली पहुँचा। वहां जाकर पता चला कि श्री गुरु हरिकृष्ण साहिब जी, 'बाबा बसे बकाले' कहकर ज्योति जोत समा गए हैं।

मक्खन शाह बाबा बकाले पहुंचा लेकिन वहां जाकर

22 मंजीदार देख कर बहुत परेशान हुआ और अरदास की गुरु-घर की अमानत आप ही मांग कर ले लेना। सभी के आगे 2-2 मोहरें रखकर मस्तक झुकाये जाए और सोचा कि जो असली गुरु होगा, वे आप ही मांग लेगा लेकिन बात न बनी। अगर बोझ समझकर दे रहा होता तो सोचता कि चलते हैं, नहीं तो न सही! लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। अभी भी सच्चे गुरु की तलाश जारी रखी।

किसी ने गुरु तेग बहादर जी के बारे में बताया। कहा, कोई तेगा-तेगा है, भोरे में ही बैठा तप करता रहता है। जाकर दर्शन किए। मन को थोड़ी सी ठंडक पहुंची और पांच मोहरें रखकर मस्तक झुकाया, और सोचा, "सच्चे होंगे तो बाकी मांग लेंगे!" गुरु साहिब ने अपना जख़्मी कंधा दिखाकर कहा, "ओए, मन्नत 500 की मांगी और चढ़ा पांच रहा है?" प्रसन्नता की सीमा न रही। सच्चे गुरु की तलाश ही तो कर रहा था, शीघ्रता से 500 मोहरें चरणों पर रखकर नमस्कार किया। छोटे लेवल के बाद बड़े लेवल तक, दसवन्ध या मन्नत जो भी कार्य, एक है बोझ तले करने एक है प्रसन्नता से करने, शुक्र है, शुक्र है!

अमृतसर की एक कालोनी की एक औरत, 60 वर्ष की आयु। घरवाले की Death हो गई। सोना बहुत था उसके पास। वह औरत बाबा दर्शन सिंह (घनूपुर काले वाले) महापुरुषों के पास गई। कहती, "दोनों पुत्र मुझे पूछते नहीं। स्वर्ण, माया बहुत है मेरे पास।" महापुरुष कहते, "अपने हाथों से जितना दान-पुण्य कर सकती है,

कर जा, वह दरगाही बात है।" पुत्रों के पास भी माया बहुत थी। वह औरत बड़े बाबा जी के पास जाकर कई कुछ भुगता कर आई और मन में प्रसन्नता थी कि जो कुछ कर रही हूं, दरगाह की बात बन रही है। भाव गुरु-घर के लिए दसवन्ध या माया भी देनी है और वह भी प्रसन्नता और चढ़ती कला के साथ।

हम अपने हृदय के भीतर झाँक कर देखें, हमें तो 4-5 बजे उठना भी कठिन लगता है लेकिन बाबा नन्द सिंह जी, रात्रि सवा बारह बजे केश स्नान करके, सुबह 7½ बजे तक समाधि में लीन रहना। फिर घण्टा सैर करनी तो भी सिमरन जारी। दोपहर परशादे का भोग लगाना, तीन बजे फिर दीवान लगने। संध्या को कीर्तन, रहिरास। रात्रि 10 बजे एक सुर का कीर्तन सुनने की हाज़री, अगले दिन फिर सवा बारह बजे स्नान कर लेना। कोई थकावट नहीं। चढ़ती कला।



माता कौलां जी के गुरुद्वारे, प्रतिदिन सुबह चार बजे दूध के साथ स्नान की सेवा होती है और रोज़ हाज़री लगती है। वह हाज़री सप्ताह के बाद दास के पास पहुंचती है। कौन आया और किस का नागा? इस प्रकार दास को हाज़री का कागज़ मिला। एक शरीर रोज़ सेवा में आने वाला, उसके सात में से तीन नागे थे। मैंने कारण पूछा तो कहने लगा, "आँख नहीं खुली, शारीरिक थकावट के कारण उठा नहीं गया।" दास ने विनती की, "शरीर थकता है, आत्मा नहीं थकती।" यदि चढ़ती कला अंदर हो फिर शरीर की थकावट कोई मायने हीं रखती, चढ़ती कला का सदका मनुष्य चलता रहता है।

'भाई नन्द लाल', बुर्ज़ुग उम्र लेकिन सबसे पहले अमृत समय के दीवान में पहुँचना। कलगियों वाले पातशाह ने एक बार कहा भी, "नन्द लाल! तेरी उम्र अधिक हो गई है, इतनी सुबह पहाड़ी पर चढ़कर न आया करो।" अगर होता कहीं बोझ समझकर हाज़री भरने वाला तो कहता, "चलो शुक्र है, गुरु साहिब ने तो कह ही दिया है, नहीं जाते!" लेकिन नन्द लाल जी अमृत वेला के दीवान की हाज़री कोई बोझ समझकर नहीं भरते थे, प्रसन्नता और चढ़ती कला से जाते थे। क्या उत्तर दिया? कहते, "सतिगुरु! मैं तो तुम्हारे दर का वो छोटा सा बच्चा हूं, जो तुम्हारे दर पर आकर लोटने का ढंग सीख रहा है; मेरी प्रार्थना है, कृपा करके इस बच्चे को लौटने का ढंग सीखने से न रोकना।"



आपके जीवन में कोई भी गुरु-घर की, किसी भी तरह की सेवा हो तो गुरु-घर की छोटी से छोटी सेवा भी प्रसन्नता और चढ़ती कला के साथ करना। कई बार इस प्रकार होता है कि आपको किसी ने कहा है कि भाई! तुम पर Ban (रोक) है, तुमने आधा घण्टा, एक सप्ताह के लिए जोड़े झाड़ने हैं, अगर किसी विवशता के कारण कर रहे हो कि मुझे सेवा करनी ही पड़नी है, मुझ पर Ban लगा हुआ है तो बात कुछ और है लेकिन कहीं यही सेवा प्रसन्नता और चढ़ती कला के साथ करो तो आनन्द ही कुछ और है। सेवा का ऐसा मज़ा आएगा कि अनुभव रस की प्राप्ति हो जाएगी। इतने चाव और प्रेम से सेवा करो कि पता नहीं यह बाबा बुड्ढा जी का जोड़ा है कि माता कौलां जी का!

बाबा नन्द सिंह जी, इतनी कमाई, बन्दगी, जप-तप के होते हुए भी अपने गले के हज़ूरिए के साथ दर्शन करने आई संगत के जोड़ों की सेवा आप करनी क्योंकि भीतर एक चाव था। मन में यही होता था कि मेरी भी किसी सबब गुरु-घर में हाज़री लग जाए! मुझे भी किसी ढंग से सेवा मिल जाए! बाबा कुन्दन सिंह जी, सभी सेवकों ने जब आराम में होना तो मुंह पर कपड़ा ले लेना कि मुझे कोई देखे न। (क्योंकि महापुरुषों को कोई सेवा नहीं करने देता) कमरे की चिट्कनी खोलनी और बाहर जाकर जितने जूठे बर्तन इधर-उधर पड़े हों, इकट्ठे करने तथा ले जाकर मांजने और बहुत प्रसन्न होना, झाड़ू देना, चरणों की धूल इकट्ठी करके मस्तक पर लगानी।



भाई नन्द लाल, इतने बड़े विद्वान, कितनी कलाओं में प्रवीण (माहिर)! लेखक! लेकिन कलगियों वाले के दर पर जूठे बर्तन माँजने, झाड़ू देना। बड़े-बड़े राजाओं से संदेश आने कि कहां अपना जीवन गंवा रहा है? हमारे पास आ जा, सफ़ेद आसनों पर बैठ सम्मान के साथ, इतना वेतन ले ले, लेकिन नन्द लाल जी ने क्या उत्तर देना? कहना, ''जो मज़ा और आनन्द कलगियों वाले के दर पर जूठे बर्तन साफ करने में है वह सफ़ेद आसनों पर कहां!''

अगर गुरु अरजन देव जी के जीवन की ओर दृष्टि डालें तो उन्होंने भी संगतों की सेवा हाथों से करके हमारे लिए पूरने (उदाहरण प्रस्तुत करना) डाले हैं। जब काबुल से संगत आ रही थी, दर्शनों को पिपली साहिब

रुकी और भेष बदल कर आप गए, संगत की सेवा की, उनको लंगर छकाया, बुज़ुर्गों की टांगे भी दबाईं। यहां तक कि जब संगत हरिमन्दिर साहिब के भीतर दर्शनों को गई तो संगत के जोड़ों की रखवाली के लिए बैठ कर संगतों के जोड़े भी अपने गले के वस्त्र से साफ किए। जब बाबा बुड्ढा जी को पता चला तो उन्होंने जाकर कहा, यह आप क्या कर रहे हो? संगतों के जोड़े साफ कर रहे हो? तो बहुत प्रेम से कहने लगे, "बाबा जी! हमें तो ऐसा लग रहा है, यह गुरु नानक साहिब का जोड़ा है।"

कोई अखण्ड पाठ करवाए, एक है, बस माया दे दी और बात समाप्त तथा एक है, कोई अखण्ड पाठ कराए तो भीतर चाव हो कि बैठ कर पास पाठ सुनूं, हाथ से चौर साहिब करूं! अगर घर करवाए तो चाव से पाठी सिंहों की सेवा करे। बहुत अन्तर है दोनों में। कोई कीर्तन करवाए, घर संगत आई हो, कोई रंग में सेवा करे और कोई बावर्चियों से सेवा करवाए, बहुत अन्तर है। एक बात अच्छी तरह से जान लेना कि जिनके भीतर चाव हो, उनके बुरे कर्म भी अच्छे बन जाते हैं। सिक्ख जो रंग में रहने वाला हो, उस ऊपर तो आने वाली मुसीबत भी गुरु नहीं आने देते, शीश पर हाथ रख कर टाल देते हैं।

आनन्दपुर से कलगीधर के संगत दर्शन करने आ रही थी। संगत के साथ एक 9 वर्ष का बालक भी था। उस बालक के भीतर संगत की सेवा का एक नशा था, रंग था, लुत्फ था, पाखण्ड नहीं था, भीतर वाली सांझ थी; और जो पाखण्ड से रहित हो जाए उस जैसा प्यारा सिक्ख कोई नहीं। इतना सा रहस्य है कि भीतर स्वामी

के साथ सांझ पड़ जाए, ऐसी सांझ कि उसकी संगत का, सेवा का रंग चढ़ जाए, ऐसे सिक्ख के तो कोई पिछले कर्मों के अनुसार बुरे कर्म भी लिखे हों तो वे भले बन जाते हैं, लेख बदल जाते हैं। जब मस्तक लगता है गुरु-चरणों पर तो गुरु युं रंग में, चढ़ती कला में सेवा करने वालों के लेख भी बदल देता है। उस बालक के भीतर इतना रंग था सेवा का कि एक-एक थाल उठाकर बर्तन साफ करने, संगतों की टांगें दबानीं।

संगत ने जहां कहीं भी थकावट के कारण लेट जाना लेकिन उस बालक ने सारा कार्य संभाल कर फिर विश्राम करना। जब पहुँचे, कलगीधर के दर्शन किए, संगतें बैठी हुई थीं। वह बैठा भी दर्शन कर रहा था, साथ में प्रेम से कीर्तन श्रवण कर रहा था। गुरु साहिब ने इशारे से उस बालक को अपने पास बुला लिया। पहले प्रसन्नता में रहे, फिर चेहरा उदास हो गया। फिर कलम, स्याही मंगवाकर बालक के मस्तक पर छोटी सी बिंदी बना दी। सभी बहुत आश्चर्यचकित हुए। संगतों के पूछने पर सतिगुरु ने रमज़ वाली बात बताई कि इस बालक की आयु विधाता ने लगभग 9 वर्ष लिखी है। आज इसका अंतिम दिन था। आज जिस संगत के साथ यह दर्शन करने आया है, संगत ने इसकी मृतक देह लेकर जाना था। हमने इस बालक की सेवा, प्रेम, रंग देख कर, बिंदी लगाकर इसकी आयु 9 से 90 वर्ष कर दी है।

अगर गुरु साहिब के जीवन की ओर झांकें तो उनका जीवन पढ़कर भी हमें चढ़ती कला और सेवा करने का उत्साह मिलता है। उनके बनाए पूरने (उदाहरणें), हमारे

लिए सच्ची सिक्खी के पूरने हैं। उनके द्वारा किए गए कार्य हमारे लिए रौशनी के मीनार हैं। उनके पाए नमूने जगत के लिए रौशनी-घर हैं। इस भवसागर में उन्होंने हमारे लिए रौशनी का मीनार खड़ा किया है। उन्होंने हमें सिखाए सिक्खी के पूरने, चढ़ती कला और प्रेम में भीग कर कठिन परिश्रम किये, हमें कुछ सिखाने के लिए।

गुरु अंगद साहिब ने भले घर जन्म लिया, भले घर विवाह, सुखों में पले हुक्म हासिल वाले थे लेकिन गुरु नानक की हर प्रकार की सेवा को चढ़ती कला और प्रसन्नता के साथ किया, हर आज्ञा को चढ़ती कला के साथ माना। नमक की गठड़ी को अपने सिर पर उठाया, नदीन की कीचड़ भरी गठड़ियां ढोईं, चरण पखा लिये हैं, कपड़े धोते हैं, कौन सी सेवा जो उन्होंने अपने गुरु की नहीं की? लेकिन यह सारी सेवा, कोई उदास सूरत नहीं करवा सकती। भाई लहना जी, गुरु नानक की हर सेवा, रस में, उत्साह में, चढ़ती कला में करते थे। नासमझ लोग कहते थे, पता नहीं लहने का मस्तिष्क घूम गया है जो परमेश्वर के दिए सुख-आराम त्याग कर, अपनों को त्याग कर, घर-बार छोड़ कर, नानक-तपे के द्वार जाकर सेवा कर रहा है।

एक दिन गुरु नानक साहिब जी के प्रेम में बंधे, नमक की गठड़ी उठाकर पैदल ही चल पड़े गुरु साहिब के दर्शनों के लिए। जब करतारपुर पहुंचे, घर गए तो पता चला कि गुरु साहिब खेतों में गए हैं तो खेतों की ओर चल पड़े। वहां जाकर देखा, सेवक खेतों में से धान

का नदीन निकाल रहे थे अर्थात घास-बूटी निकाल रहे थे। वे भी नदीन निकालने लग पड़े। जब गुरु साहिब ने कहा, ''इसे छोड़ दो और जो घास-बूटी एकत्रित हो गई है, उसे बांध कर घर ले जाकर पशुओं को डाल दो'' लहना जी ने आज्ञा मिलते ही तुरन्त पानी से भीगे हुए, कीचड़ से भरे घास की गठड़ी को बांधा और सिर पर उठाकर घर की ओर चल पड़े। कीचड़ की छीटों से सफ़ेद पोशाक स्थान-स्थान से भीग गई लेकिन भीतर चढ़ती कला थी। कहने लगे, ''यह कीचड़ नहीं, केसर है।''

एक बार सर्दी की ऋतु थी, बारिश हो रही थी। अर्द्ध रात्रि ही व्यतीत हुई थी। गुरु जी के डेरे की एक दीवार का कुछ भाग गिर गया। गुरु जी ने कहा कि दीवार को अभी बनाया जाए। पुत्र कहते, ''अर्द्ध रात्रि का समय है, हाथ-पैर सुन्न होते जा रहे हैं, सुबह मज़दूरों से बनवा देंगे।'' गुरु साहिब ने कहा, ''गुरु का कार्य सिक्खों को ही करना चाहिए।'' लेकिन किसी का साहस न हुआ परंतु गुरु अंगद साहिब जल्द उठे और खुशी-खुशी दीवार बनाने लग पड़े।

एक बार गुरु नानक साहिब ने अपने पुत्रों को कहा, ''हमारे मैले बिस्तर धो लाओ। (यहां एक बात स्मरण रखना कि गुरु को आवश्यकता नहीं कि सिक्ख मेरी आज्ञा मानें और मैं हाकिम बन जाऊं। गुरु को मानस वश करने का चाव नहीं, गुरु किसी को अपना दास बनाने के लिए नहीं बल्कि सिक्खों की मैल निकालने के लिए, अहंकार निकालने के लिए, कमियों को निकालने के लिए, स्वर्ण को शुद्ध स्वर्ण, कुंदन बनाने के लिए

कौतुक रचता है। गुरु को कोई इच्छा नहीं कि मैं सेवादारों की तलाश करूं। गुरु तो अपने आप में पूर्ण है, ज़रूरतरहित तथा बेपरवाह है, लेकिन ऊष्णता देकर, कौतुक रचाकर मैल निकालता है।) पुत्रों ने कहा कि सुबह धोबी को बुलाकर धुलवा देंगे।

लेकिन जब भाई लहना जी को कहा। भाई लहना जी सिक्खी में पूर्ण निकले, अंहकार रहित निकले, प्रेम में पूर्ण निकले। उसी समय उठे और वस्त्र धोकर ले आए। जिसके भीतर चढ़ती कला हो, वह तो न रात्रि देखता है और न दिन। वह तो यही जानता है कि गुरु का हुक्म बजाना है। गुरु नानक साहिब ने जो भी सुख से बचन कहना, भाई लहना जी ने उसी समय तैयार रहना और सेवा करनी। अगर कहा, 'कीचड़ में से कटोरा निकाल लाओ' तो वो भी निकाला, अपने सुन्दर सफ़ेद वस्त्रों को भी परवाह नहीं की। कहने से भाव कि गुरु नानक साहिब जी ने जो भी सेवा बख़्शी, वह चढ़ती कला के साथ की, जिसके कारण गद्दी के स्वामी बन गए।

अगर गुरु अमरदास जी की सेवा की ओर देखें, 72 वर्ष की आयु, बुजुर्ग अवस्था, परन्तु गोइंदवाल साहिब से गागर जल की भरकर खडूर साहिब लेकर आनी और गुरु अंगद साहिब को स्नान करवाना। अर्द्ध रात्रि, सर्दी हो या गर्मी, नंगे पांव जाना, और चलना भी किस प्रकार? उल्टे पांव कि कहीं गुरु की ओर पीठ न हो जाए। आगे जाकर एक मोड़ आता था, जहां सीधा होना पड़ता था। वहां पहले अरदास करके क्षमा मांगनी कि सतिगुरु! पीठ हो रही है। जाकर गागर भी इस ढंग से

भरनी कि भरते समय या भरने के पश्चात धरती पर न रखनी पड़े। गागर शीश पर उठाकर ही दरिया में उतर जाना। सारे वस्त्र भीग जाने और उसी प्रकार ही भीगे वस्त्रों के साथ वापस खडूर साहिब चल पड़ना। 12 वर्ष में किसी भी दिन कोई छुट्टी नहीं। होने दी। इतनी उम्र और इतनी कठिन सेवा! यह क्या था-गुरु अमरदास जी ने स्वामी की सेवा बोझ डाल कर नहीं की, प्रसन्नता और चढ़ती कला के साथ की। चढ़ती कला थी गुरु अमरदास जी के भीतर, वह चलाती जाती थी। 12 वर्ष में अंधेरी भी, बारिश भी, सर्दी भी, गर्मी भी, लेकिन छुट्टी कोई न होने दी। चढ़ती कला थी गुरु अमरदास जी के भीतर। फिर वही बात ले जाती है आगे!

भाई जेठा जी (गुरु रामदास जी) गुरु अमरदास जी के दामाद हैं, लेकिन अन्य सेवकों की भांति टोकरी उठाकर मिट्टी ढोते हैं। एक बार उनके रिश्तेदार, उनको इस प्रकार टोकरी ढोते देख कर बहुत गुस्से में आ गए और गुरु अमरदास जी को शिकायत की कि आप यह अच्छा नहीं कर रहे जो दामाद से मज़दूरों की तरह काम करवाते हो। लेकिन भाई जेठा जी यह कार्य मजबूरी से नहीं थे कर रहे, प्रसन्नता से सेवा कर रहे थे। गुरु साहिब को कहने लगे, "ये तो नासमझ हैं, गुरु की सेवा के आनन्द को नहीं जानते।"

जब भाई जेठा जी और भाई रामा जी को चबूतरा बनाने के लिए कहा गया, और 5-6 दिन जब गुरु अमरदास जी हर रोज़ चबूतरे बनवाते रहे और देख कर नापसंद करके उन्हें तोड़ने का हुक्म देते रहे। जब 5-6

दिन यही खेल चलता रहा तो किसी सिक्ख ने रामा को कहा कि आप सारा दिन परिश्रम करके बनाते हो लेकिन गुरु साहिब आकर तुड़वा देते हैं तो रामा ने क्या कहा? "उनकी अवस्था बड़ी हो गई है, स्मरण नहीं रहता, जैसे कहकर जाते हैं, वैसे ही बनाता हूं लेकिन अगले दिन और कुछ बताकर जाते हैं, तुड़वा देते हैं।" यह क्या है–गुरु की सेवा प्रसन्नता से नहीं, बंधन के कारण हो रही है। लेकिन जब भाई जेठा जी को यही बात कही तो वे कहते, "मैं अलपग हूं, कुछ न कुछ बात समझने में चूक जाता हूं। गुरु साहिब दयावान हैं, रुष्ट नहीं होते, नये ढंग से युक्तियां समझाते हैं। मैं फिर बनाता हूं। जब वे बनाने की आज्ञा देते हैं तो मुझे चाव चढ़ जाता है लेकिन जब हुक्म होता है तोड़ दे, मुझे अपनी बुद्धि पर दुःख होता है लेकिन जब गुरु साहिब मुझे तोड़ते हुए देख कर प्रसन्न होते हैं, मैं फिर खिल जाता हूं। अगर वे पुनः बनवा कर प्रसन्न होते हैं तो उनकी प्रसन्नता मुझे प्रसन्नता देती है। मेरी प्रसन्नता तो उनकी प्रसन्नता में है।" अगर गुरु के लाडले सिक्खों के इतिहास की ओर नज़र दौड़ाएं तो उन सिक्खों को ही गुरु की प्रसन्नता मिली, उन्हें ही प्राप्तियां हुईं जिन्होंने गुरु-घर की सेवा को चढ़ती कला के साथ निभाया।

गुरु तेग बहादुर जी के समय एक भाई 'मीहां' हुआ है। वह जल की सेवा करता था। गागर में जल ढोता। उसकी इतनी सेवा थी, रंगा हुआ था सेवा में, जल की गागर लेकर जल ढोना, प्रेम के रंग में रंगकर सेवा करनी। एक होती है सेवा, कहकर काम करवाना। एक

है-मनुष्य अपनी Duty समझता है कि मेरी Duty है इस सेवा की। उसकी सेवा में यह गुण भी था कि अपनी Duty समझता था। अगर लंगर में जल की आवश्यकता है तो अपनी Duty समझना, स्नान के लिए जल की आवश्यकता है, अपनी Duty समझता था।

गुरु साहिब ने एक बार इसको कहा भी था कि तू ऐसे जल की सेवा का कर्तव्य निभाता है कि वर्षा समान बरसता ही रहता है। इसी से इनका नाम भाई मीहां पड़ गया। इसकी सेवा में प्रेम था, जिम्मेदारी थी, रंग था, दिन-रात लगन के साथ सेवा करनी। बंधन से ऊपर उठ चुका था। एक बात स्मरण रखना, सेवा की थकान उस समय ही होती है जब तक बंधन है। प्रेम के नशे में आ जाओगे, कोई थकावट नहीं, कोई शर्म नहीं। ये बातें नहीं रहतीं। पीतल की गागर जल की भरकर सिर पर उठाकर जहां भी जल की आवश्यकता होती वहां पहुंचाना। सेवा के लिए तत्पर रहना।

इतिहास लिखता है कि जल की गागर ढोते-ढोते सिर पर जख़्म हो गया, पीतल की गागर के कारण। रूकावट पड़ गई। अब अगर गागर उठाता है तो जख़्म दर्द करता है और अगर जख़्म की परवाह करता है तो सेवा में त्रुटि आती है। सोचा, सेवा में त्रुटि नहीं आनी चाहिए, Duty में अन्तर न पड़े, जख़्म दर्द होता है तो होने दो, सेवा नहीं छोड़नी! जख़्म की परवाह नहीं की। जख़्म बढ़ता जा रहा है। सोचा, क्या करूं? मन में विचार बनाया और कपड़े का एक बिन्नू बना लिया कि बिन्नू पर गागर आएगी और जख़्म में दर्द कम होगा। अब बिन्नू के

ऊपर गागर रखकर दिन-रात प्रेम के नशे में सेवा करता रहा।

कितने ही दिन इसी प्रकार ही बीत गए। दवा-दारू भी न किया कि अगर दवा-दारू की तो सेवा में त्रुटि आएगी। जल की गागर ढोते-ढोते एक समय ऐसा भी आ गया कि जख़्म में कीड़े चलने आरम्भ हो गए।

एक दिन बिन्नू कसने के लिए बिन्नू सिर से उतारा तो माता गुजरी की दृष्टि पड़ गई। क्या देखा? मींहे के सिर में जख़्म हैं और जख़्म में कीड़े चल रहे हैं। माता जी ने गुरु साहिब को प्रार्थना की, "आपका सिक्ख मीहां, उसकी सेवा में इतना प्रेम, इतना परिश्रम है, इतने रंग में सेवा कर रहा है कि जो सिर पर गागर उठाता है, सिर पर जख़्म है और जख़्म में कीड़े चल रहे हैं। कृपा करो, इसकी सेवा को सफल बनाकर निहाल करें।"

अगले दिन गुरु साहिब ने भाई मींहे को दीवान में बुलाया और कहा, "तुम्हारी सेवा से प्रसन्न हैं। तुम्हारी सेवा सफल हो गई है। यहां से कहीं दूर जाकर डेरा बनाओ और सिक्खी का प्रचार करो।" यह एक बहुत बड़ी **Duty** होती है, पदवी होती है, जिसको गुरु साहिब आप बख़्शिश करके प्रचार करने के लिए भेज दें।

अगर भाई मंझ का ज़िक्र लें, उसको भी सेवा में रंग लगा था। भाई मंझ पहले यह सखी सरवर का उपासक था। जब गुरु अरजन साहिब के दर्शन हुए तो गुरु साहिब से सिक्खी की मांग की। उस वन से सूखी लकड़ियां लाकर लंगर में डालने की सेवा ले ली। एक दिन लकड़ियां लेकर आ रहा था कि मार्ग में बहुत तेज़ तूफ़ान

आ गया। अंधेरे के कारण कुआँ नज़र नहीं आया और कुएँ में गिर पड़ा। कुएँ में पानी कम था। उसने लकड़ियों की गठड़ी को सिर पर ही उठाए रखा कि अगर नीचे पानी में रखी तो भीग जाएगी।

अन्तर्यामी सतिगुरु, भाई मंझ की गुरु-घर के लिए सेवा में इतनी श्रद्धा देख कर बेचैन होकर नंगे पांव भाग पड़े। गुरु साहिब ने सिक्खों को कहा, "रस्से लाओ!" जब कुएँ पर पहुंचे तो सिक्खों को आज्ञा दी कि रस्सा लटकाओ और भाई मंझ को बाहर निकालो! सिक्खों ने रस्सा लटकाया और कहा, "रस्से को पकड़कर ऊपर आ जा।" लेकिन धन्य भाई मंझ, गुरु-घर की सेवा का इतना रंग लग चुका था कि कहने लगे, "पहले इस रस्से से लकड़ियां बाँधूंगा, उन्हें बाहर खींचो ताकि लंगर में लकड़ियों की कमी न आए।" भाई मंझ का सेवा प्रति निश्चय को देख कर बड़े प्रसन्न हुए, गले से लगा लिया और वरदान दियाः

*'मंझ पिआरा गुरू नूं, गुरू मंझ पिआरा।*
*मंझ गुरू का बोहिथा, जग्ग लंघणहारा।*

जगत को तारने वाला बना दिया।

अगर हरिमन्दर साहिब के पौड़ों का ज़िक्र लें, मसंद बोझ समझकर पौड़ बनाते थे। इधर ईंट रखी, उधर ईंट रखी, बीच में काम घटिया करते जाना। दूसरी ओर भाई बहिलो जिन्हें गुरु साहिब ने कहा था कि यह बाही तूने पूर्ण करनी है गलियों का कूड़ा इक्ट्ठा करके, डाला भट्ठे में ताकि ईंट लाल निकले! यही अन्तर है। भाई बहिलो ने सेवा चढ़ती कला के साथ की और बचन मिल गया,

'भाई बहिलो सबसे पहिलों'। मंसदों को तीन बार गुरु साहिब ने ताड़ना की लेकिन उन्होंने बचन न माना तो क्या बचन मिल गया, 'ये पौड़ फिर ढहेंगे-फिर बनेंगे'।

अगर बाबा कुंदन सिंह जी के जीवन की ओर झांकें, मैंने नहीं कोई ऐसा देखा कि टांगें न चलती हों, सेवादार पकड़कर खड़े करें लेकिन अरदास हो रही है। कण्ठ नहीं चलता लेकिन हुक्मनामा लेना नहीं छोड़ा। शरीर नहीं चलता। सेवादार उठाकर खड़े करते हैं लेकिन सेवा का काम नहीं छोड़ा। बोझ डाल कर नहीं, परमार्थ का कार्य प्रसन्नता से हो रहा है। परमार्थ के जितने भी कार्य हैं बोझ समझकर न करे। अगर बोझ समझकर करेगा फिर मंज़िल दूर है, प्राप्ति नहीं, प्रसन्नता से करे कि शुक्र है, सेवा ली है!



कोई बीबी बाबा दीप सिंह जी के दर पर झाड़ू की सेवा कर रही थी। पास से कोई अन्य बीबी गुज़रते हुए पूछती है, "बहन! आज कितनी तारीख है?" तारीख बताई। वह बीबी कहती, "शुक्र है, दो दिन ही रह गए हैं।" कहती, "गई थी महापुरुषों के पास, कोई मुश्किल थी। उन्होंने कहा था, आधा घण्टा रोज़ शहीदां साहिब झाड़ू दिया कर। 40 दिन हैं, 38 दिन गुज़र गए हैं, शुक्र है।" यह क्या है? काम बोझ डाल कर हो रहा है। अवश्य ध्यान देना! जितने भी परमार्थ वाली साईड को तुम्हारे कदम हैं, कोई नेम हैं, सिमरन है, सेवा है, कई बार बोझ डाल कर करते हो कि करना ही पड़ना है! परमार्थ के सभी कार्यों को चढ़ती कला के साथ करो कि शुक्र है, किसी भी कारण से सेवा तो हुई है। अगर कीर्तन करो,

कीर्तन सुनो, कीर्तन का रूप बन जाओ। मर्दाना इतने रंग में कीर्तन करता था कि गुरु नानक साहिब की 3-3 दिन समाधि लग जाती थी।

माता राधिका जी हुए हैं। सिन्धी थे। जब कीर्तन सुनते थे तो उनकी ऐसी समाधि लगती थी कि सुरति के साथ ही गुरु रामदास जी के दर पर पहुंच जाते थे। कीर्तन करो तो बंधन में नहीं, संसार की वाह-वाह लेने के लिए नहीं, कीर्तन करो गुरु को प्रसन्न करने की इच्छा लेकर।

बाबा नन्द सिंह जी, संत सुजान सिंह को बचन करते थे कि युं ही व्यर्थ घूमता फिरता है, कभी यहां कीर्तन, कभी वहां कीर्तन, गुरु ग्रंथ साहिब के सम्मुख कीर्तन करो, लोग तुम्हारे घर कीर्तन सुनने आया करेंगे जो सब सच्च हुआ। अभी भी है।



एक होता है, कीर्तन करना चढ़ती कला के साथ; एक है, टाईम व्यतीत करना ढीला सा। हमारे लड़के भी कई बार समय व्यतीत करते हैं। कह दिया जाता है। फिर वे न जाने बहाना बनाते हैं या सही कहते हैं! कहेंगे, कण्ठ खराब था, ज़्वर था, तबीयत ढीली थी। यह क्या है? कार्य बोझ समझकर हो रहा है।

नगरोटा शहर का एक वाक्य है। बाबा नन्द सिंह जी कुछ समय वहां की पहाड़ियों पर रहे। एक बार रागी सिंहों ने कीर्तन आरम्भ किया। जो रागी थे वे बोझ समझकर कीर्तन कर रहे थे कि कब डयूटी समाप्त होगी। बाबा जी ने उन रागी सिंहों को बाहर निकाल दिया। कहने लगे, "कीर्तन करते हैं बोझ डाल कर।"

आजकल तो टेप रिकार्डर हैं, पहले **Record Player** होते थे। पास ही में बाबा जी का ड्राईवर हरी सिंह खड़ा था। उसको कहने लगे, ''बोझ डाल कर कीर्तन करते हैं, सबको बाहर निकाल दिया है। जा भीतर से रिकार्ड वाली मशीन लेकर आओ, उसे लगाकर सुनते हैं कीर्तन!'' हरी सिंह को इतनी प्रसन्नता हुई कि बाबा जी ने मुझे कोई काम दिया है। बाबा जी जिसको आवाज़ देकर कोई कार्य करने को देते थे, उसकी प्रसन्नता की सीमा नहीं रहती थी। हरी सिंह को भी इतनी प्रसन्नता हुई कि मुझे कोई कार्य करने को कहा है। उसने समझा कि मिश्री का प्रसाद लाने के लिए कहा है। भीतर जाकर कहने लगा, ''बाबा जी ने मिश्री का प्रसाद मंगवाया है।''

बाबा ईशर सिंह जी (जो उस समय सेवक थे) कहने लगे, ''इस टाईम पर आवश्यकता नहीं मिश्री की। क्या कोई पहाड़ से आए हैं, उन्हें देना है प्रसाद?'' वह कहने लगा, ''पहाड़ से तो नहीं आए। शरीर तो **3-4** ही हैं।'' बाबा ईशर सिंह जी समझ गए कि यह प्रसन्नता में इतना आपे से बाहर हो गया है कि मुझे कोई काम कहा है, मेरी सेवा लगी है, यह तो समझ ही नहीं पाया, सही ढंग से सुन ही नहीं पाया कि उन्होंने क्या मंगवाया है!

बाबा ईशर सिंह जी बाबा नन्द सिंह जी के पास गए और जाकर 'सतिनाम' की आवाज़ देकर पूछा, ''मिश्री का प्रसाद मंगवाया है?'' बाबा जी कहते, ''भागता हुआ गया है कि मेरी सेवा लग गई है! बात भी नहीं सुनी कि रिकार्डों वाली मशीन मंगवाई है।'' बाबा ईशर सिंह जी कहने लगे, ''उसकी क्या आवश्यकता पड़ गई है? रागी

सिंह जो हैं।" बाबा जी कहने लगे, "चढ़ती कला से नहीं करते कीर्तन, बोझ डाल कर करते हैं, सबको बाहर निकाल दिया है!" क्या सिखाना था? कि जो भी परमार्थ के कार्य हैं बोझ डाल कर नहीं करने! उन्हें दण्ड मिले ताकि कल को भीतर आएंगे तो कोई गुण लेकर आएंगे क्योंकि करंट लगाना पड़ता है! बच्चे स्कूल में पढ़ते हैं। यदि अध्यापक उनको कुछ कहे ही न, तो वे कैसे सीखेंगे? अगर अध्यापक कुछ कहता है तो भले के लिए। ताड़ना। तारना है। बाबा ईशर सिंह जी भीतर जाकर रिकार्डों वाली मशीन ले आए। बाबा नन्द सिंह जी वह लगाकर समाधि में लीन हो गए ताकि उन्हें सज़ा मिले और सबक मिल सके।



यह आठवां गुण है कि परमार्थ के लिए जो भी कार्य करे, नेम करे, सेवा करे, प्रसन्नता और चढ़ती कला के साथ करे, बोझ डाल कर न करे। प्राप्ति तभी है यदि सभी काम चढ़ती कला के साथ करे। लेकिन अब प्रश्न यह उठता है कि चढ़ती कला आए कैसे? सबसे पहली बात, अपने भीतर यह बात मन में बसा लीजिए कि मनुष्य जन्म मिला ही भक्ति के लिए है। नन्द लाल जैसे विचार भीतर भरो कि केवल मकान बनाने के लिए, माया इकट्ठी करने के लिए नहीं आए धरती पर। नन्द लाल जी लिखते हैं:

*'भगती तेरी दी तांघ असां नूं,*
*एस सरीरे लिआई।*
*नहीं तां की सी लोड़ आवण दी,*
*जिस पिच्छे उठ धाही? मेरे माही!*

जब भीतर यह बात बस जाएगी कि मैं तो सिर्फ भक्ति करने, परमेश्वर की बन्दगी करने आया हूं शेष तो इर्द-गिद का वातावरण जीवनयापन के लिए चाहिए, फिर चढ़ती कला है। जैसे गुरु हरिगोबिन्द साहिब जी के भी बचन हैं:

*पुत्र निशान, औरत-ईमान, दौलत-गुज़रान।*

कई बार ऐसा भी होता है, कई ऐसे होते हैं जिनके भीतर शौक जागृत होता है गुरु-घर जाने का, सेवा का, बाणी पढ़ने का लेकिन कुछ समय पश्चात् किसी मनमुख (बुरा व्यक्ति) की संगति मन बदल देती है कि क्या करना है इस ओर लग्न लगाकर? इसलिए कुसंग से बचकर रहना है! यत्न करना है, दूसरे को भी सही ओर लगाने का। कहीं ऐसा न हो कि हमें मनमुख की संगति बहाकर ले जाए! गुरु-घर की ओर लगा हुआ मनुष्य जब भी गिरता है, कुसंग के कारण।

कई बार ऐसे विचार मन में आने लग पड़ते हैं कि कितना समय हो गया है बाणी पढ़ते, नेम करते, सेवा करते लेकिन मेरी मांग तो पूरी हुई नहीं, मुश्किल तो हल हुई नहीं! क्या फ़ायदा है? छोड़ो इसे! ऐसी बातें और ऐसे विचार मनुष्य को ढहती कला की ओर ले जाते हैं। अगर कोई प्राप्ति नहीं हुई तो घबराना नहीं, अपने भीतर कमी को ढूंढना है कि अवश्य ही मेरे जपने में या मेरी सेवा में कमी रह गई होगी। इन विचारों से अपने आप को चढ़ती कला में रखना है कि मेरा ही कोई कर्म भारी होगा, जिस कारण अभी तक बात नहीं बनी। क्या पता गुरु ने कृपा करके मेरा कितना दुःख कम कर दिया है जो मुझे दिखाई नहीं दे रहा!

कई बार हम सांसारिक चाहत के कारण इस मार्ग पर चलते हैं प्रसन्नता से, लेकिन जब मांग पूरी हो जाती है तो सोचते हैं कि क्या आवश्यकता है मुझे सेवा करने की, बाणी पढ़ने की? कई तो इसे त्याग ही देते हैं। कई अगर करते भी हैं तो बंधन के साथ कि चलो! भगवान का उलाहमा उतार दें। अगर सांसारिक मांगों के साथ-साथ कहीं गुरु को मिलने की, परमेश्वर की प्राप्ति की इच्छा लेकर इस ओर अपना झुकाव करेंगे तो चढ़ती कला में रहेंगे।

सेवा करते-करते कई बार शरीर थकान महसूस करता है। मन करता है, बस करो, अधिक सेवा करके क्या करना है? कई बार गुटका लेकर पाठ कर रहे होते हैं तो मन में आलस्य आ जाता है। मन कहता है, बस कर! ऐसे समय में हम अधिकतर सेवा या पाठ छोड़ देते हैं। अगर करते भी हैं तो विवशता के कारण। ऐसे समय में ऐसे विचार बनाने चाहिएं कि हे मन! अब तुम मेरे नहीं रहे, मैंने अब तुझे गुरु का बना दिया है, मैं तुझे अब गुरु को सौंप चुका हूं, तू अब गुरु का हो चुका है। ऐसे विचारों के साथ हो सकता है कि फिर आपके भीतर चढ़ती कला आ जाए।

जिस प्रकार गाड़ी में से आवाज़ आने लगे या और कोई खराबी आ जाए तो उसको सर्विस की आवश्यकता पड़ती है और सर्विस के पश्चात वह फिर सही ढंग से चलना आरम्भ कर देती है इसी प्रकार हमारे मन की सर्विस संगत में जाकर होती है। हमारा मन भी कई बार गुरु के कार्यों से ढीला पड़ रहा होता है और जब इसको संगति मिले, सतिपुरुषों के विचार मिलें, फिर चढ़ती

कला में चला जाता है। इसलिए भले पुरुषों की, सतिपुरुषों की संगति अवश्य किया करो। गुरु साहिबों का जीवन, गुरु के लाडले रंगे हुए सिक्खों का जीवन पढ़-सुन कर, बाणी पढ़ने, सेवा करने का उत्साह ढहती कला की ओर जा रहा हो तो उनके विचार मन में आने से फिर से हमारा मन उत्साह से भरपूर हो जाता है।

एक बार दास संगत के साथ गोइंदवाल साहिब जा रहे था, पथ यात्रा। चलते-चलते बहुत थक गया। एकदम जैसे सुरती में ज्ञान मिलता है, गुरु अमरदास जी के जीवन की रील भीतर चलने लग पड़ी। गुरु अमरदास जी 12 वर्ष निरन्तर पथ-यात्रा करते रहे, तुम तो कहीं एक बार जा रहे हो। गुरु अमरदास, तुम्हारे पिता दो मन चालीस सेर को एक मन की गागर शीश पर उठाकर जाते थे मगर तुम तो रिक्त शीश लेकर जा रहे हो (क्योंकि एक ट्राली रखी हुई थी साथ, बैग य अन्य जो भी सामान वगैरह था सब कुछ उसमें था)! तेरे पिता गुरु अमरदास जी की आयु 72 वर्ष लेकिन तुम्हारी आयु 35-36 वर्ष है। इन विचारों के आते ही मन को फिर उत्साह मिल गया है।

सबसे आवश्यक सही और सरल मार्ग.......गुरु के चरणों में अरदास। लेट जाया करो गुरु के चरणों में, गुरु आश्रय देता है। उसके पास कई ढंग हैं सेवक को रखने के। वह गिरने नहीं देता, वह डगमगाने से बचाता है। उसके कौतुक आश्चर्यजनक होते हैं। वह सर्वकला समर्थ है और आप अपनी कृपा करके, बख़्शिश करके चढ़ती कला बख़्शता है।

जीवन का सही आनन्द परमात्मा के मिलाप में है। हमने परमेश्वर की प्राप्ति के लिए सतिपुरुषों की अनमोल युक्तियों को पढ़ तो लिया लेकिन इन युक्तियों को केवल पढ़ लेने से ही हम परमेश्वर का मिलाप प्राप्त नहीं कर सकते! इसके लिए आवश्यक है कि इन युक्तियों के अनुसार जीवन को ढाला जाए। परमेश्वर को प्राप्ति करना कोई शीघ्रता का कार्य नहीं। यह कोई दिनों, सप्ताहों और महीनों की बात नहीं। हठ-योग से नहीं बल्कि धीरे-धीरे गुरु-कृपा द्वारा मंज़िलें तय होती हैं। हम कितनी भी बाणी पढ़ लें, संगति करते जाएं, संतों-महापुरुषों के बचन पढ़ते और सुनते जाएं, अगर हम उन पर चलते नहीं, अपने भीतर के दोषों को ढूंढ कर उन्हें निकालते नहीं तो कई वर्षों के पश्चात् भी हम खाली के खाली रह जाएंगे।



हम कई बार हम सोचते हैं कि हम बहुत कुछ कर रहे हैं लेकिन अक्सर हम देखते हैं कि हम जहां से चले थे, वहीं के वहीं खड़े हैं, हमारे कदम तनिक भी अपनी मंज़िल के पास नहीं पहुंचे बल्कि मंज़िल से अधिक दूर होते जा रहे हैं। शान्ति, सहज से और दूर होते जा रहे हैं। भाई वीर सिंह जी-सिमरन के अभ्यास के साथ आप परमार्थ के मार्ग पर उन्नित कर रहे हो कि नहीं ? इसके कुछ लक्ष्ण बताते हैं-एक बार 'वाहिगुरु' कहने के पश्चात् फिर 'वाहिगुरु' कहने को मन करे, नाम में दिन प्रतिदिन विश्वास बढ़े, मन के किसी कोने में ठण्डक सी महसूस हो, विकार, बुराइयां कम होनी आरम्भ हो जाएं तो समझ लेना, हमारे कदम इस मार्ग पर आगे की ओर बढ़ रहे हैं। कभी-कभी

बैठ कर अपने मन के साथ विचार किया करो कि हम कितना आगे बढ़ गए हैं, हमारा मन कहां तक, प्रभु के चरणों में लीन होता है, हमारे भीतर उसके नाम की कितनी मस्ती आती है? हम व्यापार करते हैं, वर्ष पश्चात् पता लगाते हैं कि कितना फ़ायदा हुआ है, कितना नुक्सान हुआ है। क्या कहीं यह भी सोचा है कि जीवन का व्यापार कितना बड़ा व्यापार है? कहीं ऐसा न हो कि हमें नुक्सान हो जाए! इस तथ्य को समझने का यत्न करना चाहिए कि हम संसार में क्या करने आए हैं, अपनी मंज़िल का हर समय ध्यान रखना है और आगे बढ़ना है।

जिसने महापुरुषों के अनुसार मंज़िल को प्राप्त किया है, उनके द्वारा बताई युक्तियों के अनुसार चलना आरम्भ कर दिया, अपने दोषों, अपनी कमियों का ध्यान रखना आरम्भ कर दिया, समझो कि उसने अपना मार्ग ढूंढ कर उस पर चलना आरम्भ कर दिया। जब हम अपनी कमियों को जान लेते हैं, अपने अवगुणों को समझ लेते हैं तो फिर अपने अवगुणों को अपने जीवन में से निकालने का यत्न करते हैं। चाहे धीरे-धीरे ही सही, फिर अवश्य आगे बढ़ते जाएंगे। आगे बढ़ते-बढ़ते हो सकता है कि हम कई बार गिर भी जाएं। महापुरुषों के बचन हैं....गिरना बुरा नहीं, लेकिन गिर कर फिर न चलना बहुत बड़ी भूल है।

परमार्थ के मार्ग पर चलते हुए उतार-चढ़ाव आते ही रहते हैं जो आत्मिक ज़िदगी के लिए बहुत आवश्यक भी हैं। इससे घबराना नहीं चाहिए। नाम जपने वाले, परमेश्वर के मार्ग पर चलने वाले कई बार अपने पहले वाले स्वभाव के कारण भूल कर बैठते हैं। अपने भीतर झांकते रहा

करो और जो बुराइयाँ दिखाई दें उन्हें निकालते रहा करो! अगर हम अपने दोषों को देखने लग पड़ेंगे तो हमारे दोषों का सुधार हो जाएगा। जब तक दोषों की आत्मानुभूति नहीं होगी उतनी देर तक हमें अपने भीतर दोषों को दूर करने का ख्याल भी उत्पन्न नहीं हो सकता।

जिस मनुष्य को भूल करने के पश्चात अपने दोषों का ज्ञान नहीं होता, वह कभी भी आगे नहीं बढ़ सकता। चाहे हम सारा जन्म ही संगत करते रहे, महापुरुषों के बचन पढ़ते-सुनते रहें लेकिन अगर उन्हें हृदय में नहीं बसाते, उन पर अमल नहीं करते तो हमारा जन्म व्यर्थ चला जाएगा। हम अपनी मंज़िल को प्राप्त नहीं कर सकेंगे। हमें जो यह मनुष्य शरीर प्राप्त हुआ है, इसका पूरा लाभ उठाने के लिए मंज़िल की ओर बढ़ने का यत्न करना है।



जिस प्रकार साईकल में हवा भरो, अगर हवा ट्यूब में से बाहर निकल जाए तो हम समझ जाते हैं कि इसके भीतर पन्कचर (छेद) है। क्या कभी हमने बैठ कर अपने मन से यह सोचा है कि कई वर्ष हो गए सत्संग करते, कई वर्ष हो गए नाम की हवा भरते, क्या हमारे भीतर प्रभु का वास हुआ है कि नहीं, अनेक वर्ष हो गए बाणी पढ़ते, नाम जपते, क्या हमारे भीतर नाम स्थिर भी हुआ है कि नहीं, अनेक वर्ष हो गए 'गुरु-गुरु' करते लेकिन क्या गुरु हमारे भीतर बसा भी है कि नहीं? अगर उत्तर 'नहीं' है तो समझ लेना कि हमारे हृदय के भीतर कोई छेद अवश्य है। एक छोटा सा छेद भी रह जाए तो समस्त हवा बाहर निकल जाती है। न जाने हमारे भीतर दोषों के कितने छेद हैं! फिर इसके भीतर नाम कैसे ठहरे? जब

तक इन छेदों को बन्द नहीं करोगे, तब तक नाम नहीं स्थिर होगा। तब तक शान्ति, सहज, आनन्द की प्राप्ति नहीं होगी। घड़े के भीतर छेद हो तो जितना चाहे साफ पानी, दूध, चाहे अमृत उस में डालते जाओ, वह स्थिर नहीं रहेगा, कुछ समय के पश्चात् घड़ा खाली हो जाएगा। चाहिए तो यह कि पथ पर चलते-चलते मंज़िल के पास पहुँचते जाएं।

लेकिन कई बार ऐसा होता है कि जब हम अपने भीतर झांकें तो महसूस होता है कि अनेक वर्ष हो गए कर्म करते-करते, लेकिन हम वहीं के वहीं खड़े हैं। नाम जपना और अपने अवगुणों को दूर करना, दोनों बातें हैं तो बहुत कठिन लेकिन गुरु को हृदय में धारण करके लगे रहने से गुरु सहायता करता है। अगर गुरु की ओर चले हो, फिर पीछे नहीं रहना, अपनी मंज़िल का हर समय ध्यान रखना है और आगे बढ़ने का यत्न करना है।

मन बहुत चंचल है। संसार की मनमोहक वस्तुओं की ओर तृष्णा रखने से यह अपनी मंज़िल को भूल जाता है। उनके वश में होकर गिरता-ढहता रहता है। मन को समझाना है कि इस संसार के साथ क्या प्रेम करना है (?) यह तो नश्वर है। गुरु के साथ प्रीत करके लोक-परलोक सुखी सुहेला करें। अपने वश में नहीं, गुरु साहिब के चरणों में अरदास करें, गुरु साहिब आप ही कृपा करें, बख़्शिश करें, दया करें ताकि हम मंज़िल की प्राप्ति कर सकें, परम शुद्ध को प्राप्त कर सकें। गुरु के साथ-प्रेम करके, प्रार्थनाएं करके सतिगुरु की कृपा के पात्र बना जाए। नाम में लगे रहो, धीरे-धीरे सब कुछ हो

जाएगा। नाम प्रेम-भावना के साथ जपना है। थोड़ी देर कमाई करने के बाद घबरा नहीं जाना कि कुछ दामन में नहीं पड़ता! धैर्य-संतोष का मार्ग पकड़ना है। सिदक-भरोसा रखना है। भक्ति का कोई अन्त नहीं, यह तो समूचे जीवन का ही काम है। अग्रिम अवस्था तक पहुंचने के लिए घबराना नहीं चाहिए। अगर अग्रिम अवस्था की प्राप्ति नहीं हुई तो घबराना नहीं कि बहुत समय हो गया है, एक ही अवस्था में विचरन करते। अगली अवस्था नहीं मिली तो धैर्य-संतोष से बख़्शिश की प्रतीक्षा करनी है। गुरु साहिब के चरणों में सदैव अरदास करनी है कि सतिगुरु! कृपा करो, हमारे हृदय में वास करो, अपने नाम की दात (देन) बख़्शो, अपने चरणों से जोड़ो, अपनी प्रीत बख़्शो, प्रेम बख़्शो! अनेक जन्मों से आपसे बिछुड़े हैं, कृपा करो, इस जन्म में तो मिल पड़ो। सांसारिक शिक्षा के लिए डिग्रियां प्राप्त करने के लिए हम कितना परिश्रम करते हैं! कैसे अपना समस्त बल लगा देते हैं, कैसे दिन रात एक कर देते हैं! न सोने की इच्छा और न खाने का ख़्याल और फिर जो हमारी ज़िंदगी का वास्तविक लक्ष्य है:

"गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ", उसकी प्राप्ति के लिए भी तो यत्नशील होना चाहिए!

उसकी प्राप्ति के लिए यह आठवीं युक्ति है जिज्ञासु के लिए कि परमार्थ के किसी भी कार्य को बोझ समझ कर न करे, प्रसन्नता और चढ़ती कला से करे। आशा है कि यह युक्ति अपने परमार्थ के मार्ग की मंज़िल तक पहुंचने के लिए सहायक होगी।

नोटः यह आठ युक्तियां जो विवरण सहित छपवाकर आप तक पहुंचाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, दास की संगत को प्रार्थना है कि हर युक्ति का बार-बार अध्ययन करके अवश्य प्रयोग में लाकर नाम की कमाई करो अैर नाम की कमाई संभालो और आप मंज़िल तक पहुंचो, दास की भी अरदास करना, आपने अपनी भी अरदास करना, कि मंज़िल की प्राप्ति हो।

*दासन दासः भाई गुरइकबाल सिंह*

---



प्रकाशकः दास भाई गुरइकबाल सिंह

*माता कौलां जी भलाई केन्द्र (ट्रस्ट) की ओर से विधवा औरतों की सहायता के लिए और अन्य भलाई के धार्मिक कार्यों के लिए नीचे लिखे प्रेरणा यूनिट गुरु महाराज की कृपा के साथ चल रहे हैं।*

1. श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी सत्कार कमेटी (श्री अमृतसर, होशियारपुर, लुधियाना, दिल्ली, शाहबाद मारकण्डा, कुराली, मुच्छल गांव, पट्टी, तरनतारन साहिब आदि अन्य शहरों में)
2. माता कौलां जी भलाई केन्द्र (विधवा औरतों के लिए) तरनतारन रोड, श्री अमृतसर।
3. माता कौलां जी सिलाई-सिखलाई केन्द्र, तरनतारन रोड, श्री अमृतसर।
4. माता कौलां जी कंप्यूटर सिखलाई केन्द्र, तरनतारन रोड, श्री अमृतसर।
5. माता कौलां जी बन्दीछोड़ चैरीटेबल हस्पताल, तरनतारन रोड, श्री अमृतसर।
6. माता कौलां जी पब्लिक स्कूल, तरनतारन रोड, श्री अमृतसर।
7. माता कौलां जी यात्री निवास, नजदीक गुः बाबा अट्ल राए साहिब जी, श्री अमृतसर।
8. माता कौलां जी सिक्ख चेतना मल्टी मीडिया।
9. गुरधाम दर्शन इश्नान (निष्काम यात्रा बस)
10. दोमाही धार्मिक पत्रिका सिफति सालाह।
11. माता कौलां जी भलाई मिशन श्री अमृतसर, निष्काम आनन्द कारज।

12. बाबा दीप सिंह जी चैरीटेबल हस्पताल, हरनाम नगर, मॉडल टाऊन, लुधियाना।

13. बीबी भानी जी भलाई केन्द्र (विधवा औरतों के लिए) हरनाम नगर, मॉडल टाऊन, लुधियाना।

14. माता सदा कौर जी सिखलाई केन्द्र, सरां रोड, जडियाला गुरु।

15. माता कौलां जी भलाई केन्द्र (विधवा औरतों के लिए) सरां रोड, जंडियाला गुरु।

16. बाबा नन्द सिंह जी चैरीटेबल हस्पताल In Door, जंडियाला गुरु।

17. माता कौलां जी भलाई केन्द्र (विधवा औरतों के लिए) मेरठ।



18. माता कौलां जी भलाई केन्द्र (विधवा औरतों के लिए) अहमदाबाद।

19. माता कौलां जी भलाई केन्द्र (विधवा औरतों के लिए) नासिक।

20. माता कौलां जी विधवा बहन भलाई केन्द्र, सूरत।

21. श्री गुरु रामदास जी भलाई केन्द्र, पटियाला।

22. श्री गुरु हरि राए साहिब जी भलाई केन्द्र (विधवा औरतों के लिए) यमुना पार, दिल्ली।

23. माई भागो जी विधवा बहन भलाई केन्द्र, तिलक नगर, दिल्ली।

24. माता नानकी जी भलाई केन्द्र (विधवा औरतों के लिए) सैदा गेट, जालन्धर।

25. माता साहिब कौर जी भलाई केन्द्र (विधवा औरतों के लिए) चंडीगढ़।

26. बाबा जवाहर सिंह जी भलाई केन्द्र (विधवा औरतों के लिए) होशियारपुर।

27. भाई घनईया जी चैरीटेबल हस्पताल, देहरादून।

28. मदर कौलां जी वैल्फेयर सैंटर, अमरीका।

❖❖❖